 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

ज्येष्ठ-आषाढ़, संवत् नानकशाही ५४७
वर्ष ८ अंक १० जून 2015

संपादक : सिमरजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304



फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

भलके उठि पपोलीऐ विणु बुझे मुगध अजाणि ॥ सो प्रभु चिति न आइओ छुटैगी बेबाणि ॥
सतिगुर सेती चितु लाइ सदा सदा रंगु माणि ॥१॥ प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥
लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥१॥ रहाउ ॥
कुदम करे पसु पंखीआ दिसै नाही कालु ॥ ओतै साथि मनुखु है फाथा माइआ जालि ॥
मुकते सेई भालीअहि जि सचा नामु समालि ॥२॥ जो घरु छडि गवावणा सो लगा मन माहि ॥
जिथै जाइ तुधु वरतणा तिस की चिंता नाहि ॥ फाथे सेई निकले जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥
कोई रखि न सकई दूजा को न दिखाइ ॥ चारे कुंडा भालि कै आइ पइआ सरणाइ ॥
नानक सचै पातिसाहि डुबदा लइआ कढाइ ॥४॥ *(पन्ना ४३)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी सिरीराग में उच्चारण किए गए इस शब्द में मानव शरीर की नाशमानता एवं प्रभु-नाम की महिमा का गायन करते हुए फरमान कर रहे हैं कि मनुष्य हर रोज़ इस शरीर का पालन-पोषण करता है, जबकि ज़िंदगी के वास्तविक उद्देश्य को समझे बिना यह नासमझ एवं मूर्ख ही रहता है। इसे उस परमात्मा की कभी याद नहीं आती जिसने इसे इस धरा पर भेजा है और अंत में इस शरीर को बेबाण (बीयाबान, शमशान) में फेंक दिया जाता है। हे मनुष्य ! तू सतिगुरु के साथ चित्त को जोड़ और प्रभु-नाम का सिमरन करता हुआ सदा के लिए आत्मिक आनंद की प्राप्ति करता रह। हे मनुष्य ! तू इस संसार में प्रभु-नाम-सिमरन की कमाई करने आया है। तू कौन-से ख्वारी (जिल्लत) वाले काम में व्यस्त है ? तेरी रात्रि रूपी ज़िंदगी खत्म होती जा रही है।

गुरु जी का 'रहाउ' के बाद वाली पंक्तियों में फरमान है कि पशु कलोल करते हैं, पक्षी कलोल करते हैं, उनको काल नज़र नहीं आता। मनुष्य पशु-पक्षियों के साथ में शामिल हो गया है क्योंकि इसे भी काल याद नहीं आता, माया के जाल में ही फंसा हुआ है। जिस मनुष्य ने प्रभु-नाम की संभाल कर रखी है अर्थात् सदा सिमरन करता है वो ही माया से मुक्त नज़र आता है। हे मनुष्य ! जिस घर (लोक) को छोड़कर चले जाना है वो तुझे प्यारा लग रहा है और जहां (परलोक) जाकर तुझे सदा के लिए निवास (मुक्ति) मिल सकता है उसे पाने की तेरे मन में ज़रा भी चिंता नहीं है। इस सांसारिक माया में वही जन मुक्त होकर निकल पाते हैं जो सच्चे गुरु की शरण में आ जाते हैं। यह माया का मोह इतना प्रबल है कि इसमें से सच्चे गुरु के बिना कोई अन्य बचाने वाला दिखाई नहीं देता। पंचम पातशाह अंतिम पंक्तियों में कह रहे हैं कि मैं तो सारी सृष्टि में ढूंढकर सच्चे गुरु की शरण में आ गया हूं। ऐसे सच्चे गुरु ने मुझे संसार की माया के मोह रूपी समुद्र में डूबते हुए को बाहर निकाल लिया है अर्थात् मुझे मुक्तावस्था का मार्ग दिखा दिया है। 

संदेश

सिक्ख इतिहास की गाथा विलक्षण एवं गौरवमयी है। गुरु साहिबान ने सिक्ख के रूप में एक फ़ख्रयोग्य मनुष्य का रूप निर्मित किया है। गुरु साहिबान ने जन मानस की सुविधा हेतु नईं बावलियां (जलाशय) खुदवाईं, सरोवर पक्के करवाए एवं नई योजना के अनुसार नए गाँव, क़सबे, नगर व शहर आबाद किए, इन नगरों में से एक नगर है- श्री अनंदपुर साहिब, जिसको खालसे की जन्म भूमि होने का गौरव प्राप्त है। श्री अनंदपुर साहिब का पहला नाम 'चक्क नानकी' था जो श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने अपनी सम्मानयोग्य माता नानकी जी के नाम पर रखा था। बिलासपुर के राजा के देहाँत के समय श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी दुख की घड़ी में राजा परिवार को सांत्वना देने के लिए पहुँचे थे। रानी चंपा ने गुरु जी का बहुत सत्कार किया तथा उनको अपने राज्य में ही विराजमान रहने के लिए निवेदन किया। रानी ने गुरु जी को माखोवाल की ज़मीन पेश की तो गुरु जी ने उस ज़मीन का मूल्य (दाम) देकर वहीं 'चक्क नानकी' नामक नगर आबाद किया था।

यह हम सब के लिए सौभाग्यपूर्ण बात है कि हमारे जीवन-काल में इस नगर की स्थापना के ३५० वर्ष सम्पूर्ण हो रहें हैं। सिक्ख पंथ इस ऐतिहासिक दिवस को पूरे पंथक जाहो-जलाल से मना रहा है। इस सम्बंध में पंथ की सिरमौर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी ने मासिक पत्र 'गुरमति ज्ञान' का श्री अनंदपुर साहिब विशेषांक प्रकाशित करने का प्रयास किया है। इस विशेषांक में लेखकों, विद्वानों ने अपने भावपूर्त निबंध एवं कविताएं लिखकर अपना यथायोग्य योगदान डाला है। मैं समूह लेखकों, कवियों एवं विद्वनों का तह दिल से धन्यवाद करता हूँ। इस कार्य के लिए 'गुरमति ज्ञान' का समूचा स्टॉफ प्रशंसा का पात्र है, जिन्होंने दिन-रात कड़ा परिश्रम कर इस अंक को पूरी निष्ठा एवं लग्न से तैयार किया है। सिक्ख पंथ की महान संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का मुख्य सेवादार होने के नाते मैं देशों-विदेशों में विचरण कर रहे समूह सिक्ख पंथ का हार्दिक अभिनंदन करते हुए हार्दिक शुभकामनाएं प्रकट करने की प्रसन्नता ले रहा हूँ। आइए! हम सभी गुरु साहिबान की शिक्षाओं पर चलते हुए पूरे विश्व में सिक्ख पंथ की आन-शान को और ऊँचा कर बुलंदियों तक पहुँचाने का प्रण करें।

गुरु पंथ का दास,

अवतार सिंघ
अध्यक्ष,
शिरोमणि गु. प्र. कमेटी,
श्री अमृतसर।



विरासती निशानियां

सिक्खों ने हर समय जहां गुरु की बाणी को हृदय में बसाकर रखा है वहीं साथ ही सिक्ख इतिहास को भी पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाया है। सिक्ख इतिहास में बहुत-से सिक्खों को गुरु साहिबान के दर्शन करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है। बहुत-से सिक्ख मानवता की भलाई का कार्य करते हुए गुरु साहिब से विशेष खुशियां प्राप्त करते रहे हैं। इन सिक्खों को गुरु साहिब द्वारा समय-समय पर विशेष निशानियां देकर सम्मानित किया जाता रहा है। इन पावन निशानियों को इन सिक्ख परिवारों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी बहुत श्रद्धा-भावना से संभालकर रखा हुआ है। सिक्ख संगत इन निशानियों के दर्शन कर निहाल होती आई है। इनमें से बहुत-सी निशानियां तख़्त श्री अकाल तख़्त साहिब, तख़्त श्री पटना साहिब, तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, तख़्त श्री दमदमा साहिब, तख़्त श्री हजूर साहिब में सिक्ख संगत के दर्शनों हेतु संभाली हुई हैं। इसके अतिरिक्त केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय तथा सिक्ख रियासतों के राजाओं के पास भी पावन निशानियां हैं। भाई बहलो, भाई सच्चन सच्च, भाई रूपा, पीर बुद्धू शाह, भाई बख़त मल्ल आदि अनेकों ही सिक्खों के परिवारों के पास गुरु साहिबान की निशानियां संभाली हुई हैं। जिनके दर्शन संगत उनके घरों में जाकर करती है।

गत दिनों शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा पंजाब सरकार की मदद से गुरु साहिबान की कुछ निशानियों के दर्शन संगत को करवाने का प्रयास किया गया। ये पावन निशानियां नाभे के राजा के पास संभाली हुई थीं। सिक्खों की १२ मिसलों में से एक मिसल फूलकियों की थी। इसी मिसल ने नाभे की रियासत स्थापित की थी। फूलकियां मिसल के सरदार स. गुरदित्त सिंघ के पोते राजा हमीर सिंघ ने नाभा शहर बसाया था। जब मिसलों ने एकत्र होकर जैन खां को मारकर सरहिंद फ़तहि की थी तब राजा हमीर सिंघ के हिस्से अमलोह का क्षेत्र आया था। इस परिवार के ख़ानदान पर दृष्टि डालें तो पता चलता है कि स. सुजान सिंघ मानशाहिए की सुपुत्री रानी राज कौर की कोख से राजा हमीर सिंघ के घर राजा जसवंत सिंघ का जन्म गांव बढबर में हुआ था। पिता की मृत्यु के बाद आठ वर्ष की आयु में ही यह नाभे की राजगद्दी का मालिक बन गया। इसी परिवार में आगे चलकर राजा भगवान सिंघ राजगद्दी का मालिक बना। राजा भगवान सिंघ की औलाद न होने के कारण उसने स. सुखा सिंघ बडरुखां वाले के सुपुत्र स. हीरा सिंघ को अपना मुतबन्ना (दत्तक) बना लिया। भगवान सिंघ की मृत्यु के बाद राजा भीम सिंघ नाभा रियासत का मालिक बना। महाराजा हीरा सिंघ बहुत ही नेकदिल तथा दूरंदेशी था। इन्होंने सिक्ख इतिहास को लिखवाने में बहुत मेहनत की। इन्होंने नाभे के किले के अंदर गुरुद्वारा सरोपा साहिब की इमारत में गुरु साहिब की पावन निशानियां सुशोभित करके सिक्ख संगत को दर्शन करवाने का उद्दम भी किया। बाद में समय के बदलाव से जब यह परिवार दिल्ली में प्रवास कर

गया तो ये गुरु साहिब की पावन निशानियों को भी साथ ही ले गया। अदालत के आदेश पर अब ये निशानियां स. हनूवंत सिंघ ने पंजाब सरकार को सौंप दी हैं, जो तख़्त श्री केसगढ़ साहिब में संगत के दर्शनों हेतु सुशोभित की जाएंगी। तख़्त श्री केसगढ़ साहिब पर सुशोभित करने से पूर्व इन पावन निशानियों को विशेष बस द्वारा संगत को दर्शन करवाने का उद्यम भी किया गया है।

१) इन निशानियों में श्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब का चोला है। यह चोला श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई तिलोक सिंघ तथा भाई राम सिंघ को बख़्शिश किया था।

२) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की दसतार जो गुरु साहिब ने भंगाणी के युद्ध के बाद पीर बुद्धू शाह जी को बख़्शिश की थी।

३) श्री गुरु गोबिंद सिंघ का कंघा केशों सहित जो गुरु जी ने पीर बुद्धू शाह जी को बख़्शिश किया था।

४) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की तीन इंच कृपाण यह भी गुरु जी ने पीर बुद्धू शाह को बख़्शिश की थी।

५) श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का तेगा।

६) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की श्री साहिब यह गुरु जी ने भाई तिलोक सिंघ को बख़्शिश की थी।

७) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की श्री साहिब यह श्री साहिब राजा हीरा सिंघ गांव बडरुखां से लेकर आए थे।

८) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपाण यह कृपाण गुरु जी ने राय कले को बख़्शिश की थी।

९) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पांच तीर।

१०) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का लोहे का तीर।

११) श्री गुरु तेग बहादर साहिब का तेगा।

१२) श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का नेजा, इसकी लंबाई ३६ इंच है।

१३) दसम पातशाह जी का चाबुक घोड़ों का।

१४) एक हस्त लिखित ग्रंथ।

इन सभी निशानियों के संगत को दर्शन करवाने के लिए विशेष बस द्वारा श्री अनंदपुर साहिब पहुंचाया जाएगा। श्री अनंदपुर साहिब में यह निशानियां सर्वदा के लिए तख़्त श्री केसगढ़ साहिब में संगत के दर्शनों हेतु सुशोभित कर दी जाएंगी। 

खालसाई जाहो-जलाल का सृजनात्मिक स्थान : श्री अनंदपुर साहिब

*-प्रो किरपाल सिंघ बडूंगर**

जहां सिक्खी का सोमा (स्रोत) 'श्री हरिमंदर साहिब' तथा सिक्खी का धुरा 'गोइंदवाल साहिब' को माना जाता है, वहीं खालसे की सृजना का श्रेय श्री अनंदपुर साहिब की पावन धरती को जाता है। श्री अनंदपुर साहिब की धरती गुरु साहिब द्वारा रूहानियत एवं इंसानियत (भक्ति व शक्ति) के खज़ानों को बांटते हुए देखने की चश्मदीद साक्षी है। बिलासपुर के राजा से सतलुज दरिया के किनारे पर गांव माखोवाल की धरती खरीदकर (१७२२ बिक्रमी) १९ जून, १६६५ ई को "चक्क नानकी" अपनी माता जी के नाम पर गांव का श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने शिलान्यास किया तथा दोबारा चौबीस वर्ष के बाद समय की नज़ाकत को समझते हुए और ज़रूरत के मुताबिक विस्तारित करते हुए सन् १६८९ ई में "आनंद साहिब दीआं चहु पउड़ीआं पढ़ भाई चउपति गए" (भाई चौपा सिंघ) द्वारा अरदास करके श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब की नींव रखी। श्री गुरु नानक देव जी ने *"जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥"* जिस सिक्खी का बीज बोआ था, उस सिक्खी के निकास से लेकर विकास तथा विगास को आखों से देखने के प्रत्यक्ष सबूत हैं। सिक्ख धर्म तथा सिक्ख फलसफ़ा जिन स्तंभों-किरत करना, नाम जपना, वंड छकणा, सेवा, सिमरन, परोपकार, भक्ति व शक्ति, कुर्बानी तथा शहादत पर खड़ा है। इस धरती ने उस अध्यात्म के फलसफे को जीवन व्यवहार का अंग बनते हुए देखा है।

गुरमति सिद्धांत की विचारधारा कथनी व करनी, आत्म व परमात्म का अद्भुत सुमेल है। यह एक ऐसा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के पूर्ण इंकलाब का पूर्ण जीवन दर्शन अर्थात् संपूर्ण इंकलाब का पूर्ण फलसफ़ा है जो मनुष्य को जीवन-जाच का हिस्सा बनकर सदीवी सोच की प्राप्ति के मार्ग पर तोरता है। इस धरती ने *"बांहि जिना की पकड़ीए सिर दीजै बांहि न छोड़ीऐ"* तथा *'मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइ मरनि परवाणो ॥'* को जी कर दिखाया। सन् १६७५ ई में कश्मीर से पंडित किरपा राम सोल्ह ब्राह्मणों के साथ गुरु साहिब के दरबार में हिंदू धर्म की रक्षा की अरज लेकर इसी श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर पहुंचे थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के दरबार में "तिलक जनेऊ की राखी" के लिए स्वकुर्बान करने का निर्णय तो स्वयं के साथ ले ही लिया गया था परंतु खेलने-कूदने की उम्र में पिता को उस रास्ते पर तोर रहा बालक गोबिंद राए इस धरती ने अपनी आंखों से देखा है, *"भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥"* के रचयिता नवम् पातशाह अपने कहे शब्दों को सच में साकार कर रहे थे, दशमेश पिता इस महान शहादत की साक्षी इस प्रकार करते हैं।

"तिलक जंञू राखा प्रभ ता का ॥
कीनो बडो कलू महि साका ॥" (श्री दसम ग्रंथ)

इस धरती की तवारीख ग्वाह है कि गुरबाणी व कुर्बानी, मीरी व पीरी, संत व सिपाही, कलम व हथियार, जुझारू योद्धे तथा महान कवि एक समय ही गुरु-दरबार का श्रृंगार बने रहे। एक तरफ साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ दुश्मनों में भगदड़ मचाकर फ़तहि का नगाड़ा बजा रहे होते और दूसरी तरफ सरसा नदी के किनारे बैठ शाम होते ही सिंघों के साथ रहिरास में लीन होते हुए श्री अनंदपुर साहिब की धरती ने मनुष्य को परम मनुष्य में

**पूर्व अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी; फोन : ९९१५८०५१००*

रूपांतरित (Transform) होते आंखों से देखा। जब ३० मार्च, १६९९ ई में वैसाखी के दिवस पर विशाल इकट्ठ को संबोधित होते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पांच शीश मांगे तो शीश भेंट करने वाले *"सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥"* के अनुसार पांच प्यारों के साथ ही खालसा पंथ की साजना की क्रांतिकारी नींव रखी गई। धर्म, जात, पात, प्रांत प्रत्येक विभिन्नता को रद्द करते हुए सिर्फ और सिर्फ *"जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे ॥"* के सच को समर्पित ऐसी निरोल खालस *"वाहिगुरु जी का खालसा ॥ वाहिगुरु जी की फ़तहि ॥"* अजेय कौम की बुनियाद रखी जो समय की ज़ाबर व ज़ालिम हकूमत के विरोध में सदैव लोग-मुहाज़ का अंग बन गई। इस तरह श्री अनंदपुर साहिब की धरती में दशमेश पिता जी को सरबलोह का खंडा घुमाते हुए तथा पावन मुख से अमृतमयी बाणी का उच्चारण करते हुए व माता जीतो जी को उसमें बताशे डालते हुए अलौकिक एवं विलक्षण कौतुक देखा। खालसा पंथ की सृजना व साजना के इस अद्वितीय कार्य में श्री अनंदपुर साहिब की धरती ने साक्षात रूप में शस्त्र एवं शास्त्र के अद्भुत सुमेल को देखा। चिड़ियों से बाज़ का मुकाबला करवाने वाले समर्थावान तथा सरवंशदानी गुरु साहिब ने इन बोलों को सच होते देखा :

सवा लाख से एक लड़ाऊं।
तबै गोबिंद सिंघ नाम कहाऊं।

इस धरती ने हर रंग देखा। गुरु के महलों में खुशी के कार्य होते भी देखे तथा भाई जैता जी द्वारा चांदनी चौक से श्री गुरु तेग बहादर जी का पावन शीश समय की हकूमत की नज़र से बचाकर माता गुजरी जी की हाज़री में (गुरु) गोबिंद राए की नज़र करते हुए भी देखा तथा *"रंघरेटा गुरु का बेटा"* का उत्तम सम्मान लेते भी देखा। सहज व धैर्य से गर्व, स्वाभिमान को सदीवी संघर्ष के रास्ते पर तोरने के लिए शस्त्र, शास्त्र तथा इनकी शिक्षा ही मात्र एक रास्ता है-- उस उम्र में भी जज़्बात को नियंत्रण में रखने का अनुशासित रास्ता गुरु साहिब सिखा रहे थे।

एक करामात चांदनी चौक में हिंदोस्तानियों की गर्दनों पर नित्य प्रति चलती, जब्र-ज़ुल्म की तलवार किसी धर्म की रक्षा के लिए अपनी गर्दन पर झेलकर सदैव के लिए हिंदोस्तानियों की गर्दन बचा ली। यह घटना ज़ुल्म व ज़ालिम के आगे आप डटे हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब दिखा रहे थे तथा दूसरी घटना श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपाण तथा तर्क ने आत्मिक रूप में भयभीत लोगों में अमृत की दात बख़्शकर एक नयी तथा अलौकिक रूह फूंककर दिखा दी। ज़ुल्म के साथ टक्कर लेने के लिए ताकतवर फौज की ज़रूरत को भांपते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अच्छे घोड़े, अच्छे शस्त्र तथा अच्छी पुस्तकें आदि की भेंट लेकर आने के लिए हुक्म किया। समय की हकूमत को वंगारते हुए रणजीत नगाड़ा झूलते निशान साहिब श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर किला लोहगढ़ साहिब, होलगढ़ साहिब, अनंदगढ़ साहिब, फ़तहिगढ़ साहिब आदि किलों की स्थापना वास्तव में ये सब कुछ इस संघर्ष के रास्ते पर चलती स्वयंसंचालित कौम की एक जीती-जागती मिसाल है।

गाय की शपथ खाकर वादों से मुकरते पहाड़ी राजाओं तथा कुरान की कस्मों से मुकरते मुगलों के इतिहास को देखा। यहां ही भाई मनी सिंघ जी कथाकार इस धरती पर गुरबाणी की व्याख्या द्वारा लोगों को चिंतन से जोड़ रहे थे तथा उस समय दूसरी तरफ शस्त्र विद्या के ज्ञाता भाई जीवन सिंघ, भाई उदै सिंघ तथा भाई बचित्तर सिंघ की अगुआई में जुझारू विद्या दी जा रही थी। श्री अनंदपुर साहिब अब पूर्ण रूप में शस्त्र व शास्त्र विद्या का अलौकिक केंद्र बनते हुए विश्व ने देखा। लोगों को होली मनाते, खरमस्तियों के स्तर से गिरते देखा तो साहिबे-कमाल ने अपने सिक्खों को १७०० ई में 'होला-महल्ला' बख़्श दिया। हर्षोल्लास के इस मौसमी त्योहार की नुहार बदल कर रख दी। *"प्रगटिओ खालसा प्रमातम की मौज"* में से उपजे खालसा को

दो दलों में बांटकर नकली (मसनूई) युद्ध तीरंदाज़ी, नेज़ाबाज़ी, गतकाबाज़ी, घुड़सवारी तथा प्रत्येक वो खेल खेला जाता, अभ्यास होता जिस की आने वाले समय में ज़रूरत थी और शाम ढलते ही जीत के जश्न तथा गुलाबों की सुगंध *'बोले सो निहाल, सति श्री अकाल'* के जैकारों की गूंज से होला-महल्ला का समाप्न होता। यह परंपरा आज भी इसी रूप में बादसतूर जारी है। वास्तव में दूर दृष्टिवान श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अपने खालसा को आत्मिक, शारीरिक व मानसिक तीनों पक्षों से पावन तथा मज़बूत देखना चाहते थे तथा श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर मैदान में उतरा हुआ खालसा इसी बात की ग्वाही भरता है।

श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर पांच प्यारों का चुनाव तथा खालसा पंथ की सृजना करते हुए गुरु साहिब ने *'आपे गुर चेला है आपे'* की विलक्षण खालसाई सोच को अमली रूप देते हुए कहा है :

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसे में हउं करउं निवास।

खालसे के स्वभाव में गरीब की रक्षा, इन्साफ के लिए लड़ाई, जुल्म तथा ज़ालिम की खिलाफ़त व सच पर पहरा तथा परोपकार *"संता मानउ दूता डानउ इह कुटवारी मेरी ॥"* जैसे गुण शामिल करते हुए गुरु साहिब ने अपने प्यारे खालसा को विलक्षण पहचान बख्शिश करते हुए कहा :

जब लग खालसा रहे निआरा,
तब लग तेज दीओ मै सारा।
जब इह गहै बिपरन की रीत,
मैं ना करों इन की परतीत।

यह तो *"इतु मारगि पैरु धरीजै ॥ सिरु दीजै काणि न कीजै ॥"* तथा *"आगाहा कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा ॥ नानक सिझि इवेहा वार बहुड़ि न होवी जनमड़ा ॥"* का खंनिओं तिक्खी तथा वालों निक्की वाला बिखम रास्ता था जो गुरु के सिक्खों ने खुशी-खुशी कबूल किया तथा *"गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥* के महान सिद्धांत को अपने जीवन काल में अमली रूप में जीते हुए अद्वितीय इतिहास रचा।

सच तो यह है कि श्री अनंदपुर साहिब खालसे की जन्मभूमि भी है, कथा व कीर्तन के अटूट प्रवाह का अद्वितीय केंद्र तथा जुझारू सिक्ख फौज की बड़ी छावनी भी परंतु इसी धरती पर फौजी मश्कों के साथ-साथ बावन कवि, फनकार तथा आलिम फाज़िल हस्तियां भी कार्यशील थीं। यहां भाई नंद लाल जी का 'गंजनामा' फिज़ा में काविकता का रस घोल रहा था तथा दूसरी तरफ भाई बचित्तर सिंघ की नागनी तथा अज़ब हौसला राजा अजमेर चंद के शराबी हाथी का मुंह तोड़कर दुश्मन के लोहगढ़ को फ़तहि करने के मनसूबे को ध्वस्त कर रहा था। इन्हीं ने ही जंगों में भाई घन्हैया जी गुरबाणी के महावाक्य *"ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई"* के सच को जीते हुए, बिना किसी भेदभाव के जख्मियों को पानी पिलाते, मरहम-पट्टी करते हुए गुरु के सच्चे सिक्ख का खिताब हासिल करता है।

श्री अनंदपुर साहिब की इस धरती ने खालसे का चढ़दी कला वाला जाहो-जलाल देखा है। छोटे-छोटे साहिबज़ादों का शस्त्र तथा शास्त्र विद्या से लैस होकर जवानी की ओर कदम रखते ही देखा तथा नैतिकता से कोरे लोगों की ध्रोह कमाती भूमिका भी हमारे इतिहास के काले पन्नों में शामिल है। श्री अनंदपुर साहिब की धरती से चला गुरु परिवार सरसा नदी के किनारे खंड-खंड होता समय के पन्नों पर सदैवकालीन उकरा गया। सब कुछ लुटा कर भी सब कुछ पा जाने की रीति गुरमति का सच है जो सतिगुरु जी ने संसार के सामने प्रत्यक्ष रूप में प्रकट कर दिखाया।

आज भी यह धरती 'सदीवी सच की जीत' तथा 'चढ़दी कला' की निशानी बनकर समय की हकूमत के लिए निशानदेही करती है। आएं! अनंदपुरी सोच के धारक बने तथा गुरु की खुशियां प्राप्त करें।



श्री अनंदपुर साहिब

*-सिमरजीत सिंघ**

श्री अनंदपुर साहिब पंजाब के ज़िला रूपनगर में धार्मिक और ऐतिहासिक महत्त्ता वाला नगर है। यह नगर दरिया सतलुज के किनारे पर रोपड़ से लगभग ३७ किलोमीटर की दूरी पर उत्तर की तरफ है। यह नगर शिवालिक की पहाड़ियों के पावों तले बसा हुआ है। श्री अनंदपुर साहिब के इर्द-गिर्द का इलाका नदियों और नालों के तेज़ पानी के कारण कटा हुआ और ऊबड़-खाबड़-सा है। इस इलाके में वृक्षों की अधिकता होने के कारण वन स्थली जैसा दिखाई देता है। शिवालिक की पहाड़ियों में बहती २२ जल-धारायों के कारण इस इलाके को बाईधार कहा जाता है। इन २२ धाराओं में २२ रियासतों-- चंबा, नूरपुर, गुलेर, दतारपुर, सीबा, जसवाल, कांगड़ा, कोट लहर, मंडी, सुकेत, कुल्लू (जलंधर क्षेत्र में) तथा चंबा बैसाली, भड्डू, मानकोट, थेंद्रालटा, जसरोटा, साम्बा, जम्मू, चनौली, कसवार, भद्रवाह (डूंगर क्षेत्र) का राज्य था। श्री अनंदपुर साहिब शिवालिक की पहाड़ियों की गोद में बसा होने के कारण रमणीक चित्रण पेश करता है।

हिमालय एवं शिवालिक की पहाड़ियों के वन संतों-साधुओं का केंद्र रहे हैं, इसलिए इस इलाके को देव-भूमि भी कहा जाता है। चंद्रवंशी राजपूत राजा हरिहर चंद इन पहाड़ों में यात्रा करने के लिए आया तो उसे यह इलाका बहुत पसंद आया। राजा हरिहर मध्य प्रदेश के बुंदेलखंड में चंदेरी रियासत का राजा था। आजकल यह स्थान ज़िला गूना में है। राजा हरिहर चंदेरी का राज्य भाग अपने छोटे पुत्र गोबिंद चंद को देकर अपने पुत्रों, रानियों तथा चुनिंदा योद्धाओं को साथ लेकर भजन-मंडली बनाकर देवी ज्वालामुखी के दर्शनों के लिए चल पड़ा। यह लश्कर सतलुज नदी का तट पार कर ज़िला रूपनगर के गांव जिंदवड़ी पहुंच गया। यहां पर पड़ाव के दौरान इन्होंने एक अस्थाई किला तैयार करवा लिया और कुछ समय यही रुके। राजा हरिहर की सबसे बड़ी रानी नागरा देवी अपने आपको देवी कहलाने लग पड़ी, इसी कारण इस किले को भी किला नागरा देवी कहा जाने लग पड़ा। इस किले के मुख्य द्वार के सामने नागरा देवी का मंदिर बना हुआ है। उस समय कांगड़ा राज्य की राजधानी नादौण थी। कांगड़ा के राजा सुशरम चंद कटोचिये ने अपनी सुपुत्री के विवाह हेतु स्वैंबर रचा हुआ था। राजा हरिहर ने अपने चारों पुत्रों के साथ नादौण से स्वैंबर में भाग लिया। राजा हरिहर के लश्कर की आभोहवा देखकर कांगड़े वालों को संदेह हो गया। उन्होंने एक चाल चली जिसके तहत शहज़ादी के विवाह के लिए नेजेबाज़ी के मुकाबले को अजय करने की शर्त रख दी। जो नवयुवक खास-खास खूंटों को खोद देता उसके साथ शहज़ादी का विवाह किया जाना था। कांगड़े वालों ने खूंटों (कीलों) के नीचे एक गहरी जड़ों वाले वृक्ष के ऊपरी भाग को भी खूंटा बना दिया। मुकाबला शुरू हो गया। जब राजा हरिहर के बड़े पुत्र साहिब चंद ने घोड़े पर चढ़कर खूंटे को नेजा मारा तो

**संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।*

उसका संतुलन बिगड़ गया तथा वह घोड़े से गिर कर मर गया। दोनों दलों में इस बात को लेकर युद्ध छिड़ गया, जिसमें कांगड़े का टिक्का और राजा हरिहर दोनों मारे गए। तीनों चंदेरी राजाओं ने कांगड़े पर कब्ज़ा कर लिया। राजा सुशरम चंद अपने परिवार सहित वहां से भागकर बिभोर की रियासत पर काबिज़ हो गया। कहा जाता है कि युद्ध अजय करने के बाद तीनों चंदेरी शहज़ादों में से एक को कमाऊ राज्य के राजे ने मुतबन्ना (दत्तक) बना लिया। दूसरे शहज़ादे गंभीर चंद ने चंबा रियासत पर कब्ज़ा कर लिया। सबसे बड़ा भाई बीर चंद जिंदवड़ी से कांगड़ा तक के क्षेत्र का राजा बन गया। बीर चंद ने राजा बनकर नैणा देवी के मंदिर का निर्माण करवाया और अपनी धांक जमाते हुए १५ पहाड़ी रियासतों को अपने अधीन कर लिया। मात्र सिरमोर रियासत का राजा ही उसको टक्कर दे सका था। उसके साथ राजा बीर चंद ने संधि कर ली थी। इस तरह राजा बीर चंद ने अपने अधीन की १५ रियासतों को मिलाकर अपने राज्य का नाम कहिलूर रख लिया तथा कहिलूर का किला बनवा अपना निवास भी वहीं कर लिया। इस राजे ने ३३ वर्ष राज्य किया। इसी घिराने में राजा कल्याण चंद ने १६०१ ई से १६३८ ई तक राज्य किया। इसने अपनी पड़ोसी रियासत हंडूर पर हमला कर वहां के राजा नरैण चंद को कत्ल कर राजा हिंमत चंद को गद्दी पर बिठा दिया। रियासत हंडूर ही बाद में नालागढ़ के नाम से प्रसिद्ध हुई। जब बाबर बादशाह ने पहाड़ी रियासतों को कब्ज़े में लेने के बारे में सोचा तो चंदरवंशी पहाड़ी राजाओं ने बिना युद्ध किए ही अधीनगी कबूल कर ली। १६३६ बिक्रमी को पंजाब के गवर्नर कामरान ने बाबर को पंजाब के जागीरदारों के साथ वार्तालाप करने के लिए लाहौर बुलाया। सभी चंदरवंशी राजाओं ने बाबर के लाहौर पहुंचने से पहले ही सरहिंद पहुंचकर तीन मन सोना नज़राने के रूप में पेश कर मुगल साम्राज्य की अधीनगी कबूल कर ली। इस तरह पहाड़ी रियासतों के राजाओं ने निश्चित रूप में मुगल साम्राज्य को खिराज देना मान लिया। कहिलूर के राजा ज्ञान चंद ने सरहिंद के नवाब की बातों में आकर मुसलमान धर्म कबूल कर लिया तथा उसकी लड़की के साथ निकाह करवाकर कहिलूर ले आया। राजा की इन बातों की वजह से ही उसकी मां अपने दूसरे पुत्र कल्याण चंद के साथ कहिलूर रियासत को छोड़कर सतलुज नदी के पार सुनहाली में रहने लग पड़ी। ये दोनों मां-पुत्र ज्ञान चंद की मृत्यु के बाद ही कहिलूर वापिस आए। कहिलूर रियासत की राजधानी १६६९ बिक्रमी तक कहिलूर के किले में रही।

हिंदोस्तान की रियासत में अचानक हलचल हो गई अकबर बादशाह खुसरो को तख़्त पर बैठाना चाहता था परंतु उसे विवश होकर जहांगीर को बिठाना पड़ा। इससे नाराज़ होकर शहज़ादा खुसरो ने बगावत कर दी। राजपूत राजे भी शहज़ादा खुसरो को पसंद करते थे क्योंकि शहज़ादा खुसरो राजपूत मां जोधा बाई का पुत्र था। खुसरो के तख़्त पर बैठने से पहाड़ी राजाओं को विशेष ढील मिलने की आशा थी। संवत् १६६३ में खुसरो बगावत कर पंजाब की तरफ आ गया। शहज़ादा खुसरो ने रास्ते में श्री गुरु अरजन देव जी के लंगर में प्रशादा छका। जहांगीर की फौज ने उसको भरोवाल के स्थान पर घेरा डाल लिया। खुसरो की मृत्यु के बाद बहुत-से राजपूत राजाओं ने भी विद्रोह करने की कोशिश की क्योंकि समाचार आ रहे थे कि खुसरो की मां को जबरन अफीम का प्याला पिलाकर मार दिया गया है। जहांगीर ने

मुरतब खां को भेजकर राजपूत राजाओं को गिरफ्तार करवा दिया। इनमें कहिलूर, हंडूर, मारवाड़ और राजपुताना के राजे भी शामिल थे। इन सभी को ग्वालियर के किले में बंद कर दिया गया। श्री गुरु अरजन देव जी के लंगर से प्रशादा छकने के कारण इसको हमदर्दी करार देकर गुरु जी को शहीद कर दिया गया। बाद में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को भी बंदी बनाकर ग्वालियर के किले में बंद कर दिया गया। गुरु जी की शख़्सियत से कैदी राजपूत राजे बहुत प्रभावित हुए। जब गुरु जी को रिहा करने का फैसला लिया गया तो राजपूत राजाओं ने गुरु जी के समक्ष अपनी रिहायी के लिए विनती की। गुरु जी ने ५२ कलियों वाला चोला सिलवाकर बंदी राजाओं को उसका पल्लू पकड़ाकर जेल से रिहा करवा लिया। सभी राजपूत और पहाड़ी राजे गुरु साहिब के परम श्रद्धालु बन गए।

बादशाह जहांगीर की १६८४ बिक्रमी में मृत्यु हो गयी। उसके बाद शाहजहां बादशाह बन गया। पंजाब के गवर्नर आसफ ख़ान ने पहाड़ी राजाओं को लाहौर में नये बादशाह को सलामी देने के लिए बुलवाया। रियासत-- मंडी, सकेत, कहिलूर, हंडूर तथा नूरपुर के राजाओं ने लाहौर जाकर नये बादशाह को नज़राने भेंट किए। यहां से वापिस जाते समय यह श्री अमृतसर, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के दर्शन करने के लिए आए। गुरु जी ने राजाओं को अपनी स्वयं की कमज़ोरियों से ऊपर उठने के लिए प्रेरित किया। गुरु जी ने राजाओं को सख़्ती का माहौल होने की संभावना से अवगत करवाया। राजाओं ने भी गुरु जी को लाहौर से दूर प्रस्थान करने का निवेदन किया। गुरु जी ने नये स्थान को ढूंढने के लिए बाबा गुरदित्ता जी को पहाड़ी राजाओं के साथ भेजा। बाबा गुरदित्ता जी ने कहिलूर एवं हंडूर राज्य की सीमा पर जगह पसंद की। गुरु जी ने इस स्थान पर कीरतपुर नामक नगर आबाद करके अपना निवास यहीं कर लिया।

कहिलूर के राजा कल्याण चंद ने रियासत की नयी राजधानी बनाने के लिए जगह तलाश करनी शुरू कर दी। इस कार्य के लिए उसने दो हिंदू तथा दो मुसलमान फकीरों से मदद मांगी। इन्होंने सतलुज दरिया के किनारे पर 'ब्यास गुफा' नामक ज़मीन पसंद करके राजा को बताया। इस स्थान पर ऋषि व्यास ने काफी लंबा समय अपना निवास रखा था। राजा तारा चंद और युवराज दीप चंद ने इस स्थान पर इन फकीरों से लकड़ी की मोहड़ी गढ़वाकर नया नगर बसाकर अपना निवास बनवाया। उसने अपने राज महल का नाम धोलर ऋषि के नाम पर रखा। कुछ समय बीतने के बाद इस ब्यास गुफा का नाम बिगड़कर बिलासपुर पड़ गया। आज भी कोट कहिलूर से बिलासपुर तक के क्षेत्र को कहिलूर कहा जाता है। १७०७ बिक्रमी में राजा तारा चंद अपनी राजधानी कोट कहिलूर से बदलकर पूरी तरह बिलासपुर ले आए थे।

१७२२ बिक्रमी में बिलासपुर के राजा दीप चंद की मृत्यु हो गई। राजा दीप चंद श्री गुरु तेग बहादर साहिब का परम श्रद्धालु था। गुरु जी राजा दीप चंद के मात्म पुरषी पर माता नानकी जी एवं माता गुजरी सहित गए। राजा दीप चंद की पत्नी रानी चंपा उर्फ़ जलाल देवी उर्फ़ गुलाब देवी ने गुरु जी की माता, माता नानकी जी के पास जाकर फरियाद की कि गुरु जी का उनकी रियासत को बहुत आश्रय है, हमें पता चला है कि गुरु जी कीरतपुर साहिब से कहीं और जा रहे हैं। अगर कीरतपुर साहिब में जगह की कमी है तो गुरु जी को नया गांव

बसाने के लिए उसकी रियासत में से जितनी जगह चाहिए ले लो किंतु वह बिलासपुर रियासत को छोड़कर न जाएं। रानी सोचती थी कि गुरु जी के उसकी रियासत में नया नगर बसाने से रियासत की सीमा और सुरक्षित हो जाएगी। गुरु जी ने रानी की विनती को कबूल करते हुए बांगर देश जाने का निर्णय त्याग दिया और १७२२ बिक्रमी (१६६५ ई) में रानी चंपा ने सतलुज दरिया के किनारे पर गांव सहोटा की जूह में माखोवाल का थेह खरीदकर बाबा बुड्ढा जी के पोते बाबा गुरदित्ता जी से लकड़ी की मोहड़ी गढ़वाकर 'चक्क नानकी' नगर आबाद किया। यही नगर बाद में श्री अनंदपुर साहिब के नाम से प्रसिद्ध हुआ। श्री अनंदपुर साहिब का अपना कुल क्षेत्र ८६ हैक्टर है, इसके साथ ही चक्क नानकी का ७८ हैक्टर, सहोटा १४६ हैक्टर, लौधीपुर ५३७ हैक्टर, मटौर २०८ हैक्टर, मीआंपुर ७६ हैक्टर, अगंमपुर १२४७ हैक्टर से भी कुछ-कुछ हिस्सा श्री अनंदपुर साहिब में आता है।

भारत का बादशाह औरंगजेब बना। वह कट्टर सुन्नी मुसलमान था और वह सारे हिंदोस्तान को 'दारुल-ए-इस्लाम' बनाना चाहता था। १७२२ बिक्रमी में बादशाह औरंगजेब ने हुक्म जारी कर गैर मुसलमानों पर ५ प्रतिशत की दर से चुंगी कर लगा दिया। औरंगज़ेब ने हिंदुओं पर दीवाली एवं होली मनाने की पाबंदी लगा दी। हिंदुओं के तीर्थ यात्रा करने पर कर लगा दिया। १७२६ बिक्रमी में हिंदुओं के मंदिर तथा शिक्षा केंद्र गिराने शुरू कर दिए गए। सबसे पहले बनारस, मथुरा और फिर अन्य प्राचीन मंदिर गिराकर मस्जिदें बनवा दी गईं। १७२८ बिक्रमी तक धीरे-धीरे हिंदुओं को सरकारी नौकरियों से निकालना शुरू कर दिया।

इतिहासकार खाफी खां लिखता है कि सिक्खी के प्रचार एवं चढ़दी कला की ख़बरें भी बादशाह औरंगजेब को मिलीं तो उसने हुक्म कर दिया कि इनके धार्मिक स्थान नष्ट कर दिए जाएं। गुरु-घर के मसंदों को शहर से बाहर निकाल दिया जाए। इस शाही फरमान को अमली रूप देते हुए सरहिंद के परगना ख़िज़राबाद के बूड़ीआ नामक स्थान पर बना गुरुद्वारा साहिब गिराकर, उस स्थान पर मस्जिद तामीर करवा दी। सय्यद ज़फर दरवेश (नक़शबंदी) को इस मस्जिद का मुल्लां नियुक्त कर दिया गया। सिक्खों की तरफ से ज़फर दरवेश को मार दिया गया। सरकार ने सिक्खों के विरुद्ध कड़ी कारवाई करनी शुरू कर दी। जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब को मालूम पड़ा तो वह आसाम से वापिस श्री अनंदपुर साहिब आ गए। १७२९ बिक्रमी में उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को पटना साहिब से श्री अनंदपुर साहिब में बुला लिया। यहीं श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने बाल (गुरु) गोबिंद राय की शिक्षा हेतु विशेष प्रबंध किया। आप जी को फारसी भाषा की शिक्षा देने के लिए मुंशी पीर मुहम्मद, ब्रज भाषा की शिक्षा के लिए साहिब चंद, संस्कृत की शिक्षा के लिए पंडित कृपा राम, गुरमुखी के लिए भाई हरजस राय, घुड़सवारी एवं शस्त्र शिक्षा के लिए भाई बजर जी शाहदरा की जिम्मेदारी लगाई गई। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पाठ तथा अर्थ बोध श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने स्वयं करवाया।

औरंगजेब के हुक्म से सबसे पहले कश्मीर के सूबेदार इफ़तार खां ने हिंदुओं पर जुल्म करने शुरू कर दिए क्योंकि समझा जाता था कि कश्मीर के ब्राह्मण बहुत विद्वान हैं, जिनसे संपूर्ण भारत के ब्राह्मण शिक्षा प्राप्त करते थे। बादशाह औरंगजेब समझता था कि अगर हिंदुओं को अशिक्षित कर दिया जाए तो उनको इस्लाम में शामिल करना आसान हो जाएगा। कश्मीर में

जो हिंदू इस्लाम धारण करने से इन्कार करते थे, उन पर तरह-तरह के जुल्म करने शुरू कर दिए। दुखी होकर पंडितों का एक समूह हिंदू पहाड़ी राजाओं के पास मदद की गुहार लेकर आया परंतु किसी ने उनका साथ नहीं दिया। अंत में उन्होंने श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शरण में श्री अनंदपुर साहिब पहुंचकर फरियाद करने की योजना बनाई। जब कश्मीर के पंडित गुरु जी के दरबार में फरियाद लेकर आए तो उस समय बाल गोबिंद राय अभी मात्र ९ वर्ष के थे। श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कश्मीरी ब्राह्मणों पर हो रहे जुल्म का जमकर विरोध किया, जिसके फलस्वरूप बादशाह औरंगजेब की तरफ से गुरु जी को १७३२ बिक्रमी में दिल्ली के चांदनी चौक में शहीद करवा दिया गया। वहां भगदड़ मच गई। गुरु जी का सिक्ख भाई लक्खी शाह इस भगदड़ में गुरु जी का धड़ और भाई जैता जी गुरु जी का पावन शीश उठाकर ले गए। तब से ही लोगों में कहावत चली आ रही है कि :

चलो चलाई हो रही गड़ गड़ उखड़े मेघ,
लखी निगाहीआ लै गए तूं खड़ा तमाशा वेख।

भाई लक्खी शाह बनजारे ने गुरु जी का धड़ अपने घर ले जाकर, अपने घर को ही आग लगाकर गुरु जी के पावन शरीर का अंतिम संस्कार कर दिया। गुरु जी का पावन शीश भाई जैता जी एक चादर में लपेटकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पास पहुंच गए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पावन शीश का बहुत सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार किया तथा भाई जैता जी की इस बहादुरी के सदका 'रंघरेटा गुरु का बेटा' का खिताब दिया। इसके बाद श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सिक्खी के प्रचार-प्रसार में नयी पगडंडियां बनाकर सिक्खों को प्रत्येक पक्ष से मज़बूत करने की योजना तैयार की।

गुरु जी के दीवान नंद चंद ने गुरु जी की आज्ञा पाकर एक नगाड़ा तैयार करवाया। इस नगाड़े का नाम गुरु जी ने 'रणजीत नगाड़ा' रखा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने आसाम के राजा रतन राय की उपस्थिति में रणजीत नगाड़ा स्थापित किया। सिक्ख इतिहास के अनुसार गुरु जी जब शिकार खेलने जाते तो उनकी सवारी के आगे यह नगाड़ा बजाया जाता था। मसंदों के मन में यह भय घर कर गया कि नगाड़े के बजाने से स्थानीय राजाओं के मन में विरोध की भावना उत्पन्न हो सकती है, पहली बार जब राजा भीम चंद आए तो तब भी नगाड़ा बज रहा था। जब भी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दरबार में आते तो नगाड़ा बजता था। इस नगाड़े की पहाड़ी राजाओं में इतनी दहशत थी कि इसको देखकर ही मैकरेगर ने लिख दिया कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने एक अलग राज्य कायम कर लिया था।

त्रिपुरा के राजा रतन राय का पिता राम राय श्री गुरु तेग बहादर साहिब का अनन्य श्रद्धालु सिक्ख था। जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब आसाम की यात्रा पर गए थे, उस समय राजे ने गुरु जी की बहुत सेवा की थी। जब रतन राय बड़ा हुआ तथा उसको मालूम हुआ कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत के बाद उनके सुपुत्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी गुरगद्दी पर उपस्थित हैं तो वह दर्शनों के लिए श्री अनंदपुर साहिब आया। राजा रतन राय ने गुरु जी को एक प्रसादी हाथी, बढ़िया नसल के पांच घोड़े और कई शस्त्र भेंट किए। प्रसादी हाथी के माथे पर रोटी के आकार का सफेद चांद जैसा निशान, सूंड की नोक से लेकर पूंछ के सिरे तक सफेद रेखा थी। यह हाथी गुरु जी को चंवर करता था, रात्रि के समय मशाल लेकर गुरु जी के आगे-आगे चलता था, चलाये

गए तीरों को उठाकर लाता था तथा जल लेकर गुरु जी के चरण धोता था। इस हाथी की चर्चा सभी पहाड़ी रियासतों में हो गई। बिलासपुर के राजा भीम चंद के मन में इस हाथी को प्राप्त करने की इच्छा पैदा हो गई। उसने गुरु जी से हाथी की मांग की गुरु जी ने इस हाथी को देने से इन्कार कर दिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी कलम एवं कृपाण की शक्ति को भलीभांति प्रयोग करने की मुहारत रखते थे। गुरु जी चाहते थे कि उनके सिक्ख भी कलम तथा कृपाण की शक्ति से भलीभांति अवगत हों। यही कारण है कि यहां गुरु जी ने देश की रक्षा हेतु अच्छे खड़गधारी शूरवीर तैयार करके अपने पास रखे, वहीं साथ ही शास्त्रवेता विद्वान कलम धारकों को भी बहुत आदर-सम्मान के साथ अपने पास रखा। वस्तुत: गुरु जी स्वयं ऊंची शख़्सियत के गुरु, वीर सेनापति और विद्वान कवि का सुमेल थे। गुरु जी ने स्वयं कलम भी चलाई तथा तेग भी वाही। रूहानी दरबार भी लगाये तथा दुनियावी कार्य-व्यवहार भी अच्छी तरह चलाये, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने गुरगद्दी पर बैठने के दो-तीन वर्ष बाद ही सिक्खों को हुक्मनामे भेजकर यह हुक्म किया कि अगर किसी भी इलाके में लिखारी सिक्ख हो तो उसको श्री अनंदपुर साहिब भेज दिया जाए। इस प्रकार गुरु जी ने अन्य विद्वान, साहित्यकारों को अच्छा मेहनताना देकर श्री अनंदपुर साहिब लाने का प्रबंध किया। इस सम्बंध में स. केसर सिंघ छिब्बर बंसावलीनामा के दसवें चरण में लिखते हैं कि :

जो ब्राहमण विदवान है चंगा, सो भिजवाणा।
जो खरच लगे सो गुरू के, घरूं लाणा।

इस संदेश के अनुसार बहुत-से विद्वान, कवि-जन तथा लिखारी गुरु जी के पास आ गए। श्री अनंदपुर साहिब में रौनक लग गई। इस समय के दौरान ही १७३७ बिक्रमी की लखण, ने १७४१ बिक्रमी को तनसुख ने हितोपदेश का अनुवाद किया। १७४० बिक्रमी को कवि गोपाल द्वारा लिखी 'मोह मर्द राजे दी कथा' भी मिलती है। कुछ हालातों के अनुकूल गुरु जी को कुछ समय पाऊंटा साहिब में रहना पड़ा। वहां जाकर भी गतिविधियां निरंतर जारी रही। कुछ समय बाद जब गुरु जी वापिस श्री अनंदपुर साहिब वापिस आए तो उन्होंने साहित्यक कार्यों की योजना बनाकर पूरी शक्ति और प्रेरणा से कवि-जनों को इक्ट्ठा करना शुरू कर दिया। इस समय ही १७४६ बिक्रमी में कवि प्रहिलाद ने गुरु जी के पास आकर उपनिषदों का अनुवाद करना शुरू किया और काशीराम ने पांडव गीता का अनुवाद किया। १७५० से १७५३ बिक्रमी तक महाभारत का अनुवाद करवाये जाने के भी लिखित प्रमाण मिलते हैं। गुरु साहिब के दरबार में दिल्ली दरबार से सम्मानित कवि-- आलम, सुखदेव, बृंद चंद, काशी राम, कुवरेश, नंद राम तथा नंद लाल आदि कवि भी श्री अनंदपुर साहिब में आए। प्रत्येक विद्वान गुरु जी के दरबार में पहुंचकर गर्व महसूस करता था। सभी विद्वान अच्छी तरह अनुभव कर रहे थे कि गुरु जी भारतीय संस्कृति के पुनर्निर्माण के लिए साहित्यक कार्य कर नये इंकलाब की नींव रख रहे हैं। आलम कवि बादशाह औरंगजेब के पुत्र शहजादा मुअज्जम के पास रहता था। वह अपने तुजुर्बे से कहता है कि जिस तरह श्री गुरु गबिंद सिंघ जी के दरबार में कवियों को प्रतिदिन धन-दौलत के साथ मालामाल किया जाता है, वैसा राजा भोज के दरबार में भी नहीं था। वहां तो कभी-कभी ऐसा होता था, यहां तो गुरु दरबार में ये दातें प्रतिदिन बांटी जाती थीं :

शोभा हूं के सागर नवल नह नागर है

बालं भीम सम शील कहां लो मिनाईए।
भूम के बिभूखन जु दूखन के दूखन,
समूह सुख हूं के मुख देखे ते अधाईए।
हिंमत निधान आन दान के बखाने जाने,
'आलम' तमाम जनम आठो गुन गाईए।
प्रबल प्रतापी पातिशाहु गुरू गोबिंद सिंघ जी,
भोज की सो मौज तेरे रोज़ रोज़ पाईए।

मंगल कवि श्री अनंदपुर साहिब की प्रशंसा करता हुआ अन्य कवियों को यहां आने का न्योता देता हुआ कहता है कि अगर सच में ही कविता का व ज़िंदगी का आनंद लेना हो तो श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे :

पूरन पुरख अवतार अनि लीनी आप,
जा के दरबार मन चितवै सो पाईए।
घटि घटि बासी अबिनासी नाम जा को जग,
करता करनहार सोई दिखराईए।
नौमे गुर नंद, जग बंद तेग तयार पूरे,
मंगल सु कबि कहि मंगल सुबाईए।
आनंद के दाता गुरू साहिब गोबिंद राइ,
चाहै जो अनंद तौ अनंदपुरी आईए।

१७४५ बिक्रमी में रानी चंपा ने गुरु जी को पत्र लिखकर विनती की कि वह पाऊंटा साहिब से 'चक्क नानकी' में वापिस आ जाएं। गुरु जी के वापिस आ जाने पर रानी चंपा गुरु जी के दर्शनों के लिए आई और उसने गुरु जी को विनती की कि चक्क नानकी नगर की हिफाज़त के लिए किला बनाना बहुत आवश्यक है क्योंकि नगर की आबादी प्रतिदिन घनी होती जा रही थी। रानी चंपा ने गुरु जी द्वारा नये नगर बसाने के लिए अगंमपुर तथा तारापुर की ज़मीन भी अरदास करवा दी। १७४६ बिक्रमी में गुरु जी ने सबसे पहले दो दरियाओं के बीच रिक्त स्थान देखकर अनंदगढ़ का निर्माण करवाना शुरू कर दिया। १७४७ बिक्रमी तक पांच किले बनकर तैयार हो गए थे। सिक्ख भी शस्त्र चलाने का अभ्यास प्राप्त कर प्रवीण योद्धा बन गए थे। इन दिनों ही लाहौर के सूबेदार ने जम्मू के किलेदार मीन ख़ान को पहाड़ी राजाओं से लगान इकट्ठा करने के लिए फौज के साथ भेज दिया। बिलासपुर के राजा भीम चंद ने लगान देने से इन्कार कर दिया तथा गुरु जी से मदद मांगी। गुरु जी ने पहाड़ी राजाओं की मदद हेतु सिक्खों को हुक्म किया। गुरु साहिब ने सिक्ख योद्धाओं की अगुवाई स्वयं की। नदौण के स्थान पर गुरु जी की मुगल फौजों से मुठभेड़ हुई। जम्मू के राजे की बुरी तरह से पराजय हुई। १७४८ बिक्रमी में रानी चंपा की मृत्यु हो गई।

नदौण की पराजय के बाद मुगल फौजें बदला लेने की ताक में थीं। जब इन ख़बरों का पहाड़ी राजाओं को पता चला तो उन्होंने रिवालसर के स्थान पर इकट्ठ किया और गुरु जी ने भी इस इकट्ठ में शमूलियत की। गुरु जी ने पहाड़ी राजाओं को एकजुट होकर जुल्म के विरुद्ध दृढ़ रहने की प्रेरणा देकर उनका साथ देने का प्रोत्साहन दिया किंतु ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था। कुछ समय बाद राजा भीम चंद की मृत्यु हो गई तथा उसका पुत्र अज़मेर चंद रियासत का राजा बन गया।

राजा अज़मेर चंद ने कुछ पहाड़ी राजाओं को साथ मिलाकर गुरु जी के विरुद्ध साज़िशें रचनी शुरू कर दीं। उसने लाहौर दरबार तक पहुंच करके वज़ीर परमानंद को लाहौर भेजकर गुरु जी पर हमला करने के लिए विनती की। पहाड़ी राजाओं की शह में आकर लाहौर के सूबेदार दिलावर खां ने अपने पुत्र की कमांड तले श्री अनंदपुर साहिब पर हमला करने के लिए फौज भेज दी। मुगल सेना का यह हमला नाकाम हो गया, जिससे सिक्खों के हौसले और भी बढ़ गए। इस हमले के नाकाम होने से

किसी की भी श्री अनंदपुर साहिब पर हमला करने की हिम्मत न हुई। श्री अनंदपुर साहिब में फिर से अमन-शांति हो गयी।

उस समय में अलग-अलग इलाकों में मसंद सिक्खी का प्रचार किया करते थे तथा दसवंध इकट्ठा करके गुरु जी पास पहुंचाया करते थे। गुरु जी पास मसंदों के विरुद्ध शिकायतें पहुंच रही थीं। गुरु जी ने मसंदों को श्री अनंदपुर साहिब में बुलाया और उनका चुनाव कर निर्दोष मसंदों को सिरोपाउ देकर सम्मानित किया तथा दोषी मसंदों को दंड दिए गए। इसके साथ ही गुरु जी ने 'मसंद प्रथा' खत्म करने का आदेश दिया। गुरु साहिब ने सारे सिक्खों को हुक्मनामे भेजकर वैसाखी पर श्री अनंदपुर साहिब पहुंचने का आदेश दिया। १७५६ बिक्रमी की वैसाखी (१६९९ ई) के दिन केसगढ़ साहिब के स्थान पर संगत का विशाल इकट्ठ हुआ। गुरु जी पाठ, कथा-कीर्तन के बाद समीप ही बनाये विशेष तम्बू (शामियाना) में गए तथा कुछ समय बाद हाथ में नग्न कृपाण लेकर प्रचंड वीर रूप में मंच पर आए और संगत को सम्बोधित होकर कहा कि, "आज मेरी कृपाण को शीश की ज़रूरत है, कोई सिक्ख आए और अपना शीश भेंट करे!" 'गुरबिलास' कृत कुइर सिंघ के अनुसार श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब कृपाण सूत शीश मांगे थे तो यह कहा था :

सनमुख सिख है कोई। सीस भेट गुर देवे कोई।

पूरे पंडाल में मौन छा गया। कुछ समय बाद तथाकथित क्षत्रिय बिरादरी से सम्बंधित भाई दया राम हाथ बांधकर शीश भेंट करने के लिए उठ खड़ा हुआ। भाई दया राम जी भाई पारो जुलका जी के वंश में थे। महान कोश के कर्ता भाई कान्ह सिंघ नाभा ने उनको सोफती गोत्र के बताया है। भाई पारो जुलका जी के वंश से भाई मईआ राम जी श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के समय सिक्खी का प्रचार किया करते थे। भाई मईआ राम जी का विवाह भाई सुधा सिंघ की सुपुत्री बीबी सोभा देई के साथ हुआ। यह परिवार लाहौर में जाकर आबाद हो गया था। यहीं पर ही इनके घर भाई दया राम जी का जन्म हुआ। भाई दया राम जी बचपन से ही माता-पिता के साथ गुरु साहिब के दर्शनों हेतु जाया करते थे। भाई दया राम जी का विवाह श्री गुरु नानक देव जी के ननिहाल डेरा चाहल (पाकिस्तान) के निवासी भाई हकीकत चंद तथा माता हरिदेयी की सुपुत्री बीबी दयाली से हुआ। गुरु जी भाई दया राम जी को तंबू में ले गए।

कुछ समय बाद गुरु जी हाथ में रक्त से सनी कृपाण लिए फिर मंच पर आए तथा दोबारा शीश की मांग की। तथाकथित जट्ट बिरादरी से सम्बंधित भाई धर्म चंद जी शीश भेंट करने के लिए उठ खड़े हुए। यह हस्तनापुर से आए थे। इनके परिवार का सम्बंध बरनाला के पास गांव सेखे के जवंदे गोत्र के सरदार त्रिलोके के साथ बताया जाता है। सेखे गांव के इर्द-गिर्द जवंदे जट्टों के २२ गांव थे। किसी प्राकृतिक आपदा के कारण या किसी हमले कारण यह गांव बर्बाद हो गए थे, जिस कारण बहुत-से निवासी यहां से उठकर हस्तानपुर (सैफपुर), मेरठ, यू पी के इलाकों में चले गए थे।

गुरु जी ने तंबू से बाहर आकर तीसरी बार फिर शीश की मांग की। इस बार तथाकथित नाई बिरादरी से सम्बंधित भाई साहिब चंद शीश भेंट करने के लिए हाज़िर हुए। ये बिदर से आए थे। 'महान कोश' के कर्ता भाई कान्ह सिंघ नाभा ने भाई साहिब चंद

जी के परिवार का पृष्ठभूमि ज़िला होशियारपुर के गांव नंगल शहीदां बताई है।

चौथी बार गुरु जी की मांग पर तथाकथित झीवर बिरादरी से सम्बंधित भाई ज्योति राम उर्फ़ गुलज़ारी एवं माता रामो जी उर्फ़ धन्नो जी का पुत्र भाई हिम्मत राय जी शीश भेंट करने के लिए गुरु जी पास हाज़िर हुए। यह पुरी (जगन्नाथ) से आए थे। भाई कान्ह सिंघ नाभा ने इस परिवार का सम्बंध पटियाला रियासत के गांव संगतपुरा से बताया है। आजकल यह गांव ज़िला संगरूर में है। अल्प आयु में ही उनके माता-पिता अकाल चलाना कर गए थे। भाई हिम्मत राय कोई सहारा न होने के कारण बाहर रहते हुए नानक-नाम-लेवा सिक्खों के पास बिदर, उड़ीसा एवं जगन्नाथ पुरी में रहने लग गए थे।

गुरु जी के पांचवीं बार मांग करने पर तथाकथित छींबा (छीपा) बिरादरी से सम्बंधित भाई तीरथराम उर्फ़ तीरथचंद तथा माता सुखदेवी उर्फ़ देवांबाई के पुत्र भाई मोहकम चंद शीश भेंट करने के लिए आए। यह द्वारिका से आए थे। भाई कान्ह सिंघ नाभा ने इस परिवार की पृष्ठभूमि बूड़िए गांव से बतायी है।

कुछ समय बाद गुरु जी ने शीश भेंट करने वाले पांचों सिक्खों को नये सुंदर वस्त्र पहनाकर तथा नये शस्त्र धारण करवाकर संगत के समक्ष लेकर आए। गुरु जी ने सरबलोह के बाटे में 'अमृत' तैयार करना शुरू किया। यह अमृत सबसे पहले गुरु जी ने पांचों सिक्खों को छकाकर, फिर उनके हाथों स्वयं अमृत छका। उस दिन इन पांचों सिक्खों के रूप में खालसे का जन्म हुआ। गुरु जी ने इन सभी को जात-पात के बंधनों से मुक्त करके इन सभी के नाम के साथ 'सिंघ' शब्द लगाया। गुरु जी ने सभी भेदभाव मिटाकर समूची मानवता को एक समान समझने, स्वाभिमान की भावना को हमेशा बरक़रार रखना और हमेशा धर्म-युद्ध के लिए तैयार-बर-तैयार रहने का उपदेश दिया। गुरु जी ने खालसे के लिए पांच ककार-- कृपाण, केश, कड़ा, कंघा तथा कछिहरे की मर्यादा के साथ अच्छे कर्मों पर दृढ़ रहने और बुरे कर्मों से दूर रहने का उपदेश दिया। देश के ज़ालिम शासकों का जुल्म सहन कर निरीह हो चुकी जनमानस में गुरु जी ने नयी शक्ति का संचार किया। उसके साथ भारतियों की गुलाम मानसिकता चढ़दी कला में बदल गई तथा ज़ालिम प्रशासकों के विरुद्ध जन संघर्ष उत्पन्न हो गया। इस दिन के बाद आगामी इतिहास की नुहार बदल गई। उस दिन से सिक्ख इतिहास में वैसाखी का दिन खालसे के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है।

'गुर बिलास' के अनुसार गुरु जी ने कहा-- सदा उज्ज्वल वस्त्र पहनना, अल्प आहार, केशों की संभाल करना तथा

-दिजै दान भुखै, लहो जाइ पयारे।
दिवानं लगावै, सुने शबद सारे।
गुरू ग्रंथ जानो सदा अंग संग।
-जहां धरम साला तहां नीत जैये।
गुर दरस कीजै, महा सुख पैये।
जपो वाहिगुरू जाप चीते सदा ही।
सदा नाम लीजै, गुरू गति गाहि।

खालसे की सृजना से पंजाब में एक नयी लहर का विकास शुरू हो गया। यह नयी लहर राजनीतिक लोगों को ख़तरा भांपने लगी। श्री अनंदपुर साहिब नगर उस दिन से खालसे की जन्म भूमि के रूप प्रसिद्ध हुआ। वैसाखी के समय बुलवाए गए विशाल इकट्ठ की ख़बर सरकारी 'वाकए नवीसां' ने जो उस समय दीवान में मौजूद थे, लिखकर बादशाह औरंगज़ेब को भेज दिया। इसका ज़िक्र फारसी लिखित

तारीख; कृत मुनशी गुलाम महीऊद्दीन में किया गया है कि "आज गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने सिक्खों को इस प्रकार एलान किया है कि सारे लोग धर्म वाले हो जाएं ताकि द्वैत बीच में से उठ जाए। चारे वर्ण हिंदुओं के, जैसा कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश, शूद्र प्रत्येक का अलग-अलग धर्म शास्त्र नियत है, वह उनको त्यागकर एक प्रेम का पंथ अंगीकार करे परस्पर भाई बन जाएं तथा एक आदमी दूसरे आदमी से अपने आप को बड़ा ख़्याल न करे।. . . अमृत पान करके चारे वर्णों के आदमी एक पात्र में भोजन खाएं और एक-दूसरे से घृणा न करें। इस प्रकार के बहुत-से उपदेश कथन किए जन पुरषों ने सुने तो बहुत ज्यादा क्षत्रिय, ब्राह्मण उठ खड़े हुए तथा कहने लगे कि हम गुरु नानक एवं अन्य गुरुओं के धर्म नहीं मानते तथा जो धर्म वेद शास्त्र के विरुद्ध हैं, उसको कभी भी स्वीकार नहीं करेंगे और सनातन धर्म की जो बुजुर्गों का चलाया हुआ है, एक छोकरे (श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी) के कहने पर नहीं छोड़ेंगे। जब यह बात कही गई तो बीस हज़ार पुरुषों ने कहा हम सहमत है तथा अपने मुंह से आज्ञाकारी होने का वचन किया।"

गुरु जी ने श्री अनंदपुर साहिब में सिक्खों को नकली (मसनूई) युद्ध करवाने शुरू कर दिए। हर तरफ से योद्धाओं ने आकर गुरु जी की शरण ले ली। सिक्खों में जोश भरने के लिए वारें सुनाई जाने लगीं। फलस्वरूप अच्छी दलेर फौज तैयार हो गई। होले-महल्ले के समय पर सिक्खों के शस्त्र विद्या के मुकाबले करवाए जाने की रीति शुरू की गई। यहीं पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसे को धर्म-युद्ध के लिए सैनिक शिक्षा दी और सिक्खों के मनोबल को ऊंचा करने के लिए वीर-रस भरपूर साहित्य रचना की तथा करवाई।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने होला-महल्ला खेलने की रीति सबसे पहले श्री अनंदपुर साहिब में आरंभ की। गुरु जी खालसे को युद्ध-विद्या में निपुण बनाना चाहते थे। इतिहास के अनुसार श्री अनंदपुर साहिब में होलगढ़ किले वाले स्थान पर १७५७ बिक्रमी में गुरु जी ने इस अद्भुत त्योहार का उद्घघाटन किया। भाई कान्ह सिंघ नाभा तथा भाई वीर सिंघ आदि विद्वानों ने होले-महल्ले के अर्थ 'हल्ला' तथा 'हल्ले वाली जगह' या बनावटी हमले किए हैं। कवि सुमेर सिंघ इस संदर्भ में गुरु जी के आदेश का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं कि :

औरन की होली मम होला ॥
कहयो कृपानिध बचम अमोला ॥

यह वास्तव में सिक्ख सैनिकों को अभ्यास करवाने के लिए बनावटी युद्ध होता था। सैनिकों को दो दलों में बांटकर, एक दल को सफेद तथा दूसरे दल को केसरी वस्त्र पहनाए जाते थे। बनावटी युद्ध कई रूपों में लड़ा जाता था। मुख्य रूप में दोनों दलों को होलगढ़ पर कब्ज़ा करने के लिए प्रेरित किया जाता था। जो दल पहले कब्ज़ा करता उसको इनाम तथा सिरोपाउ दिए जाते थे। फिर एक दल को होलगढ़ पर काबिज़ बताकर दूसरे दल को उनका कब्ज़ा तोड़कर अपना कब्ज़ा करने के लिए भेजा जाता था। जीतने वाले दल को बहुत इनाम देकर प्रशंसा की जाती थी। इस मौके पर सात दिन दीवान सजते, कीर्तन होता, वारें गाई जातीं, अनेक तरह की फौजी कवाइंदे या मशकें होती। गुरु जी इन समारोह में स्वयं शामिल होकर सिक्खों की प्रोतसाहित करते। ऐसा करने से शासकों की मनमर्ज़ियों में रुकावट पड़नी शुरू हो गई। बहुत सारे पहाड़ी राजे और मुगल शासकों ने गुरु जी की तरफ से सृजी लहर को दबाने के लिए एड़ी चोटी

का ज़ोर लगा लिया। बिलासपुर के राजे अज़मेर चंद को वज़ीर परमानंद ने भड़काना शुरू कर दिया कि गुरु जी ने खालसा फौज बनाकर स्वयंसंचालन शुरू कर दिया है जो कि हमारी रियासत का हिस्सा है। राजा अज़मेर चंद ने गुरु जी को पैगाम भेजा कि लगान अदा करो, अपना जात-पात एवं मूर्ति पूजा आदि का विरोध करने वाला उपदेश तथा व्याख्यान बंद करो, नहीं तो श्री अनंदपुर साहिब खाली करके रियासत से चले जाओ। गुरु जी ने ये बातें मानने से साफ इन्कार कर दिया। पहाड़ी राजाओं ने मिलकर श्री अनंदपुर साहिब को घेरा डाल लिया। १७५७ बिक्रमी में पहाड़ी राजाओं ने श्री अनंदपुर साहिब में लोहगढ़ किले का दरवाज़ा तोड़ने के लिए एक हाथी को मदिरा पिलाकर मस्त करके छोड़ दिया। गुरू कीआं साखीआं के अनुसार "बुड्ढे वज़ीर परमानंद ने कहा कि कल की जंग गुरू जी के किलों में से लोहगढ़ के सिक्खों गैल लरी जाए, ठीक रहेगी। देखनां अब यह है कि लोहगढ़ किले का दरवाज़ा बड़ा मज़बूत है तो इसे कैसे तोड़ा जाएगा। वज़ीर परमानंद फिर बोला सुबह एक हाथी जिसे मद पीलाए तियार किया जाए तो उसके सिर पे एक जा दोए फुलादी तवीआं बांध उस ते दोधारी मांग खींच के बांध दी जाए ते हच्छा रहेगा।"

इस बात की ख़बर गुरु जी पास जासूसों के जरिए पहुंच गई। गुरु जी ने श्री अमृतसर से आए बहुत ऊंचे कद्-काठ के मालिक दुनी चंद को हाथी का मुकाबला करने के लिए तैयार रहने के लिए कहा। गुरु जी द्वारा हाथी के साथ लड़ने के हुए हुक्म को सुनकर दुनी चंद डर गया। उसने रात को श्री अनंदपुर साहिब से भाग जाने की योजना बनाई और रस्सी द्वारा किले से उतरते समय गिर पड़ा, जिससे उसकी टांग टूट गई। श्री अमृतसर पहुंच कर कुछ दिनों बाद सांप के डसने से उसकी मृत्यु हो गई। 'गुरू कीआं साखीआं' के अनुसार "किला अनंदगढ़ में संधिआ के बाद सूहीए सिक्ख चतर सिंघ बराड़ ने आए आज की सारी विथिआ सतिगुरू से सुनाई जिसे सुन गुरू जी मुसकराए. . ।" भाई आलम सिंघ नचना बोला-जी गरीब निवाज! डरता दुनी चंद कायर होए यहां से भाग गिआ है। इतना तो बताइए कि सुबह जो बला किला लोहगढ़ ते आइ रही है, इसका टाकरा कौन करेगा।. . . सतिगुरां चतर सिंघ से ख़बर पाए लगे दरबार में चवीं पासी देखा कि हाथी के मुकाबले में कउन सा जोधा भेजा जाइ। लाल सिंघ आदि पचीस सिक्ख जो रात्री के समय गुरू जी के पलंघ की सेवा में रहिते थे, इन में बचित्तर सिंघ की तरफ निगाह जाइ पई . . .। बचन होआ सिंघा! किला लोहगढ़ में जाइ राजयों का आइ रहा मदमसत हाथी का सामना करना है, तिआरी करीए। गुरु जी इस बरछा दीआ।"

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई बचित्र सिंघ जी को हाथी का मुकाबला करने का आदेश दिया। सिक्ख इतिहास के अनुसार जब शराब से मस्त चिंघाड़ता हुआ हाथी किले के दरवाज़े के पास पहुंचा तो भाई बचित्र सिंघ जी ने घोड़े पर सवार होकर बड़ी दिलेरी से हाथी के माथे पर बरछा मारा जो हाथी के माथे को भींद गया। जख़्म की ताब न झेलता हुआ दर्द से चिंघाड़ता हुआ हाथी पीछे की तरफ भाग खड़ा हुआ। गुरु जी ने भाई बचित्र सिंघ की बहादुरी की प्रशंसा की। भाई संत राम छिब्बर ने अपनी रचना पुरातन वार "भेड़ा पा: १०" में इस घटना का ज़िक्र इस प्रकार किया है :

बरछा सिंघ बचित्र दा मुल महिंगो होया।
लाया जो तन गज हसत के मीर शीख प्रोया।

सो राजदूतां मारके जम हाथी होआ।

"गुरू कीआं साखीआं" के अनुसार, "बचित्र सिंघ गुरू जी का हुकम पाइ अरदास करके किला लोहगढ़ की तरफ आइआ इसके नाल ही दुशमन ने मसत हाथी के पीछे एक तकड़ी फौज भी भेजी थी ताकि हाथी की तरफ से किले के दरवाज़े तोड़े जाने की सूरत में यह फौज तुरंत किले में परवेश कर जाए . .। सबसे आगे मदमसत हाथी इसके पाछे घोड़ असवार होए राजा केसरी चंद जसवारीआ चला आइ रहा है। गुरु दरबार में सतिगुरां के निकट बैठे मुसाहिब आलम सिंघ ने इसे आते हुआ देखा।. . भाई उदय सिंघ सावें आंइ खला हुआ हाथ बांध बोला कि जिवें रावर की मर्ज़ी, हाज़र हां। गुरू जी ने इसे दूसरा बरछा दीवान साहिब सिंघ से कहि के मंगवाए दिया। उदय सिंघ गुरू जी का हुकम पाए अराकी 'ते असवार होए किला लोहगढ़ में आइ पहुंचा . .।

उधर सवा पहर दिहुं चड़े राजा अज़मेर चंद कहिलूरी बमै फौज किला लोहगढ़ के नज़दीक आइ पहुंचा। भाई बचितर सिंघ ने देखा समां नेड़े आइ चुका है। इह प्रिथमे अरदास करके ते साथी सिंघां से आज्ञा लै घोड़े ते असवार होइ किला लोहगढ़ से बाहर आइआ . .। बचितर सिंघ सति श्री अकाल का जैकारा गजाइ आंख की फोर में बिजली की तरह घोड़े को भजाइ हाथी के निकट जाए पहुंचा। भाई साहिब ने दोनों पाऊं का भार घोड़े की रकाबों में पाए ऐसे ज़ोर से हाथी के मसतक में बरछा मारा कि उसके माथे कीआं तवीआं विंन्ह के बीच फस गिआ। बचितर सिंघ तेज़ी से ज़ोर के साथ बरछा हाथी के मसतक से खींचा, हाथी चिंघाड़ता हुआ पाछे की तरफ मुड़ आइआ। इसे सिर नाल बांधी तेग से ते पाऊं गैल लताड़ कई परबती जनपुरी रवाना कर दीये। यह देख भाई उदै सिंघ . . सति श्री अकाल का जैकारा बुलाइ घोड़े से ऐड़ी मार केसरी चंद सावें जाइ खला हूआ . .। उदै सिंघ ने परतवां वार श्री साहिब से ऐसा कीआ जिससे केसरी चंद सीस धड़ से जुदा होए गिआ। इस बहादर जोधे ने फुरती से परबतीआ के देखदे-देखदे . . वापस किला अनंदगढ़ की तरफ आइ गिआ।"

पहाड़ी राजाओं को अपनी पराजय नज़र आई तो उन्होंने गुरु जी के साथ धोखा करने की सोची तथा पहाड़ी राजे अज़मेर चंद कहिलूरिए ने दूसरे अन्य पहाड़ी राजाओं- कर्म प्रकाश, बीर सिंह जसपालिया, मदन लाल, कुनाड़िया, गोपालचंद गुलेरिया, घमंड चंद कालड़िया आदि को इकट्ठा किया। इन्होंने अपने साथ गुजरों आदि को भी शामिल कर लिया। पहाड़ी राजाओं ने मिलकर श्री अनंदपुर साहिब पर आक्रमण कर दिया। पहले हमले में ही रंगड़ा का बहादुर जरनैल जगतऊलाह मारा गया, जिससे उसकी फौज मैदान छोड़कर भाग गई। पहाड़ी राजाओं की फौज का भी बहुत बड़ा नुकसान हुआ। अपनी इज्ज़त बचाने के लिए राजाओं ने गुरु जी को संदेश भेजा कि अगर गुरु जी श्री अनंदपुर साहिब को छोड़ दें तो पहाड़ी राजे अपना घेरा हटा लेंगे। गुरु जी ने उन्हें परखने के लिए श्री अनंदपुर साहिब का किला छोड़कर 'हरदो नमोह' नामक गांव के पास एक पहाड़ी पर बने निरमोहगढ़ के किले में चले गए। पहाड़ी राजाओं ने अपनी खाई कसमों को भुला दिया तथा उन्होंने यहां गुरु जी की सिक्ख सेना को घेरा डाल दिया। यहां सिक्ख सेना की पहाड़ी राजाओं की सेना के साथ भीषण युद्ध हुआ जिसमें सिंघों ने अपनी बहादुरी के जौहर दिखाए। गुरु जी अपने सिक्खों के साथ सतलुज दरिया पार करके, बंसाली गांव के मुखिये के न्योते पर वहां चले

गए और कुछ दिन वहीं रहे।

गुरु जी के बहादुर सिंघों के सामने पहाड़ी राजाओं और मुगल सेना की एक न चली। अपनी पराजय को देखते हुए उन्होंने गुरु जी के आगे कसमें खाकर गुरु जी को अनंदगढ़ खाली करने के लिए तैयार कर लिया। गुरु जी ने इनकी झूठी कसमों पर भरोसा करके १७६१ बिक्रमी में अनंदगढ़ खाली कर श्री अनंदपुर साहिब से रवाना हो गए।

महाराजा रणजीत सिंघ के राज्यकाल के समय पहाड़ी रियासतों को सिक्ख राज्य में शामिल कर लिया गया। श्री अनंदपुर साहिब तथा श्री कीरतपुर साहिब के धार्मिक स्थानों की पहचान करके गुरुद्वारा साहिबान की इमारतें तैयार करवायी गईं। भारत की सबसे बड़ी तहसील ऊना के निवासी स. साहिब सिंघ 'बेदी' का महराजा रणजीत सिंघ बहुत सत्कार करते थे। महाराजा रणजीत सिंघ ने धार्मिक स्थानों की देखभाल को मददे-नज़र नूरपुर का सारा इलाका स. साहिब सिंघ 'बेदी' के नाम कर दिया। उस दिन से ही नूरपुर को नूरपुर बेदी कहा जाने लगा। सन् १८५७ ई. की आज़ादी की लहर के दौरान स. बिकरम सिंघ 'बेदी' द्वारा बढ़-चढ़कर योगदान डाला गया। इसके परिणाम स्वरूप अंग्रेजों ने 'बेदी ख़ानदान' से यह इलाका छीन लिया।

भारत की आज़ादी १५ अगस्त, १९४७ ई को पश्चात १५ अप्रैल, १९४८ ई को पंजाब एवं पहाड़ी रियासतों को भारत सरकार के अधीन कर दिया गया। संविधान के अनुसार मिलान हो जाने के कारण इन रियासतों को 'सी-स्टेट' का रुतबा दिया गया। इसी अधीन कहिलूर रियासत को भी 'सी-स्टेट' का दर्जा दिया गया। फिर १२ अक्तूबर, १९४८ ई. को इन रियासतों का 'सी-स्टेट' का दर्जा तोड़कर सीधा राष्ट्रपति राज्य लागू कर दिया गया। १ जुलाई, १९५४ ई. में हिमाचल प्रदेश को नया राज्य बना दिया गया। इस समय ये रियासतें हिमाचल प्रदेश में मिला दी गईं तथा 'राजा राज्य' हमेशा के लिए समाप्त कर दिया गया। कागड़ा के राजा संसार चंद की तरफ से पहले ही महाराजा रणजीत सिंघ की अधीनता स्वीकार कर ली गई थी।

जुलाई, १९५४ ई में भाखड़ा डैम के लिए गोबिंद सागर झील बनाई गई। इस समय चंदेरी रियासत की निशानी बिलासपुर शहर झील में समाधि लीन हो गया। वास्तव में बिलासपुर शहर का समुद्री तट से ६३७ मीटर की ऊंचाई पर नव-निर्माण किया गया है।

आज भी श्री अनंदपुर साहिब में वैसाखी तथा होला-महल्ला पूरे हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस समय आज भी निहंग सिंघ अपने जंगी-जौहर दिखाते हैं, किला अनंदगढ़ तथा तख़्त श्री केसगढ़ साहिब से नगर-कीर्तन पूरे खालसाई जाहो-जलाल से आरंभ होकर माता जीतो जी के देहुरे, होलगढ़, चरनगंगा आदि स्थानों से होता हुआ खुले मैदान में पहुंचता है। इस मैदान में जंगी-जौहर दिखाए जाते हैं। पिछले पहर यह नगर कीर्तन वापिस तख़्त श्री केसगढ़ साहिब में आ जाता है। ☸

माता नानकी जी

-बीबी मनमोहन कौर*

सिक्ख इतिहास के निर्माण में स्त्रियों का योगदान पुरषों से कहीं भी कम नहीं है। सिक्ख स्त्रियों ने सिक्ख इतिहास में ज़िक्रयोग्य योगदान डाला है, इनमें से माता नानकी जी वो भाग्यशाली सम्मानित शख़्सियत हुए हैं, जिनका गुरु-परिवार के साथ बहुत ही गहरा व लंबा समय सम्बंध रहा। आप जी को श्री गुरु अरजन देव जी की बहू, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की सुपत्नी, श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी की माता जी, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की दादी जी तथा चार साहिबज़ादों की सत्कारयोग्य पड़दादी होने का गौरव प्राप्त है। इस प्रकार आप जी को छः गुरु साहिबान के दर्शन करने तथा उनकी संगत में रहकर समीपता भरपूर जीवन व्यतीत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। माता नानकी सबसे पहले छठम पीर श्री हरिगोबिंद साहिब जी के महल बनकर जीवन जीने के उपरांत अपने सुपुत्र तिआग मल्ल की शख़्सियत को संवार 'तेग बहादर' बनाकर 'हिंद की चादर' बनाया तथा अपने पोते श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की अगुआई करके उनको संत-सिपाही, मर्द अगंमड़े के स्वरूप में उजागर करने में अपनी शख़्सियत का यथायोग्य योगदान डाला। आप जी के जीवन काल के दौरान जहां आप जी के ससुर जी श्री गुरु अरजन देव जी को गर्म तवी पर बैठाकर घोर यातनाएं देकर शहीद कर दिया गया, वहीं आप जी के पति श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का सारा जीवन जंगों/युद्धों एवं संघर्ष से घिरा रहा। यहां तक कि अपने सुपुत्र श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहीदी के समय आप जी ने अकाल पुरख के भाणे को हर्षित कबूल करते हुए अपनी बहू माता गुजरी जी को हौसला और सिक्खी सिदक की शिक्षा दी। अपने शहीद पुत्र श्री गुरु तेग बहादर साहिब का शीश लेने के लिए आगे पहुंचे। आप जी के जीवन काल के दौरान सिक्ख इतिहास बहुत ही संघर्षमयी दौर में से गुज़रता हुआ भी सोने की भांति चमकता रहा। आप जी उक्त हर संघर्ष में बहादुरी व दृढ़ता का सबूत देते हुए अपने परिवार के लिए हर जुल्म को हर्षित प्रवान करते हुए चढ़दी कला में रहकर प्रत्येक के लिए प्रेरणास्रोत बने। आप जी ने अपने जीवनकाल के दौरान दुख-सुख को एक समान जाना तथा कभी भी अपने मन में निराशा या वैर की भावना पैदा नहीं होने दी। आप जी न केवल बहुत ही कोमल व सहज स्वभाव वाले थे बल्कि सहज, सादगी तथा त्याग की प्रतिमा थे। गुरु महिलों तथा गुरु माताओं के इतिहास में आप जी का अति महत्त्वपूर्ण तथा प्रभावशाली स्थान है।

कवि संतोख सिंघ जी ने गुर प्रताप सूरज ग्रंथ में माता नानकी जी की सिफत सलाह करते हुए लिखा :

स्री गुरु तेग बहादर माता ॥
नाम नानकी जग्ग बक्खयाता
पतिबरता धरमातमा रूपा ॥
रुचरि सुशीला गुणन अनूपा ॥
मधुर भाषणी, दीरघ दरबा ॥
सतिगुरू धिआन पराइण हरसा ॥
प्रिय पूत, मन म्रिदुल कुलीना ॥

*८३६३, गली नं. २, गुरु रामदास नगर, सुलतानविंड रोड़, अमृतसर-१४३००१

सदा क्रिपालू परम अदीना ॥

'सिक्ख पंथ विश्वकोश' के अनुसार ऐसी सौभाग्य शख़्सियत माता नानकी जी का जन्म बाबा बकाला के निवासी भाई हरिचंद जी लंब क्षत्रिय के घर माता हरिदेई की कोख से हुआ। आप जी के जन्म के बारे में कोई सही तिथि उपलब्ध्द्ध नहीं है किंतु अनुमान के आधार पर आप जी का जन्म १५९५ ई के आस-पास का है।

'महान कोश' के अनुसार, "हरिदेई के उदर से हरीचंद लंबा क्षत्रिय बकाले वाले की बेटी जिसका विवाह ८ वैसाख, संवत् १६७० बिक्रमी को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से श्री अमृतसर में हुआ जिससे श्री गुरु तेग बहादर नौवें सतिगुरु जन्मे। माता जी का देहांत संवत् १७३५ में कीरतपुर हुआ।"

घर में धार्मिक वातावरण होने के कारण शांतचित माता नानकी जी बचपन से ही गुरबाणी के अनुसार जीवन जीने वाले थे। आप अमृत वेला उठकर अपने माता-पिता के साथ सिमरन में लीन हो जाते। घर में पिता जी को मिलने आने वाले गुरसिक्खों की बहुत निष्ठा से लंगर-पानी आदि से सेवा करते। एक सुशील स्त्री वाले सारे ही गुण आप जी में मौजूद थे।

कवि भाई संतोख सिंघ श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ में ज़िक्र करते हुए लिखते हैं कि जिस समय दीवान चंदू की पुत्री का रिश्ता श्री गुरु अरजन साहिब द्वारा संगत की विनती पर मोड़ा गया था उस समय हरी चंद की पुत्री नानकी की सगाई श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी से हुई थी। गुरु जी के विवाह की तारीख वैसाख महीने की संक्रांति को नियत करने के बारे शाहे चिट्ठी आ गई।

कितिक दिवस बीते इस भांती। आई बहुर ब्याह की पाती।
हरीचंद की जो सु कुमारी। बैस अलप की सुता बिचारी ॥३४॥
यांते ब्याह प्रिथम नहिं कियो। समो जानि कागदि पठि दयो।
मास विसाख प्रिथम दिन मांही। लिखि भेज्यो श्री गंगा पाही ॥३५॥

श्री गुरु हरिगोबिंद सिंघ जी का माता नानकी जी से जब विवाह का दिन समीप आ गया तो संसारिक रीतियां निभाई गईं।

निकट ब्याहु को दिवस जु आयो। अंतहि पुर श्री गुरू बुलायो।
लौकिक बैदिक रीति अनेक। सकल करी को कहै बिबेक ॥१८॥

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की बारात श्री हरीचंद के गृह पहुंचने पर सारे क्षत्री आगे होकर बारात के सम्मान के लिए आए।

पुरि महिं सदन हुतो जिस थान। हरीचंद जिह भाग महान।
इक थल मिलि खत्री समुदाए। हित सनमान अगाऊ आए ॥

बारात के सम्मान के उपरांत श्री हरीचंद से मिलनी करने के लिए सतिगुरु श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की इच्छा के अनुसार बाबा बुड्ढा जी आगे होकर मिले।

हरीचंद हित मिलनी आयो। बसत्र दरब अपरन को ल्यायो ॥
इत सतिगुर ने रिदे बिचारयो। मिलहिं ब्रिद्ध साहिब निरधारयो ॥२७॥

उपरांत उस समय की रीति-रिवाज़ों को निभाकर श्री हरीचंद जी की पुत्री नानकी जी से श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का विवाह हुआ।

हरीचंद निज तनुजा साथि। अगनि प्रदधन फेरे नाथ।
अपर रीति सभि जेतिक होइ। जथा जोग कहि कीनी सोइ ॥३६॥

विवाह के उपरांत श्री हरीचंद तथा उसकी पत्नी हरिदेई जी ने गुरु साहिब द्वारा मिले सम्मान का धन्यवाद देते हुए नमस्कार किया तथा अपनी पुत्री नानकी जी को सभी रीति-रिवाज़ों को निभाकर गुरु जी के साथ विदा किया।

हरीचंद हरदेई दंपति। कहैं गुरू हम देई जु संपति।
भूगतैं सगरो दान तुमार। नहिं सभ को सभि के दातार ॥४४॥
इक दासी सेवा हित दीनि। इन कहि दुहनि बंदना कीनि।
बिदा करे सगरी बिधि आछे। जाति चली तनुजा को पाछे ॥४५॥

सिक्ख पंथ विश्वकोश के अनुसार "माता नानकी जी का श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से विवाह सन् १६१३ ई (८ वैसाख, १६७० बि.) में हुआ।"

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ के अनुसार जब श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब माता नानकी जी को विवाह कर घर लेकर आए तो माता गंगा जी ने बहुत खुशी मनाई तथा श्री हरिमंदर साहिब माथा टेककर गरीबों में धन वारकर रीति-रिवाज़ पूरे किए। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की पत्नी तथा माता गंगा जी की बहू जिसका नाम नानकी था। बहुत ही सुंदर-स्वरूप वाली तथा भाग्यशाली स्त्री थी। माता नानकी जी की कोख से जहां तेग के धनी, श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने जन्म लिया, वहां आप जी ने खालसा पंथ के पिता सरवंशदानी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दादी बनकर पुत्र-पोते का सुख देखते हुए दीर्घ आयु व्यतीत की।

श्री गंगा आगवन लखि सहित सनूखा नंद।
सभि बरात जुति प्रथम में हरिमंदिर सुख कंद ॥१॥
हाथ बंदि बंदन करि आछे ॥ दई प्रदछन फिर सुख बांछे।
ले पुन गई सदन को गंगा। करि कुल हीति जथोचित संगा ॥२॥ . .
क्यों न कामना सिख सो लहैं। जिन के रिदे सतिगुरू रहैं।
जल को वारि पानि करि गंगा। मंदर के अंदर ले संगा ॥५॥
नुखा दूसरी जाइ बिठाई। नारि बिलोकति हैं समुदाई।
नाम नानकी सुंदर रूप। जो सभि ते बडिभाग अनूप ॥६॥
तेग बहादर जिन हुइं नंदन। पौत्र बली बिदतहि जग बंदन।
जो निज दासनि दे छिति राज। करहि बिनाशनि तुरक समाज ॥७॥
पिखहि पौत्र जिह बैस बडेरी। यांते बडभगति सभि हेरी॥
तेहण भलयनि कुल की दारा। करहिं सराहन 'रूप उदारा' ॥८॥

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से विवाह होने के पश्चात माता नानकी जी की सामाजिक जिम्मेवारियां बढ़ गईं। गुरु महिल बनने के बाद माता नानकी जी ने अपने गंभीर तथा सहज-स्वभाव से माता गंगा जी, माता दमोदरी जी तथा माता मरवाही जी से गहरा प्यार भरा सम्बंध स्थापित करके अपने घर-परिवार तथा सिक्ख संगत में सम्मानयोग्य स्थान हासिल किया।

माता नानकी जी अपने गुरु-पति श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी की अपने हाथों बहुत ही श्रद्धा-भावना से सेवा करते, जिसको देखकर माता गंगा जी बहुत ही खुश होकर आशीषें देते।

सेवा करै नानकी कर सों। पति महिं प्रीती धारति उर सों।
गंगा हेरि हेरि प्रिय नंदन। करहि आनि जग

जिन को बंदन ॥२॥

तवारीख गुरु खालसा कृत ज्ञानी ज्ञान सिंघ के अनुसार "श्री नानकी जी से कार्तिक पूर्णिमा संवत, १६७६ बिक्रमी को अट्टल राय जी तथा २१ मघर सुदी २ संवत्, १६७८ बिक्रमी को श्री गुरु तेग बहादर जी प्रकट हुए।"

श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ के अनुसार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के घर माता नानकी जी की कोख से पुत्र का जन्म हुआ। माता गंगा जी ने परिवार में बढोतरी सुनकर अपने पोते के जन्म की बहुत खुशियां मनाईं। बाबा बुड्ढा जी से परामर्श करके बालक का नाम 'अट्टल राय' रखा।

जनम नानकी ते तबि लीनि। सुनि सुत भयो सभिनि मुद कीनि गंगा करति मंगलाचार। रिदे मुदति ब्रिधति परिवार ॥३४॥ . .

ब्रिध संमति हुइ नाम बिचारा। 'अटल राइ' तबि गुरू उचारा ॥

'अटल समाधि' करति इह रहयो। यांते उर बिचार करि करयो ॥३७॥

उपरांत श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के घर माता नानकी जी की कोख से वैसाख के माह दूसरे बालक ने जन्म लिया, जिससे चारों ओर आनंद छा गया। उस समय श्री हरिगोबिंद साहिब के मन में विचार आया कि इस बालक के घर बहुत बहादुर योद्धा पैदा होगा, जो जंग में बहादुरी भरे कारनामे कर, तुर्कों की जड़ें उखाड़ेगा। गुरु साहिब ने उच्चारण किया कि यह पुत्र तेग के जौहर दिखाएगा, इसलिए इसका नाम 'तेग बहादर' रखते हैं।

गए डरोली को सुख बासे। सिमरति रहति गुरू सुख रासे।

केतिक दिन बिताए सो हर मैं। भयो प्रसूत नानकी समें ॥३४॥

मास विसाख हुतो अभिराम। रही जामनी सवा सु जाम।

सोलह सै उनहत्तरा साल। बदी पंचमी थिति तिसि काल ॥३५॥

सेब्यमान धाइनि ते होइ। दासी दास हरख सभि कोइ।

बालक जनम्यो भयो अनंद। रखिबे हित जग बीरज हिंद ॥३६॥ . .

श्री सतिगुरु तबि रिदे बिचारा।- इस के उपजहि बली उदारा।

रण बहादरी करहि बडेरी। इह निरभै जर तुरक उखेरी ॥४२॥

सुत बहादरी तेग करे है। शत्र ब्रिंद को जंग खपै है।

यांते 'तेग बहादर' नाम - । धरयो बिचार गुरु अभिराम ॥४३॥

संवत १६७९ वैसाख वदी पांचवी को माता नानकी जी की कोख से श्री अमृतसर में बालक तेग मल्ल (श्री गुरु तेग बहादर साहिब) का जन्म हुआ तो श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब, भाई बिधी चंद को साथ लेकर बालक देखने आए। गुर बिलास पातशाही छेवीं के अनुसार :

तब गुरू सिस को बंदना कीनी अति हरि लाइ।

बिधीआ कहे कस बिनति की कहो मोहि सत भाइ।

तब गुर कहि इह गुर भवे पांच सुतन मोह जान।

दीन रछ संकट हरै सदा यही पहिचान।

श्री अमृतसर में जिस स्थान पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब का प्रकाश हुआ, वह स्थान आजकल 'गुरुद्वारा गुरु के महिल' के नाम से प्रसिद्ध है। यह गुरुद्वारा साहिब श्री अकाल तख़्त साहिब के पास 'गुरु बाज़ार' में से लांघकर आता है। असल में ये एक छोटी सी सरकंडों (कानों) की छपरी श्री गुरु रामदास जी ने १५७३ ई में खुद बनाई थी, जिसको बाद में श्री गुरु

अरजन देव जी तथा श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने बड़ी तथा खूबसूरत इमारत में तबदील कर दिया। इसके एक बड़े हाल में 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब' का प्रकाश किया गया है। यहां श्री गुरु तेग बहादर साहिब का प्रकाश दिवस विशेष रूप तथा वार्षिक जोड़मेले के रूप में मनाया जाता है। इसी ऐतिहासिक स्थान पर ही माता नानकी जी विवाह कर आए थे तथा यहां ही श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के पांच सुपुत्र तथा एक सुपुत्री का जन्म भी हुआ था। इस स्थान पर नौं-मंज़िला इमारत का निर्माण कर दिया गया है। गुरुद्वारा साहिब के गुंबद पर सोने के कलश दूर से ही नज़र आते हैं।

माता नानकी जी ने श्री गुरु तेग बहादर जी की शख़्सियत को गढ़ने के लिए जहां बाल्यवस्था से ही विशेष ध्यान दिया, वहां आप जी की शादी योग्य आयु होने पर अपनी बहु का चुनाव भी बहुत ही सोच-समझकर किया। स्रोतों के अनुसार श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के बेटे सूरज मल्ल के विवाह के समय भाई नंद लाल जी व बीबी बिशन कौर जी की अपनी बेटी गुजरी (माता गुजरी) जी का रिश्ता 'तेग बहादर' (श्री गुरु तेग बहादर साहिब) जी से करने के लिए माता गंगा जी तथा माता नानकी जी को प्रेमपूर्वक निवेदन किया था, जिसको गुरु परिवार ने खुशी-खुशी प्रवान कर लिया था। इस तरह श्री गुरु तेग बहादर साहिब का विवाह माता गुजरी जी, जो करतारपुर के रहने वाले भाई लाल चंद तथा माता बिशन कौर की होनहार सुपुत्री थी, साथ ४ फरवरी १६३२ को संपन्न हुआ।

माता नानकी जी बचपन से ही गुरबाणी प्रेमी थे। आप जी के सुपुत्र श्री गुरु तेग बहादर जी की शख़्सियत पर भी आप जी के गुणों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब को आप जी के साथ बहुत ही प्रेम था, इसीलिए पिता श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के ज्योति-जोत समाने के उपरांत उनके हुक्मों की पालना करते हुए जहां अपनी माता जी के साथ परिवार सहित बकाले में रहे, वहीं माता नानकी जी को अंतिम समय तक अपने साथ ही रखा। दूसरी तरफ यह सम्मान माता नानकी जी की ही कोख को नसीब हुआ, जिससे धार्मिक तथा नसली भेदभाव को खत्म करने के लिए आवाज़ बुलंद कर अपनी शहादत देने वाले श्री गुरु तेग बहादर साहिब का जन्म हुआ। माता नानकी जी के साथ सुपुत्र श्री गुरु तेग बहादर साहिब का प्रेम उनके द्वारा रचित बाणी में भी प्रकट रूप में देखा जा सकता है। गुरु जी ने अपनी बाणी में कई पदे माता जी को सम्बोधन करके उच्चारण किए हैं :

माई मन मेरे बस नाहि ॥
निसि बासरु बिखिअन कउ धावत
किहि बिधि रोकउ ताहि ॥
माई मै धनु पाइउ हरिनामु।
मनु मेरो धावन ते छुटकिउ
करि बैठो बिसराम ॥

श्री गुरु तेग बहादर साहिब के घर माता गुजरी जी की कोख से आपके पोते श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का पटना साहिब में प्रकाश होना एक ऐसी इंकलाबी घटना है, जिसने आने वाले समय में न केवल सिक्ख इतिहास बल्कि हिंदोस्तान के इतिहास में ज़िक्रयोग्य परिवर्तन ला दिया। इस तरह सिक्ख इतिहास की रचना में आप जी की भूमिका बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

माता नानकी जी ने माता दमोदरी जी की सुपुत्री बीबी वीरो जी को लाड़-प्यार देने में कोई कसर न छोड़ी बल्कि उसके विवाह के सारे कार्य अपने हाथों से निभाए। इस तरह करते हुए माता नानकी जी ने माता मरवाही जी के

पुत्रों के प्रति भी सभी फर्ज़ प्यार से निभाए। इस तरह करते हुए माता नानकी जी ने उदार वृत्ति का प्रकटावा करते हुए सिदक व प्यार से सारे परिवार को हमेशा एकमुठ रखा।

उस वक्त के हालातों के अनुसार माता नानकी जी पर जहां घर-परिवार की जिम्मेवारियां थीं वहीं निरंतर जंगों/युद्धों का वातावरण होने के कारण राजनीतिक संकट भी ज़ोरों पर था किंतु माता नानकी जी ने निष्काम वफ़ादारी तथा गुरु साहिब के प्रति आज्ञाकारी होने का सबूत देते हुए सिक्ख धर्म के प्रचार व प्रसार में यथायोग्य अगुवाही कर ज़िक्रयोग्य हिस्सा डाला। आप जी ने अपने पुत्र बाबा अट्टल राय जी के छोटी उम्र में ही अकाल चलना कर जाने को अकाल पुरख का भाणा मानकर धैर्य रखा।

संत-स्वभाव श्री गुरु तेग बहादर साहिब जो हर समय भक्ति में ही लीन रहते थे। दुनियादारी से किसी तरह का कोई भी वास्ता न रखते। उनका ऐसा स्वभाव देखकर एक दिन माता नानकी जी ने गुरु साहिब के आगे विनती की तवारीख गुरु खालसा के अनुसार "महाराज! मेरा पुत्र तो बहुत भोला, सादे विचारों वाला संत लोग है। दुनिया का कार-व्यवहार या मसंदों से मेल-मिलाप रखने का प्रकार तनिक भी नहीं जानता। फिर इसका निर्वाह किस भांति होगा? गुरु जी बोले" आपको भरोसा नहीं। ईश्वर सबका निर्वाह करवाता है। तुम इसके निर्वाह का क्या फ़िक्र करती हो? इसके पीछे अनेकों का निर्वाह होगा। इसके पुत्र का बहुत भारी प्रताप तुम देखोगी। भोले लोगों को ही भाग्य लगता है।

किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥
जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥१॥
रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥
चतुराई न चतुरभजु पाईऐ ॥ रहाउ ॥
परहरु लोभु अरु लोकाचारु ॥
परहरु कामु क्रोधु अहंकारु ॥२॥
करम करत बधे अहंमेव ॥
मिलि पाथर की करही सेव ॥३॥
कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥
भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥४॥६॥ (पन्ना ३२४)

गुरु जी ने माता नानकी जी को एक रुमाल तथा कटार देकर वचन किया, "एह गुरिआई दा पाइता है, रक्ख छड्ड। जद एस नूं गद्दी मिलू, तदों देईं।" यह सुनकर माता नानकी जी बहुत प्रसन्न हुए।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा बाबा गुरदित्ता जी के पुत्र श्री गुरु हरिराय साहिब को गुरुतागद्दी देने के समय भी माता नानकी जी बड़प्पन दिखाते हुए गुरु-पति का हुक्म मानकर श्री गुरु तेग बहादर साहिब तथा माता गुजरी जी सहित बकाला जाकर रहने लगे।

भाई मिहरा जी ने आप जी को बहुत ही मान-सत्कार दिया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब की भक्ति भावना का ख़्याल रखते हुए उनके लिए एक विलक्षण एवं सुंदर रिहायश बनवाकर दी। माता नानकी जी की छत्र-छाया तले रहते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने आध्यात्मिक उच्चता प्राप्त की। माता नानकी जी आप जी की भक्ति साधना से बहुत प्रसंन थे। जब गुरु साहिब नाम-सिमरन में लीन रहते जहां माता गुजरी जी आप जी की हर ज़रूरत को प्राथमिकता के आधार पर पूरी करते, वहीं माता नानकी जी गुरु जी के दर्शनों के लिए बाहर से आने वाली संगत से विचार-चर्चा कर उनकी आध्यात्मिक जिज्ञासा को शांत करते।

आप जी की सिमरन, बंदगी, माता जी की अशीषें तथा आप जी की पत्नी माता गुजरी जी की सेवा-भावना ने आप जी की शख़्सियत में ऐसे रंग भरे कि त्याग, ज्ञान, निडरता, सहज, संतोष आदि गुण आप जी के जीवन के पहचान

चिन्न बन गए। यही चिन्न सभी गुरु साहिबान में प्रबल रूप पर दिखाई देते आ रहे हैं।

दिल्ली में गुरुद्वारा बाला साहिब के स्थान पर आठवें पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने परलोक गमन करते समय संगत को अगले गुरु सम्बंधी आखिरी वचन करते हुए शब्द 'बाबा बकाले' बोले। यह वचन ज़ाहिर करते थे कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब रिश्ते में से श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के 'बाबा' लगते थे, जो कि उस वक्त बकाले रह रहे थे। उपरांत माता सुलक्खणी जी दरबारी सिक्खों-- दीवान दरगाह मल, भाई दिआला जी, भाई जेठा जी, बाबा गुरदित्ता जी, बाबा बुड्ढा जी को साथ लेकर माता नानकी जी के पास बकाला आए। यहां बकाले में ही श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब द्वारा भाई मिहरा जी से किए वचनों के अनुसार श्री गुरु तेग बहादर साहिब को गुरिआई का तिलक लगा। उस वक्त तक यहां पाखंडी लोग गद्दियां लगाकर बैठ चुके थे परंतु अकाल पुरख की रज़ा के अनुसार भाई मक्खन शाह लुबाणे ने इन मंज़ीदारों में से सच्चे गुरु को ढूंढ संगत के समक्ष उजागर किया।

गुरगद्दी संभालने के उपरांत श्री गुरु तेग बहादर साहिब बकाला से संगत को दर्शन देते हुए श्री अमृतसर, तरनतारन, खडूर साहिब, गोइंदवाल साहिब तथा करतारपुर होते हुए कीरतपुर जा विराजमान हुए।

पिआरा सिंघ पदम रचित 'गुरू कीआं साखीआं' के अनुसार "एक दिवस बकाला नगरी में गुरू जी का दरबार लगा हूआ था। माता सुलक्खनी का भेजा- एक सिक्ख मातमी सुनाउनी लै के आइआ। इसे हाथ बांध बेनती की, जी गरीब निवाज़! माता बस्सी जी संमत सतरां सै इक्कीस कातक वदी चउथ वीरवार के दिहुं डेढ पहिर रैन गई परलोक पिआना कर गए हन। उन की सतारवी का दिवस कारतक सुदी पंचमी शनीवार का है, माता जी ने हमें भेजा है। बचन पाइ सतिगुरां दीवान दरघा मल्ल आदि मुखी सिक्खां के गैल बकाला नगरी से रसते का पंध मुकाइ कोट गुरू हरि राइ (कीरतपुर साहिब) में आइ गए।. . . गुरू जी बकाला गाम से चल सनें सनें मग्घर मास की पूरनमां के दिहुं गुरू रामदास जी की नगरी चक्क में आइ पहुंचे।. . . अगले दिवस एकम के दिहुं सुधा सरोवर से चल के वल्ले वेरके आइ गए। यहां से आगे घूकेआली, निझरआला, तरनतारन, खडूर साहिब होते पोख मास की अमावस के दिहुं श्री बाउली साहिब का आइ दरशन कीआ।. . . भाई रघुपत राइ निझर खेमकरनीआ अपने बेटे मूलचंद के साथ अमावस के मेले ते आइआ होइआ सी। गुरू जी आगे बिनै करके आपनी नगरी खेमकरन में लै आइआ।. . . गुरू तेग बहादर जी खेमकरन नगरी से विदिआ होइ माझे देस में दोइ महीने रटन कीआ।. . . सतिगुरां नदी बिआसा सतिलुज पार करके-- ज़ीरा, मोगा आदि नगरों थार्णी विचरदे हुए भाई सांईदास के घर डरोली में आइ निवास कीआ। कुझ दिवस डरोली नगरी में ठहिर के जहां सनें सनें रासते में कई एक नगरां में सतिनाम का चक्कर चलाते हुए लक्खी जंगल देस के प्रसिद्ध नगर साबो की तलवंडी जाइ बिसराम पाइआ। सतिगुरां चड़दे साल सतरां सै बाईस को बैसाखी का तिउहार इसी गाउं में मनाइआ।. . . गुरु जी ने पंदरां दिहुं साबो की तलवंडी रहि के अनेकां जीआं की कलिआन की।. . . यहां से विदिआ होइ सनें सनें अनेकां नगरां थीं विचरदे हुए बांगर देस के प्रसिद्ध नगर धमधान में आइ गए।. . . धमधान नगरी से चले, सनें-सनें कोट गुरू हरि राइ जी में बिराजे। श्री गुरु हरिक्रिशन जी की माता श्री सुलक्खनी जी ने सतिगुरां के आए का बड़ा आउ भगत कीआ। संमत सतरां सै बाईस

बैसाख मास की तीस को राजा दीपचंद कहिलूरी काल-वस होआ। राणी चंपा ने अहिलकार भेज कोट गुरू हरि राइ से सतारमी ते गुरू जी को बुलाइ भेजा। बेनती की महाराजा! सतारमी ते आइ के आप आसां को निवाजीए।. . . मसंदां अरदास की, जी सच्चे पातशाह! जेठ मास की पंदरस को राजा जी का बिलासपुर नगरी में सतारमी का दिहुं है। तुसां को पहिले जाना चाहिए, बचन पाइ सतिगुरां बिलासपुर जाने की तिआरी की। गैलों दीवान दरघा मल्ल, माता नानकी जी, माता सुलक्खनी जी, माता हरी जी, बीबी रूप कुइर, दीपचंद ते नंद चंद आए। राणी चंपा गुरु जी के आए का बड़ा आउ भगत कीआ। रहिने के लीए इकांत थाइ दई। तीन दिवस सतिगुरू जी को बिलासपुर आइआं हो गिआ था। राणी चंपा सतारमी ते फारग होइ माता नानकी जी पास आई। इसे माता जी के पाउं पकड़ बेनती की- जी असां सुना है कि गुरु जी कोट गुरू हरि राइ जी का निवास छोर बांगर देस जाइ रहे हैं, ऐसा ना कीजीए, जे सतिगुरु जी कोट गुरू हरि राइ जी में नहीं रहिना चाहते तां मैं नया गाम बसाने के लिए होर भुइं अरदास कराने के लिए तिआर हां। माता नानकी जी ने राणी चंपा की अधीनगी देखकर कहा, अच्छा राणी! असीं नहीं जाइंगे। राणी चंपा ने गाम बसाने के लीए लोदीपुर, मीआं पुर ते सहोटे गामां की भोइं अरदास कराई। गुरू जी बिलासपुर नगरी से विदिआ होए कोट गुरू हरि राइ में आइ गए। दीवान दरघा मल्ल से बचन होआ-- कि इन तीन गामों में से काई अच्छी जगह देखो जहां नया गाउं बसाइआ जाए।

पिआरा सिंघ पदम रचित 'गुरू कीआं साखीआं' के अनुसार "संमत सतरां सै बाईस असाढ मास की इकीस के दिहुं बाबा गुरदिता जी रंधावा के हाथ से सहोटे गाउं के रकघना में माखोआल के थेह ते मोड़ी गाडी। इस नएं गाउं का नाम 'चक्क नानकी' राखा। . . ."

कुछ समय यहां ठहराव कर नगर निर्माण की जिम्मेदारी मुखी सिक्खों को देकर संगत की मांग पर श्री गुरु तेग बहादर साहिब परिवार सहित माता नानकी जी, महिल माता गुजरी जी तथा मामा किरपाल चंद आदि को साथ लेकर हिंदोस्तान की लाचार, दबी-कुचली जनता में आत्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक जागृति पैदा करने के लिए प्रचार यात्राएं करने चल पड़े। रास्ते में पटना साहिब में परिवार को छोड़कर आगे बंगाल, ढाका होते हुए आसाम पहुंच गए।

पटना में ही २२ दिसंबर, १६६६ ई को माता नानकी जी के पोते तथा गुरु तेग बहादर साहिब के सुपुत्र बाल गोबिंद राय ने माता गुजरी की कोख से जन्म लिया। बाल गोबिंद राय के जन्म से पहले पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब तथा माता गुजरी ने बहुत ज्यादा प्रभु-भक्ति की थी, जिसका ज़िक्र श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की अपनी रचना 'बचित्र नाटक' में मिलता है। जिस समय बाल गोबिंद राय का जन्म हुआ, उस समय पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब असाम के दौरे पर गए हुए थे। कई वर्षों बाद पोते का मुख देखने के लिए तरस रही दादी ने पोते के मुख पर नूरानी जलवा देख अकाल पुरख का शुक्राना अदा किया। माता नानकी जी के लिए यह समय बहुत ही मान वाला था जब उसके पोते के नूरानी चेहरे के दर्शन करने के लिए दूर-दूर से पीर-फकीर पहुंच रहे थे। पटना साहिब में ही बाल गोबिंद राय का पालन दादी माता नानकी जी की छत्र-छाया तले होने लगा। बाल गोबिंद राय ने अपने बचपन के लगभग छः वर्ष यहां ही दादी माता नानकी जी तथा माता गुजरी जी के साथ गुज़ारे। अब तक औरंगज़ेब

का कहर हिंदोस्तान पर बहुत बढ़ चुका था वो लाचार दुनिया का जबरन धर्म परिवर्तन करवाने लग गया। इस समय श्री गुरु तेग बहादर साहिब आसाम के राजा की विनती पर उसके गृह में ठहरे हुए थे। जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब तक ये ख़बरें पहुंची तो उन्होंने असाम से वापिस 'चक्क नानकी' आने की तैयारी की। श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी ने दीवान मती दास जी को आदेश दिया कि वह पटने से माता नानकी जी, माता गुजरी जी तथा बाल गोबिंद राय को उनके ननिहाल लखनौर में ले आए। आप श्री गुरु साहिब आसाम तथा दिल्ली से होते हुए लखनौर पहुंचे। जहां साहिबज़ादे बाल गोबिंद राय ने गुरु-पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पहली बार दर्शन किए।

पिआरा सिंघ पदम रचित 'गुरू कीआं साखीआं' के अनुसार "गुरू जी राजा जी से विदिआ होइ वापिस होइ वापिस मदर देस की तरफ आए। रासते से दीवान मती दास को भेज पटना से सारे परिवार को बुलाइ लीआ। बचन हुआ, क्रिपाल चंद सुभिक्खी से तुसां साहिबज़ादा गोबिंद दास को गैल सभ को साथ लै के सीधे लखनौर में जाना है। असां दिल्ली में रसीना नगर राणी पुषपा देवी के पास जाना है। वहां कुझ दिवस ठहिरेंगे। असां दिहली से तुसां पीछे लखनौर आइ रहे हां, इतनां बचन कहि के इन्है रवाना कीआ। . . . गुरु जी परवार को लखनौर की तरफ रवाना करके आप दीवान दरघा मल्ल आदि मुखी सिक्खां समेत दिहली--- भाई कलिआने की धरमसाला में आइ गए।. . . राणी ने सहित निमरता बेनती कर के सतिगुरां को बंगला राजा जै सिंघ में लै आई। . . . गुरू जी कुझ दिवस राणी के ग्रहि में रहि के मदर देस जाने की तिआरी की। दिहली से चल के सनें सनें रोहतक, कुरखेतर, पहोवा आदि थावां थीं होते हूए लखनौर नगरी आपने ससुराल घर में बिराजे। भाई मेहर चंद सुभिक्खी ने गुरू जी के आए का बडा आउ भगत कीआ। साहिबज़ादा श्री गोबिंद दास माता जी के गैल इन्है पिता गुरू जी का दरशन पाइआ।"

कुछ समय लखनौर में रुककर श्री गुरु तेग बहादर साहिब, माता नानकी जी तथा परिवार सहित बाबा बकाला की तरफ चल दिए। रास्ते में बहन वीरो को भी मिले तथा अन्य नगरों की संगत को दर्शन देकर निहाल करते हुए कुछ दिन करतारपुर में रुकने के उपरांत बाबा बकाला पहुंचे। यहां गुरु जी लगभग डेढ़ वर्ष ठहरने के उपरांत 'चक्क नानकी' की तरफ चल पड़े।

पिआरा सिंघ पदम रचित 'गुरू कीआं साखीआं' के अनुसार "एक दिवस माता नानकी जी अपने धिआन में मगन बैठे थे, साहिबज़ादा दादी जी पास आइ बैठा हाथ बांध बोला, अंमा जी! आप के नाउं का गाउं कउन सा है, हमें कब दिखाएंगे। पिता जी ने एक दिहुं मेरे पूछने से बतलाइआ सी कि 'चक्क नानकी' परबतां विखे है, अजे ठहिर के जावांगे। पास बैठे दीवान दरघा मल्ल ने कहा, माता जी साहिबज़ादा सही कहि रहा है। इसे चाउ है पिता जी के बाधे हूए गाउं देखने का। माता जी ने कहा, दीवान जी, बिलासपुर से राणी चंपा का भेजा अहिलकार आइआ था, इसी बरख चेत मास में जाने का बीचार है। संमत सतरां सै उनत्तीस के अरंभ में 'चक्क नानकी' जाने की तिआरी की।. . . राणी चंपा ने बिलासपुर से एक हलकारे को चक्क नानकी भेजा, महाराज। भड़ा समां होइ गिआ है दरशन दीजीए। सतिगुरां इस की बेनती सवीकार करके सहित परवार बिलासपुर में आइ गए।. . . साहिबज़ादे श्री गोबिंद दास जी के दरशन पाइ राणी ने सिर वारनां कीआ।

तीन दिवस सतिगुरू जी रागी के ग्रहि में निवास करके चौथे दिवस विदाइगी मांगी। राणी ने सुंदर वसतर भूखन साहिबज़ादे के लिए अरपन कीए। दोहां मातावां ने राणी को आशीरवाद दई। सतिगुरां बिलासपुर नगरी से चल के सनें सनें 'चक्क नानकी' में आइ बिसराम पाइआ"

बाद गोबिंद राय के चक्क नानकी पहुंचने पर संगत ने बहुत खुशियां मनाईं, दीपमाला की। चारों तरफ खुशी, आनंद का वातावरण सृजा गया। माता नानकी जी को चारों तरफ से बधाई मिल रही थीं। चक्क नानकी में बालक गोबिंद राय को भांति-भांति के शस्त्र व शास्त्र विद्या देने का प्रबंध किया गया। माता नानकी जी ने अब तक परोपकार, त्याग, निर्भयता, उडोलता जैसे जो गुण अपने पुत्र श्री गुरु तेग बहादर जी में उज्ज्वल किए थे, वो सारे गुण पोते बाल गोबिंद राय ने दादी जी से दृढ़ करने शुरू किए।

पिआरा सिंघ पदम रचित 'गुरू कीआं साखीआं' "संमत संतरा सै तीस जेठ मास की संकरांत के दिहुं लवपुर की संगत में हरिजस राइ सुभिक्खी आपणी इसतरी ते बेटी जीतां को गैल लै के दरशन पानें आइआ। इन के आने की ख़बर भाई देवी दास छिब्बर ने महलां में दई। माता जी ने इनै बुलाइ इन का आउ भगत कीआ, खैरीअत पूछी। गुरु जी ने श्री गुरु गोबिंद दास जी के विवाह की तिआरी की, माता नानकी ने शगन मनाए। जेठ मास की पंदरस को चक्क नानकी में एक पहाड़ी की ठेरी तथा श्री गुरु गोबिंद दास जी का बेटी जीतां के साथ बिवाह कीआ गिआ। एस ठेरी का नाम यहां श्री गोबिंद दास जी का बिवाह हुआ था, 'गुरू का लाहौर, रखा।"

आरंभ से ही दयालु व परोपकारी होने के कारण नौ वर्ष की आयु में ही जब बाल गोबिंद राय के सामने पंडित किरपा राम की अगुआई में कश्मीर के ब्राह्मण-हिंदू श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शरण में आए तो बाल गोबिंद राय ने गुरु-पिता को तिलक जंञू की रक्षा हेतु बलिदान देकर धर्म हित साका करने के लिए सहज ही कह दिया। माता नानकी जी के लिए एक बार फिर परीक्षा की घड़ी आई। जिस पुत्र को उसने जन्म दिया, उसकी शख़्सियत निर्मित करने के लिए हर घड़ी, हर पल उसके साथ रही, जिस गुरु से अपने पोते के जन्म की खुशी मनाई, आज उनकी शहीदी को देखना पड़ रहा था किंतु माता नानकी जी ने हिम्मत नहीं हारी व अडोल रहे।

पिआरा सिंघ पदम रचित 'गुरू कीआं साखीआं' के अनुसार "संमत सतरां सै बतीस सावन प्रविशटे अट्ठे के दिहुं गुरू जी का दरबार होआ, दीवान दरघा मल्ल से बचन कीआ, तिआरी करीए, हमें गोबिंद दास को गुरिआई देनी है, दीवान जी! तुसीं गुरिआई की समग्गरी लै आईए। सतिगुरां साहिबज़ादे को शसतर बसतर सजाइ आपने आसन ते लिआइ बैठाइआ। दीवान दरघा मल्ल ने गुरिआई की समग्गरी लिआइ साहिबज़ादे के आगे राख के मत्था टेका। बाबे बुढे के श्री राम कुइर ने नन्नी अवसथा में श्री गुरु गोबिंद दास जी के भाल में चंदन का टीका कीआ। बचन होआ, भाई सिक्खो! आगे से असां की थांइ श्री गोबिंद दास जी को गुरू जाननां, जो जानैगा तिस की घाल थांइ पएगी। असां हुण इथे आइ फरिआदी कशमीरी ब्राहमणों की खातर दिहली जाएंगे।"

माता नानकी जी ने पुत्र को दिल्ली शहादत देने के लिए अपने हाथों से तोरा। एक बार फिर श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने मामा किरपाल चंद जी को परिवार-माता नानकी जी, महिल माता गुजरी जी तथा बाल गोबिंद राय

की जिम्मेवारी सौंपी तथा खुद मुखी पांच सिक्खों सहित दिल्ली को चल दिए।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब को दिल्ली में १६७५ ई में औरंगजेब के हुक्म से शहीद कर दिया गया। पुरानी दिल्ली के चांदनी चौक में जहां गुरु जी को शहीद किया गया था, वहां गुरुद्वारा सीस गंज साहिब सुशोभित है। गुरुद्वारा साहिब में गुरु साहिब जी पावन स्पर्श प्राप्त वृक्ष का तना एवं कुआं आज भी सुरक्षित रखा गया है।

गुरु साहिब के धड़ का अंतिम संस्कार गुरु-घर का श्रद्धालु सिक्ख लक्खी शाह बनजारे ने अपने घर को आग लगाकर किया। इस जगह पर गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब सुशोभित है। जो भारतीय पार्लियामेंट हाऊस के पास गुरुद्वारान सीस गंज साहिब से लगभग ९ मील की दूरी पर स्थित है। गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी करती है।

गुरु-घर का श्रद्धालु सिक्ख भाई जैता जी बड़ी दिलेरी से 'हिंद की चादर' श्री गुरु तेग बहादर साहिब का पावन शीश लेकर श्री अनंदपुर साहिब पहुंचे। जहां माता नानकी जी ने कोख से जन्मे पुत्र श्री गुरु तेग बहादर साहिब के पावन शीश को बड़े सब्र-संतोष से नमस्कार कर अपनी झोली में डलवाया। इसी समय भाई जैता जी को बाल गोबिंद राय जी ने अपने गले से लगाकर 'रंघरेटा गुरु का बेटा' का खिताब दिया।

अब माता नानकी जी ज्यादा समय अकाल पुरख की बंदगी में व्यतीत करने लगे। इसके अलावा जहां अपने पोते बाल गोबिंद राय के खेलों को देखकर आनंदित होते, वहीं गुरु-घर के दर्शनों को आने वाली संगत से गुरमति विचारें कर आध्यात्मिक सुख भी हासिल करते।

पुत्र की शहादत के बाद लगभग तीन वर्ष जीवित रहने के उपरांत माता नानकी जी संमत् १७३५ में कीरतपुर साहिब अकाल चलाना कर गए। यहां ही उनके गुरु-पति श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ज्योति-जोत समाए थे। माता जी का अंतिम संस्कार उनकी इच्छा के अनुसार गुरु-पति श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के अंतिम संस्कार वाले स्थान पर किया गया। यहां आजकल गुरुद्वारा पतालपुरी साहिब सुशोभित है। माता जी अंतिम सांसों तक गुरु-घर के लिए प्रेरणास्रोत रहे।

डॉ. रतन सिंघ जग्गी के 'सिक्ख पंथ विशव कोश' के अनुसार "माता नानकी जी ने सन् १६७८ ई (सं. १७३५ ब्रि.) में कीरतपुर में प्राण त्याग दिए। आप जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ द्वारा चलाए जा रहे जन मुक्ति आंदोलन का मूल रूप देखा और हल्लाशेरी दी। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के ज्योति-जोत समाने के उपरांत श्री गुरु हरिराय साहिब तथा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब गुरगद्दी पर विराजमान हुए। जो अपने अल्प गुरु-काल के समय राजसी समस्याओं का हल ढूंढने के लिए माता नानकी जी से अगुआई लेते रहे। उपरांत श्री गुरु तेग बहादर साहिब के गुरगद्दी पर विराजमान होने, हिंदू धर्म की रक्षा के लिए शहीद होने में माता नानकी जी के ज़िक्रयोग्य योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता। शायद इसी कारण गुरगद्दी पर विराजमान होने के उपरांत माता नानकी जी हमेशा श्री गुरु तेग बहादर साहिब के अंग-संग रहे। इस प्रकार हम देखते हैं कि इतिहास गवाह है कि सिक्ख धर्म व इतिहास के निर्माण में जो अहम योगदान माता नानकी जी का है, वह अन्य किसी के हिस्से नहीं आता। १७वीं शताबदी के सिक्ख इतिहास में माता नानकी जी न केवल एक प्रेरणास्रोत के रूप में बल्कि एक केंद्रीय-शख़्सियत के रूप में विचरण करते महसूस होते हैं।



भक्त कबीर जी की बाणी में आध्यात्मिक चेतना

*-डॉ. जगजीत कौर**

चिरकाल से मनुष्य सत्य की खोज में संलग्न रहा है। उसकी समूची आत्म-चेतना आत्म-तत्त्व, आत्म-ज्ञान और ब्रह्म-तत्त्व की खोज में लगी रही है, जो समय-समय पर विभिन्न चिंतन-धाराओं को जन्म देती रही है। इन चिंतन-धाराओं को गुरु साहिबान ने इस रूप में भी बताया है-- *"छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥"* लेकिन चिंतन-धारा तो वही एकमात्र श्रेष्ठ है जिसके माध्यम से उस एकमात्र परम सत्ता परमात्मा के स्वरूप को जान पाएं, उसकी परम शक्ति का गुणानुवाद कर सकें प्रशस्ति गायन कर सकें-- *"बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥ सो घरु राखु वडाई तोइ ॥"* स्पष्ट है कि पूर्व प्रचलित चिंतन-धाराएं सत्य की आंशिक व्याख्या थीं, पूर्ण सत्य से मानव का परिचय करा पाने में समर्थ नहीं थीं। गुरमति ऐसे अध्यात्म, ऐसे आत्मिक ज्ञान की व्याख्या करता है जो जिज्ञासु को अनुभूति के लोक में पहुंचाकर साधना का ऐसा मार्ग प्रशस्त कर सके, जहां वह दिव्य लोक में पहुंच उस परम जोति की निकटता अनुभव करे; प्रेम-प्यार की तीव्र अनुभूति उसे शांति, सुकून, परम विश्राम की स्थिति तक ले जाये; *"भगत जना कै मनि बिस्राम"* की अवस्था तक पहुंचा दे; वह *"सहज गोबिंद गुन नाम ॥"* करता हुआ अपरंपार, अगम्य, अगाध पारब्रह्म के चरणों में लीन हो सके।

गुरमति का अध्यात्म प्रेम विगलित जिज्ञासु की उस परम शक्ति को जानने की लालसा है, जानकर उसे पाने की उत्कंठा है, जिससे सहज मार्ग पर चलते, उस एकमात्र परम शक्ति का नाम आराधन करते, गुणानुवाद करते, सहज में वह आत्मसात हो सके। इसीलिए आज के इस तनावपूर्ण युग में गुरबाणी लोकप्रियता की चरम स्थिति को छू रही है। इसमें विश्व जनीन सामर्थ्य है तपते, बिलखते प्राणी के मन पर शीतल, शांत जल-बिंदुओं की बौछार करने की। भक्त कबीर जी की बाणी का जितना अंश श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित है उसमें भी गुरु साहिबान के विचारों के अनुकूल ही आध्यात्मिक चेतना निहित है। इसमें भी अन्य वाह्य कर्मकांडी साधनों का सहारा न लेकर केवल शुद्ध मन से परमात्मा का नाम-सिमरन करने की प्रेरणा दी गई है जिसका-सिमरन आदि काल, युगों के आदि काल से भक्त-जनों के मन को विश्राम देता रहा है :

कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपरि रामु ॥
आदि जुगादी सगल भगत ता को सुखु बिस्रामु ॥
(पन्ना १३६४)

विश्व के सर्वश्रेष्ठ स्थायी सुख केवल परमात्मा का नाम-सिमरन करने में ही समाहित हैं, इसलिए मन की द्वंद्व अवस्था का त्यागकर भक्त कबीर जी नाम-रस पीने की ही प्रेरणा देते हैं :

कबीर डगमग किआ करहि कहा डुलावहि जीउ ॥
सरब सूख को नाइको राम नाम रसु पीउ ॥
(पन्ना १३६४)

**१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू पी)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६*

भक्त कबीर जी ने (अपने अनुभव से) देखा था कि सारा जगत अपनी समस्त इंद्रियों को अन्य तुच्छ पदार्थों के रस-भोग में जकड़े बैठा है, मोह-पाश में बंधा पड़ा है, इसलिए वे परमात्मा से विनम्र प्रार्थना करते हैं :

कबीर नैन निहारउ तुझ कउ स्रवन सुनउ तुअ नाउ ॥
बैन उचरउ तुअ नाम जी चरन कमल रिद ठाउ ॥ (पन्ना १३७०)

हरि-नाम का सिमरन करने वाला ही संसार का सबसे सुखी प्राणी है :

कबीर हरि का सिमरनु जो करै सो सुखीआ संसारि ॥
इत उत कतहि न डोलई जिस राखै सिरजनहार ॥ (पन्ना १३७५)

नाम-सिमरन के लिए जिस ब्रह्म, सत्य का निर्देश दिया गया है वह एक है, सत्य स्वरूप चिरंतन सत्य है। गुरु नानक पातशाह जी ने जपु जी साहिब के आरंभ में ही बताया है कि वह ओअंकार स्वरूप ब्रह्म अटल सत्य केवल एक है। उसी शक्ति से संपूर्ण जीव व जगत उत्पन्न हैं। वह सृष्टि का कर्त्ता, रचयिता एकमात्र पुरुष है। वह कालातीत है, अयोनि है, स्वनिर्मित है। वह सृष्टि-पालक परम सत्ता समान रूप से सबका पालक, निरवैर, निरभउ है। जीव उसी परम शक्ति का अंश है। पंच तत्व निर्मित शरीर में जो चित्त है, वह परम सत्य का चेतन अंश है। सृष्टि जगत के संपूर्ण प्राणी उसी एक मात्र नूर ज्योति से निर्मित है। भक्त कबीर जी इस भाव को इस प्रकार व्यक्त करते हैं :

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥१॥
लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥
खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब ठांई ॥१॥ रहाउ ॥
माटी एक अनेक भांति करि साजी साजनहारै ॥
ना कछु पोच माटी के भांडे ना कछु पोच कुंभारै ॥२॥
सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई ॥ (पन्ना १३४९)

ब्रह्म अनंत शक्तियों का स्वामी है, उसकी जीव-जगत-रचना की प्रक्रिया का रहस्य, उसकी अनंतता की सीमा कोई देव, दानव, मानव नहीं जान पाया :

सनक सनंद महेस समानां ॥
सेखनागि तेरो मरमु न जानां ॥१॥ . .
हनूमान सरि गरुड़ समानां ॥
सुरपति नरपति नही गुन जानां ॥२॥
चारि बेद अरु सिंम्रिति पुरानां ॥
कमलापति कवला नही जानां ॥३॥ (पन्ना ६९१)

परमात्मा ने अपनी रचना-प्रक्रिया से *"बिंदु ते जिनि पिंडु कीआ"* जीव के भौतिक शरीर की रचना की और उसमें चेतन सत्ता अवस्थित की। जीव इस शरीर को सत्य मान बैठा और सत्य को भूल बैठा। यद्यपि यह शरीर तो नश्वर है, कच्चे घड़े की भांति है, एक ठोकर से फूट जाने वाला है। संसार के धन पदार्थ भाई-बंधु सब स्वार्थ में बंधे हैं :

हरि बिनु कउनु सहाई मन का ॥
मात पिता भाई सुत बनिता हितु लागो सभ फन का ॥१॥ रहाउ ॥
आगे कउ किछु तुलहा बांधहु किआ भरवासा धन का ॥
कहा बिसासा इस भांडे का इतनकु लागै ठनका ॥ (पन्ना १२५३)

शरीर सहित अन्य धन-पदार्थों को जीव इसलिए सत्य मान बैठता है क्योंकि इस पर

अविद्या का प्रभाव है। माया अविद्या है। माया का आवरण जीव और शुद्ध स्वरूप ब्रह्म के मध्य एक झीने पर्दे के समान है, जिस कारण जीव और ब्रह्म का अंतर बना रहता है। जीव अपने सत्य स्वरूप को पहचान नहीं पाता, अपनी अवस्थिति ब्रह्म से अलग एक स्वतंत्र सत्ता के रूप में देखता है, जबकि असल में वह है उसी सर्वशक्तिमान का प्रतिबिंब। जिस प्रकार किसी बिंब का प्रतिबिंब उसमें समाहित हो एकरूप हो जाता हैं, जल की तरंगें जल के मुख्य स्रोत में समाहित हो एकरूप हो जाती हैं, घड़े में पड़ा जल घड़े के फूट जाने पर मुख्य स्रोत से मिल एक रूप हो जाता है, उसी प्रकार जीव की अंत परमस्थिति ब्रह्म में लीन हो एकात्मभाव की ही है :

गुर चरण लागि हम बिनवता पूछत कह जीउ पाइआ ॥
कवन काजि जगु उपजै बिनसै कहहु मोहि समझाइआ ॥१॥ . .
जिउ प्रतिबिंबु बिंब कउ मिली है उदकु कुंभु बिगराना ॥
कहु कबीर ऐसा गुण भ्रमु भागा तउ मनु सुंनि समानां ॥ *(पन्ना ४७५)*

वैसे यह अविद्या, माया, ब्रह्म की ही शक्ति है। इसे प्रभु हुक्म से ही भेजा गया है। इसकी अपनी अलग कोई सत्ता नहीं है-- *"आगिआकारी कीनी माइआ ॥"* ब्रह्मा, बिसन, महेश सबको इसने छला है परंतु अपना कोई बल इसके पास नहीं है :

सरपनी ते ऊपरि नही बलीआ ॥
जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ ॥ . .
इह स्रपनी ता की कीती होई ॥
बलु अबलु किआ इस ते होई ॥ (पन्ना ४८०)

वैसे इसका प्रसार-क्षेत्र है बहुत विशाल। बख़्शा इसने किसी को नहीं है। केवल काबू आती है तो यह प्रभु-प्रेमी संत, भक्त-जनों के :

नकटी को ठनगनु बाडा डूं ॥
किनहि बिबेकी काटी तूं ॥१॥ रहाउ ॥
सगल माहि नकटी का वासा सगल मारि अउहेरी ॥
सगलिआ की हउ बहिन भानजी जिनहि बरी तिसु चेरी ॥२॥ . .
नाकहु काटी कानहु काटी काटि कूटि कै डारी ॥
कहु कबीर संतन की बैरनि तीनि लोक की पिआरी ॥ *(पन्ना ४७६)*

माया, अविद्या का बंधन ज्ञान द्वारा काटा जाता है। ज्ञान की प्राप्ति गुरु-शरण में आकर होती है। गुरु-प्रदत्त ज्ञान से हउमै, अहंकार के बंधन टूटते हैं। भक्त कबीर जी की बाणी में गुरु का अति महत्त्वपूर्ण स्थान दिखाया गया है। गुरु साहिबान ने अपनी पावन बाणी में गुरु और परमेश्वर को एक समान माना है। गुरु केवल एकमात्र ज्ञान का दाता, अंधकार विनाशक, ज्ञान-चक्षु खोलने वाला समर्थ दाता ही नहीं वह स्वयं अकाल पुरख स्वरूप है। गुरबाणी का फरमान है :

-गुरु परमेसरु एकु है सभ महि रहिआ समाइ ॥ *(पन्ना ५३)*
-सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥ *(पन्ना ४६६)*

गुरु शबद गुरु स्वरूप है :

सबदु गुर पीरा गहिर गंभीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ॥ *(पन्ना ६३४)*

भक्त कबीर जी ऐसे ही परमेश्वर स्वरूप गुरु की प्राप्ति के इच्छुक हैं। सच्चे गुरु की प्राप्ति होते ही मन-तन शीतल हो जाता है, विकारों की आग संतप्त नहीं करती। यह निशानी सच्चे गुरु की हैं :

कबीर गुरु लागा तब जानीऐ मिटै मोहु तन ताप ॥
हरख सोग दाझै नही तब हरि आपहि आपि ॥
(पन्ना १३७४)

सद्गुरु के वचन में जीव की जीवन-युक्ति को बदल देने की सामर्थ्य होती है। वह स्वयं शूरवीर होता है। ज्ञान के तीखे, नुकीले बाणों से प्रहार करता है, जो जिज्ञासु पर हृदयवेधी प्रभाव करते हैं। वह निर-अहंकार होकर, विनम्र हो प्रभु-चरणों से जुड़ जाता है। उसकी समस्त कर्मेंद्रियों, ज्ञानेंद्रियों में आमूल चूल परिवर्तन आ जाता है, यथा :

कबीर सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु ॥
लागत ही भुइ गिरि परिआ परा करेजे छेकु ॥ . .
कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान ॥
पावहु ते पिंगुल भइआ मारिआ सतिगुर बान ॥
(पन्ना १३७४)

"ज्ञान का बाण लगते ही गूंगा हो गया, परनिंदा नहीं करता, बहरा हो गया, परनिंदा नहीं सुनता, पैरों से पंगु हो भ्रष्ट स्थानों पर नहीं जाता, बुरे आचरण का त्याग करता है।"

आत्मोत्थान के लिए सतिगुरु की शरण में आकर ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। ज्ञान की आवश्यकता इसलिए है कि अंतर मन के विकारों से जूझने के लिए शुद्ध आत्म-तत्व को प्राप्त कर, सहज अवस्था की प्राप्ति कर, परमब्रह्म में लीन होने का मार्ग गुरु के ज्ञान द्वारा ही जाना जा सकता है। इस अनुभूति का ज़िक्र भक्त कबीर जी रूपक द्वारा करते हैं। ज्ञान की आंधी के प्रवाहित होते ही माया के बंधन, भ्रम की दीवारें टूट जाती हैं, द्वैत-भाव, मोह-पाश, तृष्णा, दुर्बुद्धि सबका नाश हो जाता है। तब विकारों के अंधड़, समस्त संकल्पों, विकल्पों को उड़ाकर ले जाते हैं। हृदय में प्रभु-प्रेम का जल बरसने लगता है। प्रेम-विगलित प्रभु-चरणों से जुड़ी शुद्ध पवित्र निहकर्मी जीवात्मा सूर्योदय के असीम प्रकाश-पुंज आत्म-तत्व से मिलती है, निज स्वरूप को पहचानती है प्रभु-चरणों में स्थायी ठिकाना प्राप्त करती है :

देखो भाई ग्यान की आई आंधी ॥
सभै उडानी भ्रम की टाटी रहै न माइआ बांधी ॥१॥ रहाउ ॥
दुचिते की दुइ थूनि गिरानी मोह बलेडा टूटा ॥
तिसना छानि परी धर ऊपरि दुरमति भांडा फूटा ॥१॥
आंधी पाछे जो जलु बरखै तिहि तेरा जनु भीनां ॥
कहि कबीर मनि भइआ प्रगासा उदै भानु जब चीना ॥२॥ *(पन्ना ३३१)*

आत्म-ज्ञान प्राप्त जिज्ञासु के लिए प्रभु-नाम का सिमरन निरंतर करते रहना आवश्यक है। इसके लिए सतसंगत पर विशेष बल दिया गया है, क्योंकि *"जो जैसी संगति मिलै सो तैसो फलु खाइ ॥"* बुरी संगत का प्रभाव बुरा और सतसंगत का प्रभाव उत्तम बताया गया है। उदाहरण दिया है कि बेर और केले के पेड़ की निकटता हानिप्रद और चंदन के निकट की अवस्थिति लाभप्रद है :

-कबीर मारी मरउ कुसंग की केले निकटि जु बेरि ॥
उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगु न हेरि ॥
(पन्ना १३६९)
-कबीर चंदन का बिरवा भला बेढ़िओ ढाक पलास ॥
ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि ॥
(पन्ना १३६५)

इसलिए उत्तम साधु-जनों की संगत है, क्योंकि :

कबीर एक घड़ी आधी घरी आधी हूं ते आध ॥

भगतन सेती गोसटे जो कीने सो लाभ ॥
(पन्ना १३७७)

अध्यात्म साधना के मार्ग में मन की प्रबल भूमिका है, इसलिए भक्त कबीर जी कहते हैं कि मन को साधना आवश्यक है। मन चंचल है, मंगल है, अहंकार में फूला मदमस्त हाथी तुल्य है, भक्ति, सिमरन, समाधि, चिंतन में सबसे बड़ी बाधा है। इसलिए बताते हैं : *"मन साधे सिधि होइ ॥"* गुरु द्वारा ज्ञान की प्राप्ति भी कर ली, वेद, पुराण, धर्म-ग्रंथ भी पढ़ लिए परंतु मन में जब विश्वास, प्रेम-प्रतीति न हुई तो उस अगम्य अगोचर वस्तु की प्राप्ति उस सहज से साक्षात्कार कैसे हो सकता है? इसीलिए बताते हैं :

कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै ॥
काहे की कुसलात हाथि दीपु कूए परै ॥
(पन्ना १३७६)

सार रूप से भक्त कबीर जी की आध्यात्म चेतना कोई गूढ़वाद-विवाद पूरित दर्शन-चिंतन नहीं है। इसमें साधारण जनमानस को धर्म-चिंतन का एक ऐसा सहज मार्ग दर्शाया गया है जिसमें उसे सतिगुरु की शरण में आकर, ज्ञान-प्राप्ति कर प्रेम सहित प्रभु-नाम-सिमरन की प्रेरणा दी गई है। ज़ोरदार शब्दों में जीव को समझाया गया है कि उसे मानव-योनि प्राप्त हुई है। यह मानस जन्म दुर्लभ है। इसमें जिससे वह अपने कर्मफल के कारण जिस परम सत्ता से बिछुड़कर आया है *"ता ही के संगि लागु ॥"* का उद्देश्य प्राप्त करना है। संसार के अन्य पदार्थ जीव के स्थायी संगी नहीं हैं :

रे मन तेरो कोइ नही खिंचि लेइ जिनि भारु ॥
बिरख बसेरो पंखि को तैसो इहु संसारु ॥
(पन्ना ३३७)

इसलिए उसे नाम-सिमरन द्वारा नाम-रस पीने की प्रेरणा दी गई है, जिससे *"राम रसु पीआ रे ॥ जिह रस बिसरि गए रस अउर ॥"* वह माया में आसक्त न हो, अन्यथा *"हरि बिनु बैल बिराने हुईहै ॥"* नाम-सिमरन बिना निकृष्ट योनियों में भटकना पड़ेगा, आवागमन से मुक्त नहीं हो पाओगे, निकृष्ट कर्मों का फल भोगना पड़ेगा। गुरबाणी कर्म-सिद्धांत का प्रतिपादन करती है-- *"जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥"* प्रभु-प्रेम में विगलित माधुर्थ प्रेम-रस बाणी द्वारा भी भक्त कबीर जी अपनी रहस्यात्मक अनुभूतियों की अभिव्यंजना द्वारा भी जीव को प्रेरणा देते हैं कि प्रेम आसक्त जीवात्मा का प्रभु-पति से विवाह मिलन तभी हो सकता है जब वह प्रेम सहित प्रभु नाम-सिमरन में लगे। उसके आध्यात्मिक विवाह की भी संभावना बन जाती है :

तनु रैनी मनु पुन रपि करि हउ पाचउ तत बराती ॥
राम राइ सिउ भावरि लैहउ आतम तिह रंगि राती ॥१॥
गाउ गाउ री दुलहनी मंगलचारा ॥
मेरे ग्रिह आए राजा राम भतारा ॥ . .
कहि कबीर मोहि बिआहि चले है पुरख एक भगवाना ॥ *(पन्ना ४८२)*

यह आत्मा-परमात्मा का आध्यात्मिक विवाह, अध्यात्म जीवन की चरम प्रगति है। प्रभु बिछुड़े जीव की परम ज्योति में चिरलीनता की अवस्था है जो मानव जीवन का परम मनोरथ है।



भक्त कबीर जी का जीवन-दर्शन

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

शिरोमणि भक्त कबीर जी प्रभु के रंग में रंगे हुए, इतनी ऊंची अवस्था के मालिक थे कि भक्त कबीर जी और प्रभु-परमेश्वर में कोई भी भिन्न-भेद नहीं रह गया था। भक्त कबीर जी बनारस (यू. पी.) के निवासी भक्त रामानंद जी के शिष्य थे। मध्य काल में भारत में जाति-पाति अथवा ऊंच-नीच इत्यादि की विभिन्नता इत्ने प्रबल रूप में थी कि तथाकथित ऊंची जाति वाले भक्त रामानंद जी एवं भक्त कबीर जी को नाम की दात नहीं देना चाहते थे। गुरु के बिना मुक्ति असंभव है। इसलिए गुरु धारण करना भक्त कबीर जी के लिए बहुत ज़रूरी था। भक्त रामानंद जी हर-रोज़ अमृत वेले, उठकर गंगा नदी पर जाया करते थे, वहीं पर हठ करके भक्त कबीर जी ने रामानंद जी को अपना गुरु धारण किया। इस घटना का विवरण भाई गुरदास जी ने भी अपनी वार १०, पउड़ी १५ में किया है। प्रभु-नाम की दात प्राप्त करके, भक्त कबीर जी ने इतनी कड़ी घालना घाली अथवा इतनी बड़ी कमाई की कि आप जी निरोल पारस बन गए। आप जी गृहस्थ जीवन में अपनी किरत करते हुए भी हर समय प्रभु-नाम से जुड़े रहते थे। सचेत, अचेत अवस्था में उनका हर सांस प्रभु-नाम ही पुकारता था।

भक्त कबीर जी के पिता जी का नाम श्री नीरू जी और माता का नाम नीमा जी था। भक्त कबीर जी का स्वभाव भक्ति में रंगे हुए शूरवीरों जैसे निर्भय था। चाहे समकालीन बादशाह सिकंदर लोधी हो अथवा मुल्लां-मुलाणों की फौज। चाहे बनारस के उच्च-पंडितों की बात हो भक्त कबीर जी न ही किसी से डरे ही और न ही पदार्थवादी ताकतों के आगे झुके थे।

आप जी सदैवकालीन हक-सच पर डटे रहे। भक्त कबीर जी की बाणी से स्पष्ट होता है कि सच धर्म के लिए, पुरजा पुरजा कट कर बहादुरों जैसे शहादत पाना किंतु रण-भूमि को कभी भी छोड़कर न भागना, उनका महान जीवन आदर्श था। आज भी जहां कहीं भी धार्मिक समागमों में, गुरबाणी में से वीर रस के प्रमाण देने की ज़रूरत पड़े, तब रागी, प्रचारक, कीर्तनिए, भक्त कबीर जी की बाणी में से *"गगन दमामा बाजिओ"* और *"सूरा सो पहचानिऐ . . "* जैसी पंक्तियां को अकसर दुहराया जाता है।

भक्त कबीर जी बाहरी धार्मिक दिखावे, कर्मकांड अथवा निरर्थक पूजा-रीतिओं के विरुद्ध थे। दिन-प्रतिदिन भक्त कबीर की लोक-प्रियता बढ़ती ही जा रही थी। इसीलिए समाज का ब्राह्मण वर्ग उनसे नाराज़ था। दूसरी तरफ मुसलमान वर्ग आप जी से इसलिए ईर्ष्या करता था कि भक्त कबीर जी किसी भी शरा को नहीं मानते थे। भक्त कबीर जी की निरंतर चढ़ती कला को रोकने के लिए विरोधियों ने बादशाह सिकंदर लोधी पास उनकी शिकायत की। बादशाह ने हुक्म किया कि "कबीर काफर है, इसको लोहे के संगलों (जंज़ीरों) से बांधकर गंगा नदी में डुबो कर मार दो।" *(शेष पृष्ठ ४८ पर)*

**गांव : कैले कलां, डाक : घुम्मण कलां, ज़िला : गुरदासपुर-१४३५१८; फोन : ९८५५८५१०१४*

भक्त कबीर जी

-स. गुरदीप सिंघ*

भक्त कबीर जी उच्च कोटि के समाज सुधारक थे, इसलिए उन्होंने अपनी बाणी में समाज की बुराईयों, ऊंच-नीच, जाति-पाति, कर्मकांड, आडंबर, पाखंड आदि कुरीतियों का प्रचंड रूप में विरोध किया है। भक्त कबीर जी निडर, समदर्शी, स्वभाव से मस्त और मनमौज़ी थे। जो मन में आया वह कह दिया। अपनी भावनाओं को दबाना उनके लिए सहज न था। सच्चाई की पूजा करना ही उनका सच्चा धर्म था। भक्त कबीर जी की सोच लोक हितकारी और क्रांतिकारी थी। भक्त कबीर जी यह सिद्ध करना चाहते थे कि इस दृष्टमान जगत के कोने-कोने का मालिक केवल एक ही अकाल पुरख स्वयं है। वह आप ही करता है और आप ही भुगता है। यह सारी सृष्टि उनकी अपनी बनाई हुई है और वह स्वयं ही सारी सृष्टि में विद्यमान है।

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥१॥
लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥
खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब ठांई ॥१॥ (पन्ना १३४९)

परमात्मा की जोति से प्रकृति और इसी प्रकृति से मनुष्य पैदा हुआ। इस प्रकार निराकार परमात्मा से मानव समाज के ढांचे की प्रक्रिया का संचालन हुआ। *"एक नूर से सभ जग उपजिआ"* के सिद्धांत अनुसार सारे मनुष्य एक समान हैं और इनमें अंतर हो ही नहीं सकता।

भक्त कबीर जी के जन्म-काल के बारे में इनकी बाणी में कोई संकेत प्राप्त नहीं होता। बनारस कबीर चौरा मठ से एक ग्रंथ 'मूल बीजक' प्रकाशित हुआ है, जिसमें लिखित दो पद कबीर जी के जन्म और मृत्यु से सम्बंधित मिलते हैं।

जन्म:- चौदा सै छपन जेठि पूनम चंद सु बारा ॥
कबीर साहिब का जन हित काशी में अवतारा ॥
मृत्यु:- पंदरां सै पचहतर समवत मगहर कीआ निधाना ॥
मगहन सुदी ऐकादिशा तिथि में अंत्रधाना ॥

कबीर पंथिओं की एक अन्य पोथी "कबीर कसौटी" में भक्त कबीर जी का जन्म १४५५ संवत बताया गया है :

चौदह सै पचपन साल गए। चंद्र वार एक ठाट गये ॥
जेठ सुदी बरसाइ के। पूरनमासी प्रगट भये ॥

भक्त कबीर जी के श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में २२९ पद १७ रागों में और २४३ सलोक (समेत ६ सलोक गुरु साहिबान जी के) संकलित हैं। भक्त कबीर जी की बाणी की यह संख्या श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में संकलित भक्तों की बाणी में सबसे अधिक है। इसका प्रमुख कारण है, भक्त कबीर जी की मूल धारणाओं का सिक्ख गुरु परंपरा की मान्यताओं में अभेदता। भक्त कबीर जी की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के विभिन्न रागों-- सिरी राग, गउड़ी (बावन अखरी, थिती, सतवार) आसा, गूजरी, सोरठि, धनासरी, तिलंग,

३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन : ९८८८१२६६९०

सूही बिलावलु, गोंड, रामकली, मारू, केदारा, भैरउ, बसंतु सारग, परभाती में सुशोभित है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में प्राप्त भक्त कबीर जी की बाणी एक युगांतरकारी रचना है। इनकी बाणी में प्रभु भक्ति और समाज सुधारक पक्ष पर बल दिया गया है। इसके साथ ही जीवन में जागृति लाने की बेमिसाल क्षमता है। भक्त कबीर जी ने जितने हौसले से परंपरागत हिंदू धर्म के कर्मकांडों से संघर्ष किया उतनी ही निडरता से भारत में जड़ पकड़ने वाली इस्लाम की सांप्रदायिक भावना का सामना किया। भारतीय समाज में हिंदू और मुसलमानों में भ्रातृत्व-भाव का बीज पैदा करना जहां भक्त कबीर जी का मंतव्य था वहीं व्यक्तिगत भक्ति को महसूस करना भी उनका परम लक्ष्य था। संक्षिप्त रूप में उनके मुख्य सिद्धांत थे :-

जग रचना :- भक्त कबीर जी इस संसार की रचना को एक ओंकार अथवा एक नूर से मानते हैं :-

अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ *(पन्ना १३४९)*

जीवात्मा :- भक्त कबीर जी की मान्यता है कि आत्मा अमर है और शरीर नाशवान है। ज्ञानी मनुष्य शरीर में रहता हुआ भी मुक्त हो जाता है जबकि अज्ञानी माया के जाल में फंसा होने के कारण दुख सहता है :

अंधकार सुखि कबहि न सोई है ॥
राजा रंकु दोऊ मिलि रोई है ॥ (पन्ना ३२५)

माया :- भक्त कबीर जी माया को इस लोक की ईश्वरीय शक्ति मानते हैं और इस माया के तीन गुण-- रजो, तमो, सतो हैं। आदर-मान, जप-तप, योग आदि माया का ही पसारा है। जल-थल, आकाश, माता-पिता, पति-पत्नी सब माया में ही लिप्त हैं। इस माया की शक्ति से परिचय कराते हुए भक्त कबीर जी ने कहा है :

सरपनी ते ऊपरि नही बलीआ ॥
जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ ॥
(पन्ना ४८०)

इसलिए माया के प्रभाव से मनुष्य को सावधान करते हुए भक्त कबीर जी कहते हैं :

दुनीआ हुसीआर बेदार जागत मुसीअत हउ रे भाई ॥
निगम हुसीआर पहरूआ देखत जमु ले जाई ॥
(पन्ना ९७२)

शरीर की नाशमानता :- भक्त कबीर जी मानव शरीर को पांच तत्वों का पुतला मानते हैं। यह शरीर नाशवान है जो काल मुक्त नहीं हो सकता। पांच तत्वों की समाप्ति ही शरीर का नाश है :

खट नेम करि कोठड़ी बांधी बसतु अनूपु बीच पाई ॥
कुंजी कुलफु प्रान करि राखे करते बार न लाई ॥१॥
अब मन जागत रहु रे भाई ॥
गाफलु होइ कै जनमु गवाइओ चोरु मुसै घरु जाई ॥१॥ रहाउ ॥
पंच पहरूआ दर महि रहते तिन का नही पतीआरा ॥
चेति सुचेत चित होइ रहु तउ लै परगासु उजारा ॥२॥ *(पन्ना ३३९)*

भक्त कबीर जी को मौत का कोई भय नहीं है। उनकी मान्यता है कि मरने के बाद ही परमात्मा से मिलाप होता है :

कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मनि आनंदु ॥
मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु ॥२२॥
(पन्ना १३६५)

भक्त कबीर जी मानव जन्म को दुर्लभ मानते हैं और मनुष्य को सावधान भी करते हैं :

गुर सेवा ते भगति कमाई ॥
तब इह मानस देही पाई ॥
इस देही कउ सिमरहि देव ॥
सो देही भजु हरि की सेव ॥१॥
भजहु गुोबिंद भूलि मत जाहु ॥
मानस जनम का एही लाहु ॥ (पन्ना ११५९)

कर्म मार्ग :- भक्त कबीर जी इस बात से तो सहमत हैं कि मनुष्य जिस तरह का कर्म करता है उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है :

किरत की बांधी सभ फिरै देखहु बीचारी ॥
एस नो किआ आखीऐ किआ करे विचारी ॥
(पन्ना ३३४)

परंतु परमात्मा की प्राप्ति के लिए वे उस मार्ग को अस्वीकार करते हैं जो कर्मकांड पर आधारित है। भक्त कबीर जी बाणी में कर्म मार्ग का स्वरूप इस प्रकार है :

किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥
जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥१॥
रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥
चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ (पन्ना ३२४)

मुक्ति :- जब जीव इस संसार के बंधनों से छुटकारा पा लेता है अथवा माया की पकड़ से अपने मन को आज़ाद कर लेता है तो ऊंची आत्मिक अवस्था प्राप्त कर लेता है। यहां पहुंचकर उसका मन निर्मल हो जाता है और आत्मा-परमात्मा का अंतर मिट जाता है। इस अवस्था को मुक्ति प्राप्त होना माना जाता है :

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ॥
(पन्ना १३६७)

योग साधना :- भक्त कबीर जी के समय गोरखनाथ की नाथ संप्रदाय का बहुत प्रभाव था। नाथ योगी 'हठ योग' द्वारा लोगों को प्रभावित करते थे। भक्त कबीर जी ने हठ योग की कठिन साधना का खंडन किया और गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए परमात्मा के सिमरन पर बल दिया है।

मुंद्रा मोनि दइआ करि झोली पत्र का करहु बीचारु रे ॥
खिंथा इहु तनु सीअउ अपना नामु करउ आधरु रे ॥१॥ (पन्ना ९७०)

इसलिए भक्त कबीर जी कहते हैं :

ना मै जोग धिआन चितु लाइआ ॥
बिनु बैराग न छूटसि माइआ ॥१॥
कैसे जीवनु होइ हमारा ॥
जब न होइ राम नाम अधारा ॥१॥
(पन्ना ३२९)

सामाजिक चिंतन :- अपने समय की वर्ण व्यवस्था पर चोट करते हुए भक्त कबीर जी ने तर्क सहित कहा है :

गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥
ब्रहम बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥
कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥
बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥१॥ रहाउ ॥
जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥२॥
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥३॥
कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ॥४॥ (पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी के समय वर्णों और जाति आदि का भेद बना हुआ था। भक्त कबीर जी नहीं चाहते थे कि समाज में जाति, धर्म, नसल, रंग भेद के आधार पर मनुष्यों में अंतर हो। उन्होंने इस अंतर को मिटाने के

लिए वेद, पुराण, व्रत, पूजा, रोजा, मंदिर, मस्जिद, जनेऊ, सूतक आदि रूढ़ियों का खंडन करते हुए कहा है :

-रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै ॥
आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै ॥१॥
(पन्ना ४८३)

-बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥ *(पन्ना ६५४)*

भक्त कबीर जी ने हिंदू और मुसलमान दोनों को ही सामाजिक वातावरण को दूषित करने से रोका है। भक्त कबीर जी के परमात्मा में 'खालिक' और खलक का मेल है, सच्चाई के लिए समाज में पुरातन मान्यताओं को महत्त्व नहीं दिया। समाज के निर्माण और समकालीन परिस्थितिओं को सुधारने में उनकी भूमिका ऐतिहासिक थी। उनकी विचारधारा में ऊंच-नीच श्रेणी को कोई मान्यता ही नहीं दी गई। इसलिए उन्होंने अपनी जाति के बारे में लिखा है :

कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु ॥
बलिहारी इस जाति कउ जिह जपिओ सिरजनहारु ॥ *(पन्ना १३६४)*

भक्त कबीर जी ने भक्ति आंदोलन से सम्बंधित होने के कारण मानव समाज को एक विशाल दृष्टि और खुशहाल भविष्य दिया। वह परिस्थितियों के साथ जूझने वाले जुझारू थे। अपनी बात को कहने के लिए निर्भय योद्धा के समान मैदान में खरे उतरे। मानव समाज को उपदेश दिया :

सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहु न छाडै खेतु ॥२॥२॥
(पन्ना ११०५)

निसंदेह भक्त कबीर जी के समय उत्तरी भारत के समाज की धार्मिक अवस्था बहुत ही अजीब तथा दयनीय थी। उस समय हिंदू धर्म, इस्लाम, बुद्ध, जैन, नाथ योगी, साकत आदि अपने-अपने स्थान पर सरगर्म थे। इनके आगू नेता जन कल्याण के स्थान पर निज कल्याण की तरफ ज्यादा झुके हुए थे। इनकी पूजा विधि भी बाहरी आडंबर तक ही सीमित थी। भक्त कबीर जी ने सबसे पहले जन-साधारण के दुख-सुख को अपना दुख-सुख मानते हुए जनता से सीधा संपर्क किया। उन्होंने अपनी विचारधारा को लोक विचारधारा बना लिया और अपने उपदेशों का संचार माध्यम लोक काव्य और लोक भाषा बना लिया। भक्त कबीर जी की बाणी में किसी भी धर्म के मूल का विरोध नहीं मिलता। विरोध है तो उन कर्मकांडों एवं आडंबरों का जो मानव जीवन के विकास के लिए योगदान पाने में सक्षम ही नहीं हैं।



महाराजा रणजीत सिंह

-डॉ. राजेंद्र सिंह साहिल*

जन्म एवं प्रारंभिक जीवन :- महाराजा रणजीत सिंघ का जन्म १३ नवंबर, १७८० ई को शुक्रचक्किया मिसल के जत्थेदार सरदार महां सिंघ के घर हुआ। जींद के राजा राजपति सिंघ की पुत्री राज कौर आपकी माता थीं। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि महाराजा रणजीत सिंघ का जन्म गुजरांवाला में हुआ था। वंश परंपरा के अनुसार महाराजा रणजीत सिंघ अपने ननिहाल ज़िला संगरूर के निकट 'बडरुखां' में पैदा हुए थे।

महाराजा रणजीत सिंघ अभी बहुत छोटी उम्र के ही थे कि उन्हें चेचक निकल आई। दुर्भाग्य वश बाईं आंख जाती रही और चेहरे पर भी चेचक के अनेक दाग हो गये। महाराजा रणजीत सिंघ के पठन-अध्ययन का प्रबंध भाई फेरू सिंघ एवं भाई भंगा सिंघ के पास किया गया। युद्ध-विद्या में आपकी विशेष रुचि थी। अत: आप इसमें शीघ्र ही दक्ष हो गये। शस्त्र-विद्या के साथ-साथ आपको शिकार खेलना, युद्ध संचालन, घुड़सवारी आदि भी प्रिय थे। आप अपने मित्रों के साथ ज्यादा समय जंगी खेलों में व्यस्त रहते। आप बहुत अच्छे तैराक भी थे। कहते हैं कि आप चिनाब नदी के तीखे बहाव के बावजूद उसे पार कर लिया करते थे।

गुरु-घर का श्रद्धालु खानदान :- महाराजा रणजीत सिंघ की रगों में उस वंश का खून दौड़ रहा था जो आरंभ से ही गुरु-घर का श्रद्धालु रहा था। आपके पड़दादा सरदार बुड्ढा सिंघ ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की देख-रेख में 'अमृत छका' था। सरदार बुड्ढा सिंघ दशमेश पिता के द्वारा लड़े गए सभी युद्धों में शामिल रहे। बाद में वे बाबा बंदा सिंघ बहादर की सेना में शामिल होकर अपनी वीरता का प्रदर्शन करते रहे। बाबा बुड्ढा सिंघ ने अपने गांव शुक्रचक्क में एक छोटा किला भी बनवाया था। बाबा बुड्ढा सिंघ का पुत्र नौध सिंघ था जो अपने पिता की ही भांति तेग का धनी और बहादुर था। सरदार नौध सिंघ ने नवाब कपूर सिंघ की सेना में रहकर अपने सैन्य-कौशल का प्रदर्शन किया।

सरदार नौध सिंघ का पुत्र सरदार चढ़त सिंघ था, जिसने अपने गांव शुक्रचक्क के नाम पर अपनी मिसल का नाम रखा शुक्रचक्किया मिसल। सरदार चढ़त सिंघ के सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया से विशेष निकट सम्बंध थे।

सरदार चढ़त सिंघ के पुत्र सरदार महां सिंघ ने छोटी उम्र में ही सत्ता संचालन एवं युद्ध-कौशल का अद्भुत प्रदर्शन किया। छोटी उम्र में पिता का साया सिर से उठ जाने के बाद शुक्रचक्किया मिसल की बागडोर संभाली और शत्रु चट्ठों को परास्त किया। चट्ठों पर विजय प्राप्त करते ही सरदार महां सिंघ को पुत्र-जन्म की सूचना मिली। रण में मिली इस जीत के कारण ही सरदार महां सिंघ ने पुत्र का नाम रखा-- रणजीत सिंघ।

प्रारंभिक सफलताएं :- महाराजा रणजीत सिंघ बचपन से ही युद्ध प्रिय थे और पिता के साथ

*१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१

अकसर जंगी मुहिमों पर जाया करते थे। आपने अपनी बहादुरी का पहला बड़ा कारनामा मात्र १३ वर्ष की आयु में ही कर दिखाया था।

हुआ यूं कि गुजरांवाला के निकट का क्षेत्र चट्ठों का था। चट्ठों का सरदार हशमत ख़ान हिंदू, सिक्खों पर अत्याचार करता रहता था। हालांकि सरदार महां सिंघ ने उसे पराजित भी कर दिया परंतु वह अपनी आदत से बाज़ नहीं आ रहा था। तेरह वर्षीय बालक रणजीत सिंघ की शिकार खेलते हुए अचानक एक दिन हशमत ख़ान से भिड़ंत हो गयी। हशमत ख़ान को लगा कि वह इस बच्चे को मारकर महां सिंघ से अपनी पराजय का बदला ले लेगा परंतु मात्र १३ वर्ष के रणजीत सिंघ ने ४० से पार, साढ़े छह फुट लंबे शक्तिशाली हशमत ख़ान को खूब नचाया और कृपाण के एक ही वार से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। इस प्रकार महाराजा रणजीत सिंघ ने इतनी छोटी उम्र में चट्ठों के इलाके पर कब्ज़ा कर दिखाया।

उस समय सबसे शक्तिशाली मिसल आहलूवालिया मिसल थी। महाराजा रणजीत सिंघ के पिता सरदार महां सिंघ सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के अत्यंत विश्वस्त और निकटवर्ती थे। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया के बाद सरदार फ़तहि सिंघ आहलूवालिया मिसल के जत्थेदार बने। महाराजा रणजीत सिंघ ने सरदार फ़तहि सिंघ से पगड़ी बदलकर भाई-भाई का रिश्ता कायम कर लिया और इस प्रकार दो बड़ी सिक्ख मिसलों को परस्पर संघर्ष में पड़ने से बचा लिया।

शाह जमान से संघर्ष और लाहौर पर अधिकार :- अहमद शाह अब्दाली के पौत्र शाह जमान ने सन् १७९६ ई में लाहौर पर कब्ज़ा कर लिया परंतु उसे काबुल में बगावत के कारण जल्द अफ़गानिस्तान लौटना पड़ा। उसके लौटते ही महाराजा रणजीत सिंघ ने सरदार फ़तहि सिंघ को साथ लेकर लाहौर पर हमला कर दिया। बारह हज़ार सेना होने के बावजूद शाह जमान द्वारा नियुक्त लाहौर का सूबेदार जंग हार गया और मारा गया।

इस हार का बदला लेने के लिए शाह जमान एक बड़ा लश्कर लेकर १७९८ ई में फिर लाहौर पर हमलावर हुआ। लाहौर जीतकर उसे सिक्खों को सबक सिखाने के लिए श्री अमृतसर की ओर कूच किया परंतु सिक्ख श्री अमृतसर की रक्षा के लिए पूरी तरह तैयार थे। घमासान युद्ध में सिक्खों ने शाह जमान को वापस लाहौर तक खदेड़ दिया।

बाद में महाराजा रणजीत सिंघ के नेतृत्व में सिक्खों ने लाहौर पर छापामार हमले शुरू कर दिये। अंतत: शाह जमान विवश होकर लाहौर छोड़ काबुल भाग गया। जुलाई १७९९ ई में महाराजा रणजीत सिंघ के नेतृत्व में सिक्ख सेना ने लाहौर पर स्थायी कब्ज़ा कर लिया। सन् १८०१ ई में शाह जमान ने एक बार फिर लाहौर पर हमला किया परंतु इस बार फिर उसे सिक्खों के हाथों मुंह की खानी पड़ी और फिर वह कभी लौटने की हिम्मत न कर सका।

स्वतंत्र सिक्ख राज्य की स्थापना एवं राज्य विस्तार :- अप्रैल १८०१ ई में महाराजा रणजीत सिंघ का विधिवत् राज्याभिषेक हुआ और स्वतंत्र सिक्ख राज्य की स्थापना हो गई। समस्त मिसलों के सरदारों ने एक मत होकर महाराजा रणजीत सिंघ को अपना महाराजा स्वीकार कर लिया।

इसके बाद महाराजा रणजीत सिंघ ने सिक्ख राज्य के विस्तार की ओर ध्यान दिया। सन् १८०१ ई में जम्मू, कसूर के सूबेदार निजामुद्दीन और कांगड़ा के राजा संसार चंद

को हराकर, इन क्षेत्रों पर कब्ज़ा कर लिया गया। १८०२ ई में चनिओट और १८०३ ई में मुलतान, जलंधर और फगवाड़ा को जीतकर सिक्ख राज्य में मिला लिया गया। सन् १८०५ ई में सिक्खों ने न सिर्फ श्री अमृतसर पर अधिकार किया बल्कि मराठा जसवंत राव होल्कर की अंग्रेजों से हार के बाद शरण देकर रक्षा की। १८०७ ई में गोरखों के सेनापति अमर सिंघ थापा को शिकस्त दी। इसी वर्ष कंग, अखनूर और बहावलपुर को भी सिक्ख राज्य में मिला लिया गया। सन् १८१० ई में गुजरात, साहीवाल और वज़ीराबाद को भी जीत लिया गया।

इस प्रकार बहुत ही शीघ्र सिंध से लेकर यमुना तक महाराजा रणजीत सिंघ के नेतृत्व में सिक्खों का दबदबा कायम हो गया। इसी समय दूरदर्शिता का परिचय देते हुए महाराजा रणजीत सिंघ ने सन् १८०९ ई की अप्रैल में अंग्रेजों के साथ श्री अमृतसर की संधि कर ली और सिक्ख राज्य को लंबे समय तक अंग्रेजों के साथ संघर्ष में पड़ने से बचा लिया।

इसके बाद १८१२ ई में कश्मीर, १८१८ ई में पेशावर आदि पर भी अधिकार कर लिया गया। सारे सिक्ख राज्य को लाहौर, पेशावर, मुलतान और कश्मीर चार सूबों में बांटा गया।

विराट सैनिक शक्ति :- महाराजा रणजीत सिंघ के पास एक बड़ी सैन्य शक्ति थी। 'महान कोश' के अनुसार सेना में ९२००० पैदल, ३१८०० घुड़सवार और ७८४ तोपें थीं। महाराजा रणजीत सिंघ हर रोज़ एक हज़ार घुड़सवारों की जांच करते थे। इस प्रकार महीने भर में लगभग सभी घोड़ों और घुड़सवारों की परख हो जाती। मेलों और पर्वों के दौरान महाराजा जंगी कारनामों का आयोजन करते और योग्य योद्धाओं को वहीं नियुक्ति दे देते। सरदार हरी सिंघ नलूआ की नियुक्ति ऐसे ही एक मेले के दौरान हुई थी। सभी की तनखाहें बहुत अच्छी थीं और योग्य कर्मचारियों को अतिशीघ्र उन्नति मिल जाती थी।

सरदार हरी सिंघ नलूआ, अकाली फूला सिंघ, सरदार शाम सिंघ अटारी आदि समेत कई फ्रांसीसी, रूसी, इतावली सिपहसालार और सेना अधिकारी महाराजा रणजीत सिंघ की सेना में कार्यरत थे।

लोकतांत्रिक एवं धर्म निरपेक्ष राज्य :- महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा स्थापित यह सिक्ख राज्य पूर्णत: लोकतांत्रिक एवं धर्म निरपेक्ष राज्य था। प्रजा ही नहीं, बड़े-बड़े अधिकारियों के स्तर पर सर्व धर्म समभाव की अद्भुत मिसालें मिलती हैं। मंत्री फकीर अजीजुद्दीन एक मुसलमान था। डोगरा राजा ध्यान सिंघ प्रधान मंत्री था। इतावली वैंतुरा प्रधान सेनापति था। ब्राह्मण खुशहाल चंद भी एक उच्च अधिकारी था। वास्तव में महाराजा के यहां हिंदू, मुस्लिम, ईसाई और अनेक यूरोपियन कार्यरत थे।

आर्थिक दृष्टि से समृद्ध राज्य :- महाराजा रणजीत सिंघ द्वारा स्थापित सिक्ख राज्य आर्थिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध राज्य था। इसकी वार्षिक आमदनी तीन करोड़ चौबीस लाख पचहत्तर हज़ार रुपए थी। महाराजा ने कृषि पर विशेष ध्यान दिया। मुलतान के रेशम उद्योग, कश्मीर के पश्मीना उद्योग, चंबा एवं कसूर के कंबल उद्योग और श्री अमृतसर के फुलकारी उद्योग को महाराजा ने विशेष प्रश्रय दिया।

सेना का निरंतर आधुनिकीकरण किया जाता था और तो और श्री अमृतसर में छापाखाना भी स्थापित कराया गया था।

सरल व्यक्तित्व एवं आध्यात्मिक निष्ठा :- महाराजा रणजीत सिंघ का व्यक्तित्व बहुत सरल और सादा था। वे सादा लिबास पहनते थे और

उन्होंने अपने लिए कोई विशेष तख़्त भी नहीं बनवाया था। वे एक साधारण कुर्सी पर विराजमान होते थे। कई बार तो भूमि पर पालथी मारकर बैठे-बैठे ही मुकदमे सुन लिया करते थे। मेहमानों को महाराजा अपने निकट स्थान पर बैठाते थे। वैसे दरबारियों को सजधज कर दरबार में आने की छूट थी।

महाराजा रणजीत सिंघ की धार्मिक एवं आध्यात्मिक निष्ठा भी अद्‌भुत थी। महाराजा रणजीत सिंघ ने बड़ी ही विनम्रता से श्री हरिमंदर साहिब पर स्वर्ण-पत्र चढ़वाने की सेवा निभाई थी। श्री गुरु रामदास जी के नाम पर श्री अमृतसर में एक बाग लगवाया और दशमेश पिता के नाम पर किला 'गोबिंद गढ़' बनवाया।

महाराजा के सिक्कों एवं मोहरों पर अंकित रहता था :

अकाल पुरख जी सहाय
देगो तेगो फतहि ओ नुसरति बे-दिरंग।
याफ्त अज नानक गुरू गोबिंद सिंघ।

(अर्थात् गरीबों के लिए देग (लंगर) और कमज़ोरों की रक्षा के लिए तेग श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से प्राप्त हुई है।)

महाराजा रणजीत सिंघ ने ४७ वर्ष शासन किया और सिक्ख राज्य की सर्वांगीण उन्नति की। १५ आषाढ़ संवत् १८९६ अनुसार २९ जून १८३९ ई को महाराजा रणजीत सिंघ की मृत्यु हुई। 

भक्त कबीर जी का जीवन-दर्शन

(पृष्ठ ४० का शेष)

भक्त कबीर जी की पवित्र बाणी से पता चलता है कि आप जी को जब संगलों से बांधकर गंगा नदी में फेंका गया, उस समय भी आप के चेहरे का नूर (प्रसंनता) देखा नहीं जाता था। घबराहट अथवा चिंता जैसा कोई भी चिन्ह भक्त कबीर जी के माथे पर नहीं था।

दोबारा फिर भक्त कबीर जी को शराबी हाथी के आगे फेंका गया। महावत ने पूरा ज़ोर लगा लिया कि हाथी अपने पांवों से, सूंड से भक्त कबीर जी को मार डाले परंतु प्रभु के प्यारे भक्त को जो प्रभु जी में ही अभेद थे उन पर प्रभु की कृपा थी, इसलिए हाथी ने अपनी सूंड से भक्त कबीर जी को सत्कार सहित नमस्कार की और पीछे भाग गया।

भक्त कबीर जी की बाणी श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित है। भक्त कबीर जी के अनुसार गृहस्त जीवन में किरत करते हुए, प्रभु भक्ति करने की प्रेरणा की है। उनके अनुसार नग्न रहने से, भूखे रहने से, सिर के केश कटवाने से, बिंद रखने से, परमगति प्राप्त नहीं हो सकती। कर्मकाडों से मन को शांति नहीं मिलती। बाहरी दिखावे की खातर किए गए किसी भी कर्म को भक्त कबीर जी नहीं मानते।

निसंदेह शिरोमणि भक्त कबीर जी अकाल पुरख जी में अभेद थे। भक्त कबीर जी प्रभु-नाम का सिमरन करते हुए प्रभु में ही विलीन हो गए थे।

राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी ॥
(पन्ना ९६९) ֍

महाराजा रणजीत सिंघ की विलक्षण महानता

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

शेरे-पंजाब, महान् व लासानी योद्धा, अद्भुत सेनापति, न्यायप्रिय शासक, निपुण राज्य-प्रबंधक, रहम दिल (दयावान) इंसान महाराजा रणजीत सिंघ का जन्म शुक्रचक्किया मिसल के अगुआ सरदार चढ़त सिंघ के सुपुत्र सरदार महां सिंघ के घर १३ नवंबर, १७८० ई को हुआ था। सरदार महां सिंघ के अकस्मात निधन के पश्चात् महाराजा १२ वर्ष की छोटी आयु में सन् १७९२ ई को शुक्रचक्किया मिसल के प्रमुख बन गए। महाराजा रणजीत सिंघ की महानता का वर्णन प्रसिद्ध विद्वान व सैलानी बैरन दि हिऊगल ने अपने यात्रा संस्मरण 'ट्रैवल्ज़ इन कश्मीर ऐंड पंजाब' में यूं किया है-- "जो सलतनत (राज्य) रणजीत सिंघ ने एक निपुण कारीगर की तरह अनेक बिखरे टुकड़ों को जोड़कर (इकट्ठा कर) स्थापित की, वह बेमिसाल है। वह मुझे वर्तमान संसार का सबसे अद्वितीय व्यक्तित्व प्रतीत हुआ है।"

प्रसिद्ध पंजाबी कवि शाह मुहम्मद महाराजा रणजीत सिंघ की तारीफ़ करते हुए लिखता है :

"महाबली रणजीत सिंघ होइया पैदा,
नाल ज़ोर दे मुलक हिलाए गिआ।
मुलतान, कशमीर, पिशौर, चंबा,
जम्मू, कांगड़ा कोटि निवाए गिआ।
होर देश लद्धाख ते चीन तोड़ी,
सिक्का आपणे नाम चलाए गिआ।
शाह मुहंमदा जाण पचास बरसां,
अच्छा रज्ज के राज कमाए गिआ।"

महाराजा रणजीत सिंघ ने सिक्ख राज्य स्थापित कर पूरे विश्व में पंजाबियों का गौरव एवं सम्मान बढ़ाया। वे अति लोकप्रिय सम्राट हुए हैं। उनके शासनकाल में कभी किसी को फांसी की सज़ा नहीं दी गई। उन्होंने न केवल पंजाब की, बल्कि भारत की सभ्यता व संस्कृति का सम्मान बढ़ाया। उन्होंने विदेशी हमलावरों व लुटेरों से भारत को सुरक्षित रखने हेतु पश्चिमी सीमा पर दर्रा खैबर के स्थान पर जमरौद के किला (दुर्ग) का निर्माण करवाया। उनमें श्रेष्ठ व महान गुण मौजूद थे। वे चुस्त, निर्भय, बहादुर, दृढ़, निश्चयी, स्वाभिमानी, आत्म-विश्वासी और दूरंदेशी थे। विश्व प्रसिद्ध शासक बनना उनकी सूझबूझ का उत्तम प्रमाण है। सिक्ख मिसलों को इकट्ठा कर एक शक्तिशाली सिक्ख-साम्राज्य स्थापित किया और उन फिरंगियों को ईन मानने पर विवश किया, जिनके राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता था।

महाराजा का व्यक्तित्व अति प्रभावशाली था। वह प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करने की क्षमता रखते थे। बचपन में चेचक का शिकार होने के कारण चेहरे पर दाग थे। बाईं आंख ज्योतिविहीन थी किंतु उनके चेहरे पर जो तेज था, वह देखते ही बनता था। महाराजा रणजीत सिंघ का नाम तो विश्व इतिहास में कोहिनूर हीरे की भांति चमकता-दमकता है। प्रसिद्ध इतिहासकार ग्रिफ्न महाराजा के बारे में यूं उल्लेख करता है: "कोई भी पंजाब की यात्रा करने आने वाला

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

सैलानी महाराजा रणजीत सिंघ के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था।"

महाराजा रणजीत सिंघ की सिक्ख धर्म में बहुत आस्था थी। सुबह श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में से पावन हुकमनामा सुने बिना कोई कार्य आरंभ नहीं करते थे। उनका गुरबाणी में अथाह भरोसा था। उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हस्तलिखित स्वरूप तैयार करवाये। श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर की पवित्र इमारत पर सोने के पत्र चढ़वाने का अद्वितीय कार्य करवाया। सिक्ख धर्म में अगाध श्रद्धा होने के बावजूद वे धर्म-निरपेक्ष थे। उनकी धार्मिक-निरपेक्षता ने उन्हें सर्वप्रिय व लोकप्रिय शासक बना दिया था। वे सच्चाई व ईमान पर पहरा देते थे।

लाहौर पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने सुनहरी मस्जिद मुसलमानों को सौंप दी। मुलतान की जीत के बाद पीर बहावल हक्क के मकबरे की प्रथा पहले की तरह कायम रखी तथा अन्य कई मकबरों की मरम्मत हेतु ख़ज़ाने में से राशि जारी की। पेशावर की जीत के बाद अपने सेनापति हरी सिंघ नलूआ (नलवा) को हिदायत दी कि हज़रत उम्र के पुस्तकालय को कोई क्षति न पहुंचायी जाए। प्रत्येक धर्म के व्यक्ति अपनी फरियादें लेकर उनके दरबार में जा सकते थे। उनकी फरियादें सुनी जाती थीं और उनकी समस्याएं हल की जाती थीं। आज भी लोग महाराजा रणजीत सिंघ के राज्य जैसा शानदार राज्य पाने का सपना संजोए बैठे हैं।

महादानी महाराजा रणजीत सिंघ सभी धर्मों के प्रति फिराख़ दिल थे। महाराजा ने अपने शाही दरबार में मुसलमान फ़कीर भाइयों, डोगरों, ब्राह्मण, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि व्यक्तियों को भरोसे लायक पदों पर नियुक्त किया। इससे महाराजा रणजीत सिंघ का राज्य सचमुच धर्म-निरपेक्ष सिद्ध होता है और आजकल 'घर वापिसी' के नाम पर अल्पसंख्यक समुदायों पर धर्म-परिवर्तन हेतु ज़ोर डाला जाता है। सिक्ख धर्म में ऐसी कोई बात कभी रही नहीं। हम सिक्ख लोग सभी धर्मों का आदर-सम्मान करते हैं।

महाराजा रणजीत सिंघ निसहायों को सहारा, निरीह लोगों को सम्मान, निराश्रितों को आश्रय देते थे। बच्चों को प्यार करने वाले महाराजा रणजीत सिंघ जी को लोगों के दिलों का राजा कहा जाता था। वे वेश बदलकर लोगों के दुख-दर्द जानने, समझने की भरपूर कोशिश करते थे। दीन-दुखियों, गरीबों की मदद करने को वे अपना परम कर्त्तव्य समझते थे। तभी तो उन्हें जहां एक तरफ महाराजा कहा जाता था वहीं दूसरी तरफ 'पांडी पातशाह' भी कहा जाता था। यूरोपिन सैलानी विलियम बैंटिक को भी उनकी अद्भुत प्रतिभा, तीक्ष्ण बुद्धि एवं क्षमता का गुणगान करना पड़ा था। महाराजा की स्मरण-शक्ति अति तेज़ थी। निरक्षर होने के बावजूद उन्हें दस-बारह हज़ार गांवों के नाम मौखिक रूप में याद थे और साधारण बातों से लेकर राज्य-प्रबंधन के गंभीर मामलों तक की जानकारी रहती थी।

महाराजा रणजीत सिंघ जी गुणवान व्यक्तियों के कद्रदान थे। उन्हें संगीत, चित्रकला, साहित्य सहित, लोक-कलाओं से गहरा लगाव था। वे उत्तम कोटि के घोड़ों के भी काफी शौकीन थे। भूमि व राजस्व विभाग का अनुकरणीय प्रबंध करना उनकी शासकीय कार्य कुशलता को दर्शाता था। उनका संयम भरा तथा संतुलित व्यवहार, सहज-सरल स्वभाव उनके व्यक्तित्व को और अधिक प्रभावशाली बना देता था।

(शेष पृष्ठ ५७ पर)

बाबा बंदा सिंघ बहादर की पत्नी शहीद सुशील कौर

*-सिमरजीत सिंघ**

आजकल के हिमाचल प्रदेश राज्य का शहर चंबा ज़िले का सदर मुकाम है। चंबा शहर रावी दरिया के दाएं किनारे पर समुद्र तल से ९०० मीटर की ऊंचाई पर है। सन् १९६६ ई से पहले यह पंजाब का ही हिस्सा था। यह प्राकृतिक नज़ारों से भरपूर बहुत ही रमणीक धरती है। चंबा रियासत के बारे में तांबे की पलेटों पर उकरे हुए इतिहास के अनुसार इस रियासत की नींव छठी शताब्दी में सूर्यवंशी राजपूत मारूत द्वारा रखी गई थी। मारूत ने ब्रह्मपुरा जिसको आजकल ब्राहमौर या भरमौर कहा जाता है, स्थापित किया था। मेरु वर्मा ने ६८० ई में रियासत चंबा को अपने राज्य में मिला लिया। चंबा शहर ९२० ई में साहिल वर्मा ने बसाया। यह रियासत ज्यादातर आज़ाद ही रही किंतु मुगलिया सलतनत को ख़िराज भी देती रही। सन् १६९० ई में चंबा का राजा ऊदे सिंघ बना। यह बहुत ही समझदार व शांतिप्रिय था। इसके परिवार में से लगते भाई से इसकी खूब मित्रता थी। उसके आकस्मिक मृत्यु हो जाने पर उसकी पुत्री सुशील को इसने अपनी पुत्री की तरह पाला। राजकुमारी सुशील जब ब्याह योग्य हुई तो राजा ऊदे सिंघ उसके लिए योग्य वर ढूंढने लगा। उन दिनों मुगल हाकिम हिंदुओं की सुंदर लड़कियों को जबरन उठाकर ले जाते थे। उनके साथ जबरन निकाह कर इस्लाम धर्म धारण करवाते तथा हरमों में रखते। राजा ऊदे सिंघ को राजकुमारी सुशील के भविष्य की चिंता लगी रहती थी। वो ऐसे वर की भाल में था जिसके नाम से मुगल भी भय खाते हों। जहां पर उसकी बच्ची की इज्ज़त-आबरू को कोई संकट न हो।

नांदेड़ से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का थापड़ा लेकर पंजाब आए बाबा बंदा सिंघ बहादर की हर तरह जय-जयकार हो रही थी। उसने ज़ालिम हकूमत की जड़ें हिलाकर रख दी थीं। सरहिंद की फ़तहि के बाद एक तरह से पंजाब में सिक्खों का राज्य ही हो गया था। बादशाह बहादुर शाह को ये खबरें पहुंच रही थीं। बहादुर शाह ने बहुत बड़ी सेना लेकर बाबा बंदा सिंघ बहादर को सढौरा के पास लोहगढ़ के किले में घेर लिया। घमासान युद्ध हुआ। सिक्खों की कम गिनती होने के बावजूद भी लाखों की गिनती में सेना का डटकर मुकाबला किया। रात के समय बाबा बंदा सिंघ बहादर ने अपने एक बहादुर सिक्ख बख़्शी गुलाब सिंघ को अपनी पौशाक पहना दी। १२ अन्य सिंघों को किले में छोड़कर अन्य सिंघों के साथ रात को एक बार जब्रदस्त धमाका करके वैरी दल की कमज़ोर बाही तोड़कर नाहन की पहाड़ियों की तरफ निकल गए। डॉ. गंडा सिंघ लिखते हैं कि उसने जल्द ही हुकमनामें जारी करके सिक्खों को कीरतपुर साहिब पहुंचने के लिए कहा।

मैल्कम लिखता है अगर बहादुर शाह उत्तरी भारत में न आता तो संभवत् था कि बाबा बंदा सिंघ बहादर की फौज सारे भारत पर

**संपादक, 'गुरमति ज्ञान' एवं 'गुरमति प्रकाश'।*

अधिकार जमा लेती।

यहां से निकलकर बाबा बंदा सिंघ बहादर पहाड़ी रास्तों द्वारा रोपड़ पहुंच गया। रोपड़ की स्थिति जंगी नुक्ता-निगाह से बहुत उचित थी। इसके उत्तर की तरफ हिमाचल प्रदेश की पहाड़ियों, पूर्व दिशा की तरफ हरियाणा का अंबाला क्षेत्र, दक्षिण की तरफ पटियाला तथा लुधियाना का मैदानी इलाका तथा पश्चिम की तरफ होशियारपुर तथा ऊने का नीम पहाड़ी क्षेत्र लगता है। इस क्षेत्र में कई दरिया तथा नाले चलते हैं, जो उस समय पानी की आवश्यकता को मुख्य रखते हुए फौजी नुक्ता-निगाह से पशुओं तथा सैनिकों के लिए बहुत लाभप्रद थे। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने इस स्थान को अपनी शक्ति इक्ट्ठा करने के लिए चुना। यहां से बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सिक्खों को इकट्ठा होने के लिए हुकमनामे भेजे। यहां ही बाबा बंदा सिंघ बहादर ने शिवालक की पहाड़ियां खोद-खोदकर गुफाएं तैयार कीं।

इस जगह का नाम जिंमकहिर होने के बारे में रिवायत है। आजकल जिंमकहिर नामक गांव के बारे में सूचना प्राप्त नहीं होती। बाबा बंदा सिंघ बहादर के इस ठिकाने का पता चलने पर बहादुर शाह ने यहां पर चढ़ाई कर दी। भारी युद्ध होने के कारण यह गांव पूरी तरह तबाह हो गया। बाबा बंदा सिंघ बहादर की फौज के अनेकों सिपाही शहीद हो गए थे। इन शहीदों की पत्नियां भी ज़ालिमों का मुकाबला करते हुए शहीद हो गईं। इनका अंतिम संस्कार भी इकट्ठा ही कर दिया गया था। राजपूतों के रिवाज़ के अनुसार इन स्त्रियों को अपने पतियों के साथ शहीद होने के कारण एक ही चिता में अग्नि दिखाने के कारण 'सतीआं' कहकर सत्कारा जाता है। आजकल उस इलाके में उन सतियों की बहुत सारी यादें बनी हुई हैं, जिनका इलाके के लोग बहुत सत्कार करते हैं।

बहुत-से सिंघ बाबा बंदा सिंघ बहादर को यहां आकर मिलने लगे। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने पहाड़ी राजाओं से ईन मनवानी शुरू कर दी। ये राजे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को श्री अनंदपुर साहिब के किले में घेरा डालने के समय शामिल थे। जब कहिलूर के राजा भीम चंद ने ईन मानने से इन्कार कर दिया तो कहिलूर पर चढ़ाई कर दी तथा राजा हार गया। सिक्खों ने बिलासपुर शहर पर कब्ज़ा कर लिया। डॉ. गंडा सिंघ लिखते हैं कि इसके बाद बहुत-से पहाड़ी राजाओं ने बाबा बंदा सिंघ बहादर की ईन मान ली। चंबे के राजा ऊदे सिंघ ने बाबा बंदा सिंघ बहादर को राजकुमारी सुशील कौर के लिए योग्य वर जान रिश्ते की पेशकश की। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सिंघों से विचार करके राजकुमारी सुशील कौर से विवाह करवा लिया। दिल्ली के दरबार में बाबा बंदा सिंघ बहादर के बारे में चर्चा होने लगी कि यह तो पहले अकेला ही कम नहीं था अब तो पहाड़ी राजाओं के साथ रिश्तेदारी होने के कारण उसकी ताकत और बढ़ गई है।

बाबा बंदा सिंघ बहादर पठानकोट के रास्ते आगे बढ़ने लगा। यहां से बाबा बंदा सिंघ बहादर राजपुर तथा बहिरामपुर की तरफ चल दिए। बहादुर शाह ने रुस्तम दिलख़ान को मुकाबले के लिए भेजा। सिक्खों ने शाही फौज का खूब नुकसान किया। सिक्खों ने सारा इलाका अपने कब्ज़े में कर लिया। पसरूर के पास शाही सेना ने सिक्खों का बहुत नुकसान किया तथा सिक्ख जम्मू की तरफ चले गए। गांव के गरीब लोगों पर शाही फौज ने इतना कहर ढाया कि असंख्य लोगों को गुलाम बनाकर

लाहौर की घोड़ा मंडी में पशुओं की तरह बेच दिया।

सन् १७१३ ई से लेकर सन् १७१५ ई तक का समय बाबा बंदा सिंघ बहादर ने जम्मू के समीप चिनाब के किनारे रियासी नामक गांव में गुज़ारा। यहां राजकुमारी सुशील कौर की कोख से पुत्र अजै सिंघ ने जन्म लिया। यहां रहते ही भाई शिव राम (कपूर) ने अपनी सुपुत्री बीबी साहिब कौर की शादी बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ की। १८ फरवरी, १७१२ ई को बहादुर शाह की मृत्यु हो गई तथा दिल्ली के तख़्त के बारे में झगड़ा पड़ गया। बाबा बंदा सिंघ बहादर के लिए यह सुनहरी मौका था, वो दोबारा पहाड़ियों से निकलकर सढौरे पर काबिज़ हो गया। सिक्ख फिर से खालसाई झंडे तले इकट्ठा होना शुरू हो गए। ज़ालिमों का मुकाबला करने के लिए बाबा बंदा सिंघ बहादर सिंघों को साथ लेकर चल पड़े। इस समय राजकुमारी सुशील कौर तथा अजै सिंघ भी इनके साथ चल पड़े। बीबी साहिब कौर मां बनने वाली थी। उनको यहां ही भरोसे योग्य सिक्खों की देख-रेख तले छोड़ दिया गया।

मार्च, १७१५ ई में बटाला तथा कलानौर पर कब्ज़ा किया। दिल्ली के तख़्त का मुगल बादशाह फरुखसियर तथा पंजाब में अबदुसमद ख़ान सूबेदार था। इन दिनों ज़करिया ख़ान जम्मू तथा पहाड़ी इलाकों में रह रहा था, जो सिक्ख कौम पर भारी जुल्म कर रहा था। आम इलाकों में फौजदारों को खुलेआम जुल्म करने के अधिकार दिए हुए थे। कलानौर में फौजदार सहिराब ख़ान था, संतोख राए कानूगो तथा उनका भाई अनोख राय थे। इन्होंने कलानौर के आस-पास के गांवों में भारी तशद्दुद करना शुरू कर दिया था। इलाके के लोगों ने दुखी होकर बाबा बंदा सिंघ बहादर के पास फरियाद की। लोगों की फरियाद सुनकर बाबा बंदा सिंघ बहादर अपने साथियों सहित अरदासा सोधकर जम्मू से होते हुए कलानौर पहुंचे। बाबा जी ने सहिराब ख़ान फौजदार को अपना रवैया बदलने का संदेश भेजा। उसने कोई परवाह न करते हुए जवाब दिया सरहिंद की जीतों पर गर्व न करो, हम कलानौर के हाकिम हिंदू, मुसलमान एकमुठ हैं, हम तेरा नामो-निशान मिटा देंगे, बाबा बंदा सिंघ बहादर ने इस अहंकार भरे उत्तर को सुना तथा सिंघों सहित उनको सोधने के लिए चढ़ाई कर दी। कलानौर में बाबा जी की याद में आजकल एक सुंदर गुरुदारा साहिब सुशोभित है।

बाबा बंदा सिंघ बहादर जब चंबे से होते हुए गुरदास नंगल की तरफ जा रहे थे तो धारकलां तहसील के इलाके की तरफ ठहरे, जहां आजकल गुरुद्वारा प्रतापगढ़ साहिब सुशोभित है। इस गुरुद्वारा साहिब में लिखित दर्ज है जो इस प्रकार है :

"श्री गुरुद्वारा प्रतापगढ़ साहिब का संक्षिप्त इतिहास-- यह वो स्थान है जहां बाबा बंदा सिंघ बहादर ने चंबे को जाते हुए विश्राम तथा बंदगी की थी। इस स्थान से मैदान तथा पहाड़ों की तरफ सारे रास्ते नूरपुर तथा किला की राजसी गतिविधियों पर निगाह रखी जा सकती है। खालसा राज्य के नामवर जरनैल स. ज़ोरावर सिंघ ने तिब्बत तथा एशिया के इलाकों को खालसा राज्य में स्थापित किया। सिर्फ पहली और अंतिम बार हिंदोस्तान के किसी जरनैल के भूगोलिक तथा राजसी हदें बढ़ाईं। प्रतापी जीतों के सदका इस स्थान का नाम गुरुद्वारा प्रतापगढ़ साहिब पड़ गया है।"

गुरदास नंगल की कच्ची गढ़ी में बाबा

बंदा सिंघ बहादर तथा अन्य सैनिक मुगलों के घेरे में आ गए। सन् १७१५ ई को जब बादशाह फरुखसियर को बाबा बंदा सिंघ बहादर के बारे में ख़बर पहुंची तो बादशाह ने लाहौर के सूबेदार अबदुसमद ख़ान तथा कुमरदीन ख़ान को २४००० फौज देकर सिंघों पर चढ़ाई करने का हुक्म दे दिया। इसमें आधे घुड़सवार, आधे प्यादे तथा तोपखाना भी शामिल था। मुगल फौज ने गुरदास नंगल के एक टिब्बे पर कच्ची गढ़ी को आकर घेर लिया। सिंघों ने शाही फौज के आने के बारे में सुनकर गुरदास नंगल की इस गढ़ी के एक टिब्बे के गिर्द खाई खोदकर उसमें शाही नहर को टक लगाकर पानी भर दिया। ऐसा करने से बाहर से किसी भी आदमी या घोड़े का आना मुश्किल हो गया। दलेर ख़ान ने आकर किले का घेरा बहुत ज्यादा सख़्त कर दिया। जो सिंघ गांव में दाना-चारा लेने गए हुए थे वो शाही सेना के काबू में आ गए तथा उनको शहीद कर दिया। किले के भीतर घास का एक तिनका व अन्न का एक दाना भी नहीं जाने दिया। मुट्ठी भर सिंघों ने ज़ालिमों का डटकर मुकाबला किया। दुश्मनों के अंदर सिक्खों का इतना ज्यादा भय बन चुका था कि वो अल्हा के पास यही दुआएं करते थे कि काश! बंदा सिंघ गढ़ी छोड़कर भाग जाए। क्योंकि बाबा जी की शक्ति से मुगल भयभीत हो चुके थे। सिंघ ८ महीनों तक मुकाबला करते रहे। गुरदास नंगल की इस ८ महीने की लड़ाई ने सिक्ख कौम का एक नया इतिहास सृजित किया। 'असरारि समद्दी' में लिखा है "उस (बंदा सिंघ बहादर) की हालत इतनी कमज़ोर हो गई थी कि तुम कहोगे कि उसने गरीबी के कोने में सौ चालीसे काटे हों।. . . अनाज का दाना मोती के दाने की तरह महिंगा हो गया तथा पानी की बूंद आदमियों के चेहरे की रौनक की तरह अलोप हो गई। (सिक्ख) वृक्षों की छील को पक्षी के मास जैसी अनमोल तथा वृक्षों के पत्ते तथा छिलकों को स्वादी भोजन से अच्छा जानते थे। उनके चेहरे पर रौनक न रही बल्कि रंग कनक के दानों जैसा भी ना रहा।

अगर वो प्यास से न मरते तो सर्दी से मर जाते। अगर आहें भरने की आग उनके साथ न्याय करने को पहुंचती तो अनिद्रे से ही मारे जाते। भूख से वो एकम के चांद की तरह हो गए। अगर वो सूर्य की टिक्की देखते तो वो आशा से दांत खोलते अर्थात् उसको खाने के लिए मुंह खोल लेते। वो धरती की मिट्टी चीनी की तरह खा गए।"

दिसंबर, १७१५ ई को गढ़ी पर शाही फौज ने कब्जा कर लिया। लगभग ३०० सिंघों को वहीं शहीद कर दिया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादर के २०० साथियों को गुरदास नंगल से जालूस की शक्ल में पहले लाहौर फिर दिल्ली ले जाया गया। इनमें बाबा जी की पत्नी बीबी सुशील कौर और बच्चा अजै सिंघ भी शामिल था। रास्ते में अन्य गिरफ्तारियों के उपरांत सिंघों की संख्या ७४० तक पहुंच गई। बाबा बंदा सिंघ बहादर को जंज़ीरों से जकड़कर लोहे के पिंजरे में कैद कर हाथी पर बैठाया गया। यह जालूस फरवरी, १७१६ ई को दिल्ली के लाल किले में दाख़िल हुआ। ज़करिया ख़ान ने शाही खज़ाने के इंचार्ज को प्राप्त किए कीमती माल तथा हथियार दिए। ये हथियार इस तरह थे-- कृपाणें १०००, ढाले २७८, तीर-कमान १७३, तोड़ेदार बंदूकें १८०, जमदाढ़ खंजर ११४, चाकू २१७, सोने की मुहरे २३, रुपए ६०० तथा कुछ सोने के जेवर।

दिल्ली ले जाकर बाबा बंदा सिंघ बहादर

को बादशाह फरुखसियर ख़ान के आगे पेश किया गया। बादशाह ने बाबा बंदा सिंघ बहादर, बाबा बाज़ सिंघ, बाबा फ़तहि सिंघ, बाबा आली सिंघ, बाबा माली सिंघ तथा अन्य मुख्य सिंघों को मीर आतिश ईब्राहीम ख़ान के हवाले करके त्रिपोलिया जेल में कैद करने की हिदायत की। बाबा बंदा सिंघ बहादर की पत्नी सुशील कौर तथा पुत्र अजै सिंघ को लाल किले के शाही जनानखाने के प्रबंधक दरबार ख़ान के हवाले करके हरम में कैद करने के लिए हिदायत की। अन्य सिंघों को कोतवाल सरबराह ख़ान के हवाले कर दिया गया।

जिस जेलखाने में सुशील कौर तथा अजै सिंघ को कैद किया गया। वहीं पर पहले से ही अन्य स्त्रियां भी कैद थीं। उनकी हालत बहुत बुरी थी। इनमें से मथुरा के पंडित की स्त्री सोना थी। मथुरा का मुसलमान हाकिम उसकी सुंदरता पर मोहित हो गया तथा उसे जबरन हरम में ले आया और बाद में उसे दिल्ली ले आया। एक रात उसने सोए हुए उस हाकिम की गर्दन उसी की ही कृपाण से काट दी। इस कारण उसको जेल में बंद कर दिया गया। दूसरी औरत मंगली थी। बंदीखाने में रहने के कारण उसकी हालत आधे पागलों जैसी हो चुकी थी। मंगली दिल्ली के पश्चिमी क्षेत्र के किसी गांव के निवासी लाला किदार नाथ की पुत्री थी। एक बार कलंदर बख़्श फौजदार को किसी मुसलमान ने मंगली की सुंदरता के बारे में बता दिया। कलंदर बख़्श ने उस गांव को घेरा डाल लिया और मंगली को उठाकर ले गया। कलंदर बख़्श ने मंगली की सुंदरता देखकर उसको बादशाह के समक्ष पेश करके भरपूर ईनाम पाने की सोची। जब मंगली को बादशाह के आगे पेश किया गया तो उसकी हालत आधे पागलों जैसे हो चुकी थी। बादशाह फरुखसियर ने हकीमों को उसका इलाज करने का आदेश दिया तथा उसको इस बंदीखाने में बंद कर दिया।

तीसरी कैद बीबी समाणा के रामदयाल की पुत्री भजनी थी। भजनी का विवाह समाणा के समीपस्थ किसी गांव के नौजवान के साथ हुआ था। डोली अभी थोड़ी दूर ही गई थी कि मुगल हाकिमों दिलावर खां ने डोली को लूट लिया। आठ दिनों तक अपने हरम में रखने के बाद दिल्ली में लाया गया और मुसलमान धर्म ग्रहण करवाया गया।

बादशाह जहानदार शाह के बाद फरुखसियर बादशाह बन गया। फरुखसियर ने हिंदू लड़की इंदिरा कुमारी से जब्रदस्ती शादी कर ली। इंदिरा कुमारी जोधपुर के राजा अजीत सिंघ की पुत्री थी। इंदिरा की सगाई राजपूत शाही घराणे में हुई थी। बादशाह फरुखसियर ने राजा अजीत सिंघ पर इंदिरा कुमारी की शादी अपने साथ करवाने के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया। राजा अजीत सिंघ को बादशाह के आगे झुकना पड़ा एवं इंदिरा की शादी बादशाह के साथ कर दी। इंदिरा कुमारी चाहे मज़बूरन दिल्ली के लाल किले में आ गई थी परंतु वह मन से फरुखसियर से घृणा करती थी। क्योंकि उसकी सगाई जैपुर के राजकुमार प्रताप सिंघ के साथ हो चुकी थी। भजनी को इंदिरा की नौकरानियों में भेज दिया गया। एक बार इन दोनों ने भेस बदलकर भागने की कोशिश की। ड्योढ़ी के पहरेदारों को शक होने के कारण पकड़ी गईं। भजनी को बंदीखाने में बंद कर दिया गया और इंदिरा को वापिस महल में भेज दिया गया था। जब राजकुमारी इंदिरा को बीबी सुशील कौर की गिरफ्तारी का पता चला तो उसने अपनी एक नौकरानी की मदद से उसके

साथ संपर्क पैदा कर लिया।

बादशाह फरुखसियर ने बीबी सुशील कौर का सत्य भंग करने के लिए कई तरह के लोभ-लालच दिए। लालचों का कोई असर न होता देखकर उसको सहनीय और अकहनीय यातनाएं देनी शुरू कर दी। फिर भी कोई असर न हुआ तो मां से पुत्र छीनकर डराने की कोशिश की। जब फिर भी कोई बात न बनी तो मासूम बच्चे अजै सिंघ को बीबी सुशील कौर से छीनकर बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ ही शहीद करने का आदेश दे दिया। शहीदी वाले दिन सुबह ही जल्लाद बालक अजै सिंघ को बीबी सुशील कौर से ले गए।

९ जून, १७१६ ई को बाबा बंदा सिंघ बहादर तथा उनके २६ चुनिंदा साथियों को किले से बाहर लाया गया। बाबा बंदा सिंघ बहादर को शहीद करने से पहले महिरोली में कुतुब मीनार के पास ले जाया गया। उन दिनों में काका बख़्तिआर काकी की मज़ार पर उर्स मनाया जा रहा था। जिस कारण भारी मात्रा में लोग वहीं इकट्ठे हुए थे। बाबा जी को सबसे पहले बख़्तिआर काकी की मज़ार के इर्द-गिर्द घुमाया गया। फिर बख़्तिआर काकी की मज़ार की तरफ आती सड़क पर बने दरवाजे में बैठाकर बाबा जी के पुत्र अजै सिंघ को कत्ल करके उसका धड़कता हुआ दिल बाबा बंदा सिंघ बहादर के मुंह में ठूंसा गया। गुरु का सिदकी सिक्ख अडोल रहा और चढ़दी कला में रहते हुए अपने धर्म पर दृढ़ रहा।

उसके बाद बाबा जी को यातनाएं देने की कोई कोर-कसर न छोड़ी। रोम-रोम से बाबा जी के शरीर का मास नोचा गया और शरीर के छोटे-छोटे टुकड़े कर दिए गए किंतु बाबा बंदा सिंघ बहादर ने प्रभु का हुक्म मानते हुए मानसिक-आत्मिक रूप में पूरी चढ़दी कला में रहकर अपने शरीर पर ये यातनाएं सहन करते हुए एक शूरवीर योद्धा की भांति शहादत को प्राप्त कर गए।

बाबा बंदा सिंघ बहादर की दूसरी पत्नी बीबी साहिब कौर के भाई साहिब सिंघ ने महंत अमर सिंघ आदि साथियों की सहायता से बाबा बंदा सिंघ बहादर की हड्डियों के टुकड़े-इकट्ठा कर लिए। दिल्ली से इन टुकड़ों को लेकर वह गांव ढोटे के टांडा परगना रियासी (जम्मू) में भाई मेहर सिंघ धूते के घर पहुंचाए। यहां पर बाबा की पत्नी बीबी साहिब कौर अपने पुत्र रणजीत सिंघ सहित रहा करती थी।

बालक अजै सिंघ का काटा हुआ सिर बीबी सुशील कौर के आगे पेश करके उसको फिर से डराने-धमकाने की कोशिश की गई। बहादर सिंघनी पर कोई असर न हुआ और अपने धर्म पर अडोल नाम-सिमरन में लीन रही। वह अकाल पुरख के भाणे को हर्ष से मानती हुई अपने सिदक पर पहरा देती रही।

लाल किले में बादशाह फरुखसियर के हिंदू वज़ीर रत्न चंद की लड़की प्रभा का पति नौकर था। राजकुमारी इंदिरा ने किसी न किसी तरह प्रभा से संपर्क कर लिया। प्रभा के जरिए उसने अपने पिता अजीत सिंघ के पास संदेश भेज दिया कि यहां किले में उसकी हालत कैदियों जैसी है। इसी तरह के संदेश उसने राजकुमार प्रताप सिंघ को भेजकर उससे राबता कायम कर लिया। राजा अजीत सिंघ तथा राजकुमार प्रताप सिंघ ने मिलकर बगावत करने की तैयारियां कर लीं। कई वज़ीर तथा फौजी सरदार बादशाह फरुखसियर के भाई के पुत्र रफी-उल-चरज़ात की कमांड तले उनके साथ आ मिले। बादशाह इनसे बेख़बर शराब व ऐशो आराम में मस्त

था। कुछ नचारों को पैसे देकर बादशाह को मूर्ख बनाकर उलझाए रखने के लिए योजना भी बनाई गई। बादशाह हमायूं के मकबरे पर बैठकर बादशाह के विरुद्ध नीतियां तैयार होने लगी। एक दिन मौका पाकर इन्होंने लाल किले पर चुपचाप हमला कर दिया। बादशाह के साथी साथ छोड़कर भाग चुके थे। चारों ओर लड़ाई छिड़ चुकी थी। अफरा-तफरी में बीबी सुशील कौर व राजकुमारी इंदिरा जेल में से बाहर आ गईं। बादशाह फरुखसियर को सामने देखकर बीबी सुशील कौर ने एक सिपाही के हाथों तलवार छीनकर बादशाह पर हमला कर दिया। इसी अफरा-तफरी में किसी मुगल सिपाही ने बीबी सुशील कौर को तलवार से शहीद कर दिया। इसी तरह बीबी सुशील कौर अपने पति एवं पुत्र की भांति गर्व से शहीद हुई। ये सिक्ख स्त्रियों के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेंगी। इन महान शहीदों को लाखों बार प्रणाम है।

सहायक पुस्तकें :

१) भाई कान्ह सिंघ नाभा-- महान कोश
२) स. रछपाल सिंघ-- पंजाब कोश
३) ज्ञानी त्रिलोक सिंघ-- लाल किले दी कैदण
४) ज्ञानी त्रिलोक सिंघ-- गुरदास नंगल दे शहीद
५) डॉ. महिंदर कौर गिल्ल-- तूं सतवंती तूं परधानि
६) जे. बी. गोयल-- साडा नवां शहिर
७) ज़िला गजटिअर चंबा रियासत



महाराजा रणजीत सिंघ की विलक्षण महानता

(पृष्ठ ५० का शेष)

फिरंगियों के साथ दरिया सतुलुज के किनारे संधि करना, उनका एक दलेराना फैसला था। उन्होंने अपनी सूझबूझ के साथ एक विशाल सिक्ख राज्य स्थापित किया।

महाराजा रणजीत सिंघ ने सरकारी सिक्के (मुद्रा) पर बाबा बंदा सिंघ बहादर जी वाले ही खालसाई शब्द उकेरने का गौरवपूर्ण कार्य किया था। जैसे :

"देगो तेगो फतहि औ नुसरति बे-दिरंग।
याफत अज नानक गुरु गोबिंद सिंघ।"

यही उपरोक्त शब्द उस शाही मुहर पर भी अंकित होते थे, जो सरकारी पत्रों व दस्तावेज़ों पर लगाई जाती थी। अपने जीवनकाल में इतने ज्यादा महत्त्वपूर्ण काम उन्होंने किए कि यहां सभी का उल्लेख कर पाना संभव नहीं है। खालसा पंथ को ऊंचा दर्जा देने के लिए सरकारी झंडे पर 'अकाल सहाए' शब्द धारण करवाए। अपने नाम का या अपनी मिसल शुक्रचक्किया का कहीं भी ज़िक्र तक नहीं किया।

महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने राज्य में समूह पंजाबियों को एकजुट करने का कार्य किया और इनकी एक सशक्त कौम बनाई।

महाराजा रणजीत सिंघ २८ जून, सन् १८३९ ई को अकाल चलाना कर गए। वे कभी भी स्वयं को महाराजा नहीं समझते थे। बल्कि वे कहते थे, "मैं तो खालसा पंथ का एक अदना-सा सेवक हूं।" ऐसे विनम्र एवं महान महाराजा को कोटि-कोटि प्रणाम!



साका नीला तारा और श्री अकाल तख़्त साहिब

*-स. हरबीर सिंघ 'भंवर'**

गुरुद्वारे सिक्खी-जीवन के स्रोत हैं : हिंदुओं के मंदिरों, मुसलमानों की मस्जिदों और इसाईयों के गिरजा घरों की तरह, सिक्खों के गुरुधाम केवल पूजा स्थान ही नहीं है, बल्कि उनके धार्मिक, सामाजिक और शिक्षा केंद्र भी हैं।

प्रसिद्ध पंथक विद्वान भाई कान्ह सिंघ नाभा ने गुर शब्द रत्नाकर- 'महान कोश' में गुरुद्वारा साहिब की परिभाषा इस प्रकार की है :

"सिक्खों का गुरुद्वारा विद्यर्थियों के लिए स्कूल, आत्मिक जिज्ञासा के लिए ज्ञान-उपदेशक, रोगियों के लिए सफाखाना, भूखों के लिए अन्न पूर्णा, स्त्री जाति के लिए इज्ज़त बचाने के लिए लोहमयी दुर्ग और मुसाफिरों के लिए विश्राम का स्थान हैं।"

इसलिए सिक्खों ने अपने गुरुधामों का कभी भी अपमान सहन नहीं किया और शुरू से ही अपने गुरुधामों की पावनता कायम रखने के लिए महान कुर्बानियां देते रहे हैं और अपमान करने वालों से बदले लेते रहे हैं।

श्री अकाल तख़्त साहिब सिक्खों का सर्वोत्तम पावन स्थान है, जिसकी स्थापना मीरी-पीरी के मालिक छठम पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने की थी। यह महान केंद्र भक्ति व शक्ति का सुमेल है। श्री अकाल तख़्त साहिब और अन्य तख़्त साहिबान से गुरु साहिबान सिंघों के नाम हुकमनामे जारी करते रहे हैं। गुरु साहिबान के बाद भी सिक्ख संगत में समय-समय पर यहां तक के जब उनके सिरों के दाम लगाए जा रहे थे और वो जंगलों में निवास करते थे, श्री अकाल तख़्त साहिब में एकत्र होते, समय के हालात के बारे में विचार-विमर्श करते और आने वाले समय के लिए गुरमता पास कर अलग हो जाते। जब भी खालसा पंथ पर कोई मुश्किल बनी वो इस पवित्र केंद्र पर एकत्र होकर नये कार्यक्रम बनाते रहे हैं। श्री अकाल तख़्त साहिब से जारी हुआ हुकमनामा संसार भर के सिक्खों के लिए एक आदेश होता है, जिस पर वह पुष्प भेंट करते हैं।

श्री हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख़्त साहिब के दर्शनों के लिए दुनिया भर के सिक्ख तरसते रहे हैं, जब भी उन्हें मौका मिलता है, वह श्री अमृतसर आकर पवित्र स्थान के दर्शन कर अपना जन्म सफल करते हैं।

"दिल्ली सरकार हमेशा ही सिक्खों को अपने पवित्र गुरधामों, जहां से वह शक्ति प्राप्त करते हैं दूर रखने का प्रयत्न करती रही है। सिक्ख संस्थाओं को कमज़ोर करने का प्रयत्न करती रही है।"

खालसा पंथ दिल्ली की तरफ से गुरुधामों की पावनता और महानता को कम करने के हर कार्यक्रम का डटकर मुकाबला करता रहा है। सिक्ख पंथ की भलाई के लिए और पंजाब के हित के लिए श्री दरबार साहिब आरंभ से ही शांतमयी ढंग से मोर्चे लगाता रहा है और सदैव विजय प्राप्त करता रहा है।

पंथ और पंजाब की प्रतिनिध जत्थेबंदी शिरोमणि अकाली दल ने सिक्खों की कुछ धार्मिक मांगों और समूह पंजाबीयत की कुछ

आर्थिक व राजनीतिक मागों की पूर्ति के लिए अगस्त, १९८२ में 'धर्म युद्ध' मोर्चा लगाया। अपनी शानदार परंपराओं को कायम रखते हुए सिंघों ने शांतमयी ढंग से अपनी गिरफ्तारी देकर पंजाब की सभी जेलों को भर दिया। सरकार को अनेक ही कैंप, जेलें बनवानी पड़ीं। अपनी मांगों के लिए केंद्र सरकार की उस समय की प्रधानमंत्री श्री मती इंदिरा गांधी के वज़ीरों से कई बार बात हुई परंतु जब बात समझौते तक पहुंचती तो श्री मती इंदिरा गांधी अपना स्टैंड बदल लेते या मुकर जाते। मोर्चा खिंच गया। मोर्चे को असफल बनाने के लिए सरकार ने अपने लोगों को अकाली दल या सिक्ख संस्थाओं में घुसपैठ करवा दी और मोर्चे को खत्म करने का प्रयत्न करने लगे। वस्तुत: श्री मती इंदिरा गांधी मोर्चा लटकाकर लोक सभा के अगले चुनाव सिक्खों के उल्ट गुमराह करके और देश की एकता और अखंडता की दुहाई देकर जीत हासिल करना चाहती थी, इसलिए वह कभी भी ईमानदार नहीं रहे। बल्कि वह तो सिक्खों द्वारा तत्काल विरुद्ध लगाए गए मोर्चों का भी बदला लेना चाहते थे और सिक्खों को सबक सिखाना चाहते थे, उन्हें रौंद देना चाहते थे। सिक्खों को सबक सिखाने की अपनी नीति के अधीन श्री मती इंदिरा गांधी ने जून, १९८४ के पहले सप्ताह भारतीय सैनिकों को टैंकों और तोपों से लैस करके श्री हरिमंदर साहिब परिसर पर वहशीआना हमला कर दिया। (पंजाब में लगभग तीन दर्जन अन्य गुरुधामों पर भी हमला बोल दिया गया)। इस हमले में यहां श्री हरिमंदर साहिब और श्री अकाल तख़्त साहिब की पवित्रता की रक्षा करते हुए सैकड़ों सिंघ शहीद हो गए, श्री गुरु अरजन देव जी महाराज के शहीदी गुरुपर्व के समय दर्शन-स्नान करने आए हज़ारों यात्री शहीद हो गए अथवा बंदी बना लिए गए। जिनमें लगभग ३७९ बाद में जोधपुर की बदनाम जेल में बंद कर दिए गए।

अहमदशाह अब्दाली के बाद लगभग २२३ वर्ष बाद श्री दरबार साहिब समूह पर दरिद्रता भरा हमला किया जिसमें तोपों, टैंकों, बमों, मशीन गनों आदि आधुनिक घातक शस्त्रों का प्रयोग किया गया, जिसमें श्री अकाल तख़्त साहिब और दर्शनी ड्योढ़ी को काफी नुकसान हुआ। श्री हरिमंदर साहिब की पवित्र इमारत पर सैंकड़ों ही गोलियां चलाई गईं। श्री दरबार साहिब परिसर की अन्य इमारतों को भी काफी नुकसान हुआ। सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी जलकर राख हो गई। सिक्ख संग्रहालय और तेजा सिंघ समुंदरी हाल को भी काफी नुकसान हुआ। इस हमले ने सिक्खों के जज़बात छलनी-छलनी कर दिए। सिक्खों के क्रोध से बचने के लिए सरकार ने श्री दरबार साहिब परिसर जिस पर सैनिकों ने ६ जून को पूरी तरह कब्ज़ा कर लिया था, दर्शन करने से मना कर दिया गया परंतु इस भारी तबाही का समाचार सिक्ख संगत तक पहुंचता रहा।

जून के अंतिम सप्ताह सुबह-सुबह श्री दरबार साहिब परिसर लगभग एक घंटे के लिए खोला गया।

मैंने देखा कि सिक्ख संगत श्री अकाल तख़्त साहिब की तबाही, दर्शनी ड्योढ़ी के नुकसान और परिक्रमा के चारों तरफ इमारतों के हुए नुकसान को देखकर फूट-फूटकर रो रही थी और सरकार को कोस रही थी।

श्री दरबार साहिब परिसर पर ज़ाबिराना सैनिक आक्रमण करवाकर दुनिया भर के सिक्खों के हृदय जख़्मी ही नहीं किए बल्कि श्री अकाल तख़्त साहिब की मरम्मत की कार-सेवा सैनिक

निगरानी तले निहंग आगू बाबा संता सिंघ को देकर उनके ज़ख़्मों पर नमक छिड़क दिया। सरकार चाहती थी कि श्री दरबार साहिब आम लोगों के दर्शनों के लिए खोलने और कंपलेक्स शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सौपने से पहले-पहले मरम्मत हो जाए ताकि साधारण सिक्ख संगत को श्री अकाल तख़्त साहिब की पवित्र इमारत, जो टैंकों और तोपों के गोलों, बमों और अन्य घातक शस्त्रों से तहस-नहस हुई थी के बारे में पूरी जानकारी न मिल सके।

केंद्रीय मंत्री श्री बूटा सिंघ ने श्री अमृतसर के अनेकों चक्कर लगाकर सेवा के पुंज बाबा खड़क सिंघ जी (बीड़ बाबा बुड्ढा साहिब वाले) को कई बार विनती की कि वह कार-सेवा संभालें परंतु उनकी यह मांग थी कि पहले श्री दरबार साहिब परिसर में से सैनिकों को बाहर निकालें। उसके बाद वह शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के कहने पर ही पहले पवित्र सरोवर की कार-सेवा करवाएंगे, जिसका पवित्र जल साका नीला तारा के दौरान अपवित्र हो गया है। उसके बाद ही श्री अकाल तख़्त साहिब की मरम्मत की कार-सेवा आरंभ करेंगे परंतु सरकार ने इन मांगों को नहीं माना और कार-सेवा बाबा संता सिंघ को सौंप दी, जिनको पांच सिंघ साहिबान ने सिक्ख परंपरा और मर्यादा की उल्लंघना के दोष में पंथ से बहिष्कृत कर दिया। बाद में बाबा संता सिंघ जी ने अपनी गलती की माफी मांगी तो पांच सिंघ साहिबान ने इन्हें तनखाह (धार्मिक सज़ा) लगाकर माफ कर दिया।

अगर सरकार ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के बाबा खड़क सिंघ जी की बात मान ली होती और कार-सेवा बाबा संता सिंघ को न दी होती तो पंथ को वह इमारत गिराने की ज़रूरत न पड़ती। सरकारी मदद और सरकारी दिशा-निर्देश के अधीन हुई 'कार-सेवा' जिसको सिंघों ने 'सरकार-सेवा' का नाम दिया, खालसा पंथ को वह मंजूर नहीं था। कार-सेवा का कार्य कर सरकार ने श्री दरबार साहिब कंपलेक्स पांच सिंघ साहिबान को सितंबर, १९८४ ई को सौप दिया। उन्होंने चाहे दूध से धोकर यहां पर श्री अखंड पाठ साहिब आरंभ करवाया और मर्यादा शुरू की परंतु आम संगत इसको गिराकर नया बनाने की मांग करती रहीं। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के जत्थेदार गुरचरन सिंघ टौहड़ा जो मार्च या अप्रैल, १९८५ में जोधपुर जेल से छूटकर आए, उन्होंने ने एलान किया कि श्री अकाल तख़्त साहिब की इमारत गिराकर नई बनाई जाएगी।

नई इमारत बनाने की कार-सेवा दमदमी टकसाल की छाया तले पांच सिक्ख संत महापुरुषों को दी गई। २६ जनवरी, १९८६ को 'सरबत्त खालसा' उपरांत पुरानी इमारत गिराने का कार्य आरंभ हुआ और फिर नई इमारत बनाने की कार-सेवा आरंभ की गई। इमारत बनकर तैयार हो चुकी है।

मीरी और पीरी के सुमेल का यह पवित्र स्थान सदैव ही सिक्ख संगत को एक नई प्रेरणा और शक्ति प्रदान करता रहेगा। ☸

वर्ष १९८४ का सिक्ख कत्लेआम

*-स. सुरजीत सिंघ**

लोकतांत्रिक कहलाने वाली भारत की तत्कालीन कांग्रेस नीति सरकार जिसका दायित्व अपने नागरिकों के जान, माल की सुरक्षा का था किंतु उसी सरकार ने माह जून, १९८४ में "सरबत्त का भला" चाहने वाले सिक्ख धर्मावलंबियों एवं उनके ऐतिहासिक धर्मस्थलों को सोची समझी साज़िश के अंतर्गत पंजाब में भारतीय सेना से तहस-नहस करते हुए असंख्य निर्दोष, सिक्ख पुरुष, स्त्री एवं बच्चों को सेना के गोलों, तोपों, मशीन गनों से एकाएक हमला कर मरवा दिया था, उसी नर संहार एवं ऐतिहासिक गुरुद्वारों को क्षति पहुंचाने को ऑपरेशन ब्लयू स्टार १९८४ अथवा 'साका नीला तारा' कहा जाता है। इस नर संहार की विभीषका को सामूहिक कत्लेआम नष्ट करना अथवा पंजाबी भाषा में सिक्ख नसलकुशी कहा जाता है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की हामी भरने वाले देश भारत में इससे अधिक असंवैधानिक, क्रूर एवं शर्मनाक क्या हो सकता है? क्या यही लोकतंत्र की परिभाषा है? तत्कालीन कांग्रेस नीति सरकार द्वारा स्वार्थवश अपने भले के लिए पूरे देश में राष्ट्रभक्त सिक्ख धर्मावलंबियों के विरुद्ध अनायास दूषित वातावरण पैदा कर अनर्गल प्रचार-प्रसार के सरकारी माध्यम से विरोधी आग को भड़काया गया जो सारी न्यायिक सीमाएं लांघ, बड़ी लज्जा एवं शर्म का विषय है।

गुरुओं, ऋषियों-मुनियों, पीरो-पैगंबरों एवं देश रक्षक वीरों की जन्मस्थली एवं कर्मभूमि गौरव प्राप्त पंजाब की धरती को समय-समय पर गुरुओं एवं महापुरुषों ने महिमा मंडित किया है। यहां की माटी ने भक्ति, गुरबाणी के पावन मधुर संगीत एवं अनुमोल वचनों के साथ-साथ तीरों, तेगों, तोपों-बमों, की रक्त रंजित गड़गड़ाहट को सदैव अपना शृंगार बनाया है। इतिहास साक्षी है कि जब जब भी विदेशी आक्रमणकारी शक्तियों ने भारतीय संस्कृति और अस्मिता को चुनौती दी है, सबसे प्रथम पंक्ति में रह देश की सुरक्षा हेतु पंजाब ने पूरी क्षमता से जूझते हुए आक्रमणकारी शक्तियों का मुंह तोड़ जवाब दिया है। त्याग-बलिदान, श्रद्धा-भक्ति, दया-धर्म, मानव सेवा एवं सर्वधर्म समभाव की प्रतिमूर्ति रहा पंजाब प्रदेश ऐसा महत्त्वपूर्ण भू-भाग है जो सदैव ही देश की पश्चिमी सीमा पर अडोल चट्टान की भांति देश का अडिग प्रहरी रहा है, भले ही इसने अनेकों अकाल, दुकाल, त्रिकाल झेलें हैं।

माह जून, १९८४ प्रारंभ होते ही तत्कालीन कांग्रेस नीति सरकार द्वारा संपूर्ण पंजाब को सेना के हवाले करते हुए पूरी तरह से कर्फ्यू लगा दिया गया। संचार व्यवस्थाएं ठप कर, रेल, सड़क मार्ग पूर्णतया बंद करते हुए शेष भारत से पंजाब का संपर्क पूरी तरह से काटकर सील कर दिया गया अर्थात् पंजाब पूरी तरह से सेना के अधीन हो गया, जहां जन सुनवाई पूरी तरह से समाप्त हो गई और जहां-तहां हथियारबंद सेनिक ही घूमते दीख पड़ते अर्थात् सारा वातावरण ही आतंकी, डरावना एवं भयपूर्ण हो गया था। ४ जून से ६ जून, १९८४ के मध्य सेना के जवानों ने ऐतिहासिक तीर्थ स्थल श्री

*५७-बी, न्यू कालोनी गुमानपुरा कोटा-३२४००७ (राज.) फोन : ९४१३६-५१९१७

हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर, गुरुद्वारा दुख निवारण साहिब, पटियाला, गुरुद्वारा तरनतारन साहिब, गुरुद्वारा फ़तहिगढ़ साहिब एवं अन्य प्रसिद्ध ऐतिहासिक गुरुद्वारों को घेरा डालकर एक साथ, सुनियोजित योजना के अंतर्गत हमला बोल दिया। श्री गुरु अरजन देव जी का शहीदी पर्व होने के कारण हज़ारों की संख्या में श्रद्धालु गुरु-घर में भक्ति रस में विभोर हो रहे थे। सेना ने सारे मार्ग बंद कर गुरबाणी में विभोर श्रद्धालुओं को अंदर ही तोपों, गोलों रॉकेटों एवं मशीन गनों से भून दिया गया, जहां लाशों के अंबार लग गये और हर तरफ खून ही खून बहता दीख पड़ता था। यह खुलेआम कत्लेआम नहीं तो और क्या है? आश्चर्य है कि जिन्होंने मातृभूमि भारत के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर प्राणोत्सर्ग तक कर दिया हो, उनके साथ इतना अन्याय और अत्याचार? यह तो हिटलरशाही से भी अधिक क्रूरता है। मानवता भी ऐसे लोमहर्षक दृश्य को देखकर चूर-चूर हुई होगी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार सेना गुप्त रूप से लाशों को ट्रकों में भर-भरकर ढोती रही। पवित्र सरोवर का रंग खून से लाल हो गया।

"जहां शहीदों का रक्त गिरता है, वहीं से उगता है हर सवेरा।
जहां जलाता है देह दीपक, वहां न आता है फिर अंधेरा।"

ब्रिगेडियर ओंकार सिंघ गोराया १९८४ के ऑपरेशन ब्लयू स्टार के समय १५वीं इंफेंट्री डिविज़न के कर्नल थे, ने अपनी पुस्तक "ऑपरेशन ब्लू स्टार एंड आफ्टर" में लिखा है कि उन्होंने १९६५ और १९७१ के युद्धों से भी अधिक लाशें ६ जून, १९८४ को देखी है, जो निरंतर २ दिनों तक सेना द्वारा निकालकर ढोई जाती रही हैं। पंडित मदन मोहन मालवीय जो कि विख्यात बनारस हिंदू विश्व विद्यालय के संस्थापक थे और जिन्हें भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है, कहा करते थे कि प्रत्येक हिंदू परिवार का दायित्व है कि वह अपना एक पुत्र सिक्ख अवश्य बनाए।

श्री हरिमंदर साहिब, श्री अकाल तख़्त साहिब को तहस-नहस कर सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी एवं तोषकखाना को सेना ने जलाकर राख कर दिया। महत्त्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथ, चित्र, दुर्लभ एलबम, लिखित हुकमनामे, प्राचीन वस्तुओं एवं पांडुलिपियों आदि को निर्मतापूर्वक अग्नि भेंट कर दिया गया है। यह हृदय विदारक और दर्दनाक नहीं तो और क्या है?

वास्तविकता से परे भारत की तत्कालीन कांग्रेस नीति सरकार यह बहाना बनाकर दुष्प्रचार कर रही थी कि अंदर 'खाड़कू' छिपे बैठे हैं। ध्यान देने योग्य है कि यदि सरकार की मंशा खाड़कुओं को पकड़ने की ही थी तो फिर सेना का इस्तेमाल क्यों? अनेक शांतिपूर्ण एवं सरल उपाय भी अपनाये जा सकते थे किंतु जान बूझकर ऐसा नहीं किया गया। इससे प्रमाणित होता है कि यह ततकालीन सरकार की स्वार्थवश नीति का ही परिणाम था, जिसमें हज़ारों की संख्या में कत्लेआम हुआ।

श्री हरिमंदर साहिब अर्थात् ईश्वर का पवित्र धाम आध्यात्मिकता, मानवता, सर्वधर्म समभाव का केंद्र है जो प्राचीन सरोवर के बीच स्थित है, जहां निरंतर हो रहा ईश्वरीय यश गायन-शबद कीर्तन प्रमाणित करता है-- *"नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत्त का भला"* अर्थात् समस्त मानवता का भला हो, कल्याण हो, सत्य का प्रचार प्रसार हो और सुख-समृद्धि सदैव बनी रहे।

भारतीय सेना जिसमें १९८४ के ऑपरेशन ब्लयू स्टार के समय श्री हरिमंदर साहिब में तबाही मचाई थी, *(शेष पृष्ठ ६७ पर)*

रामईआ हउ बारिकु तेरा ॥

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

भक्त कबीर जी भक्ति काल के ऐसे शिरोमणि संत हैं जिनके विचार गुरु साहिबान के विचारों से अद्‌भुत साम्य स्थापित करने वाले हैं, जिनसे समाज अनुप्राणित ही नहीं हुआ, वृहद स्तर पर मुग्ध और श्रद्धावनत भी हुआ। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त कबीर जी की बाणी गुरमति की सहज, बालसुलभ और निर्मल अभिव्यक्ति की तरह सामने आई। एक ऐसा दृष्टिकोण जो पारब्रह्म के अतिरिक्त किसी अन्य के बारे में सोचना ही नहीं चाहता और परमात्मा को बालहठ की भांति आत्मसात करने को लालायित है।

मो कउ कहा पड़ावसि आल जाल ॥
मेरी पटीआ लिखि देहु स्री गोपाल ॥१॥
नही छोडउ रे बाबा राम नाम ॥
मेरो अउर पड़न सिउ नही कामु ॥१॥
(पन्ना ११९४)

भक्त कबीर जी ने उन सारी बातों को सिरे से ही सुनने और मानने से इन्कार कर दिया जो परमात्मा से सम्बंध न रखती हों और उतनी ही दृढ़ता से स्पष्ट कर दिया कि परमात्मा से अपनी प्रीति को वे किसी भी हाल में तोड़ने और छोड़ने को तैयार नहीं हैं। इसके लिए उन्होंने हर वास्ता दिया नहीं छोडूं रे बाबा। बालसुलभ चेष्टा को उन्होंने बालसुलभ प्रण में बदल दिया। एक बालक अपनी बात पर पूर्णत: आश्रवस्त होता है और उसे पाने के लिए सारे प्रयत्न करने में उसे कोई लाज अथवा संकोच नहीं होता। भक्त कबीर जी ऐसे बालक हैं जिन्होंने परमात्मा को पा लिया है और उनके नाम को संजोये रखने के लिए सब कुछ सहने को तैयार हैं। भक्त कबीर जी की आत्मा परमात्मा को पाकर तृप्त हो गई है। इस तृप्ति ने उनके अंतर्मन को सुंदरता से परिपूर्ण कर दिया है। श्री गुरु अरजन देव जी ने इसी अंतर सौंदर्य को बाहरी श्रृंगार भी प्रदान किया।

आपणे प्रीतम मिलि रहा अंतरि रखा उरि धारि ॥
सालाही सो प्रभ सदा सदा गुर कै हेति पिआरि ॥
नानक जिसु नदरि करे तिसु मेलि लए साई सुहागणि नारि ॥ (पन्ना ९०)

श्री गुरु अरजन देव जी ने जीव के अंतर्मन में परमात्मा की प्रीति को शाश्रवत बनाते हुए कहा कि इससे जीवन सफल हो जाता है, जैसे एक स्त्री को सुहाग मिलने से उसकी पहचान बदल जाती है। परमात्मा एवं जीव के बीच का सम्बंध जहां जीवन रस प्रदान करने वाला है वहीं एक सुंदर समाज की कल्पना को भी मूर्त रूप होते देखता है जो अंतर तल के सौंदर्य के बिना संभव नहीं है। इसी लिए भक्त कबीर जी का यह आत्मिक सौंदर्य उनकी संपूर्ण बाणी में वैयक्तिक धरातल पर भी और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भी एक मोहक संसार की रचना करता चलता है। मनुष्य के आंतरिक और बाह्य सुंदर संसार की रचना के लिए भ्रामक अवधारणाओं का ध्वंस आवश्यक था जिसे भक्त कबीर जी ने पूर्ण प्रतिबद्धता से किया। उन्होंने धर्म और परमात्मा की प्राप्ति को लेकर मनुष्य के मन में सदियों से व्याप्त भ्रम दूर करने के लिए अकाट्य तर्कों का सहारा लिया :

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: ९४१५९-६०५३३*

नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु ॥
बन का मिरगु मुकति सभु होगु ॥१॥
किआ नागे किआ बाधे चाम ॥
जब नही चीनसि आतम राम ॥१॥ रहाउ ॥
मूड मुंडाए जौ सिधि पाई ॥
मुकती भेड न गईआ काई ॥२॥
बिंदु राखि जौ तरीऐ भाई ॥
खुसरै किउ न परम गति पाई ॥३॥ (पन्ना ३२४)

अकाट्य तर्क इतने सरल, सहज और प्रचुर हो सकते हैं यह विमोहित कर देने वाला है। तत्कालीन धार्मिक परिदृश्य नाना प्रकार के बाह्य आचरणों और कर्मकांडों से भरपूर थे जिससे परमात्मा अलभ्य और धर्म अबूझ बन गया था। इस पहेली को सिद्ध कर देना और परमात्मा को जन-जन के मन में प्रकट कर देना ही श्री गुरु नानक देव जी का मिशन था, जिसने करोड़ों लोगों को उदासी और हताशा के भंवर से उबारकर एक ऐसे ठोस धरातल पर ला खड़ा किया जहां आशा और विश्वास का सूरज अपनी किरणों से नई ऊर्जा और चेतना भर देने को तत्पर था। कुछ लोग नग्न होकर परमात्मा को पा लेना चाहते थे। भक्त कबीर जी ने कहा कि यदि ऐसा हो सकता तो सारे मृग जो वन में नग्न ही विचरण कर रहे हैं सभी कब के मुक्ति प्राप्त कर चुके होते। धर्म के नाम पर सिर के बाल मुंडवा लेने की प्रथा थी। भक्त कबीर जी ने कहा कि धर्म पर इस दृष्टि से पहला अधिकार तो सारी भेडों का बन जाता जिन्हें सदा ही मूंड दिया जाता है। वीर्य रोकने के हठ पर भक्त कबीर जी ने खुसरों की बात की जो मूलतः ही वीर्य से वंचित हैं और परमगति के अधिकारी होने चाहिए। इसी भांति प्रचलित स्नान की महत्ता पर प्रहार करते हुए भक्त कबीर जी ने कहा कि तीर्थों, नदियों में स्नान कर लेने से ही सदगति हो जाती तो सदा पानी में रहने वाले दादुर को सबसे पहले मोक्ष मिल जाता। उन्होंने धर्म के नाम पर प्रचलित सारे पाखंडों पर प्रहार करते हुए कहा कि वास्तविक प्रश्न तो मन के विकारों का है। *"बनहि बसे किउ पाईऐ जउ लउ मनहु न तजहि बिकार।"* यदि विकारों का त्याग नहीं किया तो मनुष्य कुछ भी कर ले उसको गति नहीं मिलने वाली। विकारों के मोहपाश से मनुष्य को बाहर निकलने के लिए भक्त कबीर जी ने उसके जीवन के सच को बड़े ही तथ्यात्मक ढंग से सामने रखा जो मन की गहराइयों को छूने वाला था। उन्होंने सीधे-सीधे मनुष्य के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया जिसके कारण वह सारे अकर्म करता रहता है।

चोआ चंदन मरदन अंगा ॥
सो तनु जलै काठ कै संगा ॥ . .
इसु तन धन की कवन बडाई ॥
धरनि परै उरवारि न जाई ॥१॥ (पन्ना ३२६)

मनुष्य अपने तन की शोभा और सुविधा के लिए कितने ही प्रयत्न करता है। उसका पूरा जीवन अपने तन के पोषण और सुख में ही व्यतीत हो जाता है। भक्त कबीर जी ने प्रश्न किया कि इस तन से क्या प्राप्त होने वाला है। यह तन तो मिथ्या और नाशवान है, समय आने पर धरती में दबकर यहीं रह जाएगा और मनुष्य की मुक्ति प्राप्ति में कोई सहयोग नहीं दे सकेगा। जिस तन को मनुष्य अपनी पूंजी समझकर सहेज रहा है, संवार रहा है और सुखी रखना चाहता है, उसकी तो कोई भी उपादेयता नहीं है। मनुष्य के अंदर निवास कर रही आत्मा को न देख पाने और बाह्य तन के भ्रम को तोड़ने के लिए भक्त कबीर जी ने बड़ी ही सपाट शैली में बात की।

जननी जानत सुतु बडा होतु है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटतु है ॥
मोर मोर करि अधिक लाडु धरि पेखत ही जम राउ हसै ॥१॥ (पन्ना ९१)

भक्त कबीर जी ने कहा कि मनुष्य की चेष्टायें देखकर तो काल भी हंसता है। मां अपने बालक को देख-देखकर खुश होती है कि वह बड़ा हो रहा है। मां इतना भी नहीं समझती कि उसके बालक की आयु तो दिन-प्रति दिन कम होती जा रही है अर्थात् उसे इस बात का ज्ञान नहीं कि जीवन का समय कितना मूल्यवान है जिसे व्यर्थ की भावनाओं और मोह-भ्रम में गंवा देना बुद्धिमानी नहीं है। भक्त कबीर जी ने मनुष्य की चेतना को झिंजोड़ते हुए कहा कि उसने माया के वश में खुद को अमर मानकर पथ को इतना कठिन, भयावह और अंधकारमय बना लिया है जहां ज्ञान का प्रकाश पहुंच ही नहीं पा रहा।

अनिक अनिक भोग राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भइआ ॥
माइआ मूठा चेतसि नाही जनमु गवाइओ आलसीआ ॥२॥
बिखम घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसं ॥
माइआ मोहु तब बिसरि गइआ जां तजीअले संसारं ॥३॥ (पन्ना ९२)

भक्त कबीर जी ने परमात्मा से न जुड़ने को सबसे बड़े आलस्य के रूप में देखा जिसके कारण जन्म व्यर्थ चला जाता है। इसके कारण माया-मोह वश किए सारे कार्य यहीं धरे रह जाते हैं, संसार से जाते समय पश्चाताप ही मन में शेष रह जाता है।

मनुष्य के साथ-साथ समाज के हालात पर भी भक्त कबीर जी ने अपनी दृष्टि केंद्रित करते हुए उन सारे भेदभाव, पाखंडों, विकृत्तियों और अनाचारों को अपना निशाना बनाया जो समाज को तोड़ने और मनुष्य को पथभ्रष्ट करने का कार्य कर रहे थे। सबसे बड़ा प्रश्न जाति का था। उच्च जाति हर हाल में सम्माननीय थी और निम्न जाति को हर हाल में हेय दृष्टि से देखा जाता था। उच्च जातियों को समाज में तमाम विशेषाधिकार प्राप्त थे यहां तक कि परमात्मा पर भी उन्होंने वर्चस्व बना लिया था और निम्न जातियां मंदिर में प्रवेश तक से वंचित थीं। भक्त कबीर जी ने इस भ्रम को ध्वस्त करने का कार्य किया।

तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥ (पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी ने सवाल किया कि जब मां के गर्भ में किसी की कोई जाति नहीं थी और सभी की उत्पति एक समान प्रक्रिया से हुई है फिर भेदभाव कैसा? फिर जाति ने कैसे उच्च बना दिया। मनुष्य का सम्मान अथवा अपमान तो उसके गुणों से होना चाहिए न कि उसकी जाति, वर्ण आदि से।

बिनु सत सती होइ कैसे नारि ॥
पंडित देखहु रिदै बीचारि ॥ (पन्ना ३२८)

बिना सत के किसी नारी को कैसे सती कहा जा सकता है? बिना पांडित्य के कोई ब्राह्मण कैसे सम्मान का अधिकारी हो सकता है? समाज में गुणों का पोषण नहीं किया जा रहा था और पाखंड का बोलबाला था। तमाम ऐसी प्रथायें स्थापित हो गई थीं जो ढकोसला मात्र थीं जिन्हें निभाकर मनुष्य समाज में अपना स्थान बनाना चाहता था। धार्मिक जगत इस प्रवृत्ति से अधिक कुप्रभावित था।

देवी देवा पूजहि डोलहि पारब्रहमु नही जाना ॥
कहत कबीर अकुलु नही चेतिआ बिखिआ सिउ लपटाना ॥ (पन्ना ३३२)

भक्त कबीर जी ने कहा कि परमात्मा का भेद जानने के स्थान पर व्यर्थ के ढोंग, आडंबरों में लिप्त रहने का क्या प्रयोजन है? जाति के नाम पर इतने भेदभाव और गर्व किए जा रहे हैं, जबकि सर्वशक्तिमान परमात्मा तो जाति और कुल से परे है। हर धर्म ने अपने ही रीति-रिवाज़

बनाये हुए हैं और हर कोई अपने सलीके से जीवन जीना चाहता है जबकि परमात्मा की सुधि कोई नहीं ले रहा है जिसके बिना गति नहीं है।

बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥१॥
मन रे संसारु अंध गहेरा ॥
चहु दिस पसरिओ है जम जेवरा ॥१॥
(पन्ना ६५४)

भक्त कबीर जी ने अज्ञानता, भ्रम और आडंबरों के इस अंधेरे में मानवीय मूल्यों के ह्रास के संकट को साफ देखा और इससे उबरने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य जन्म, मरण के कारण जाने और जीवन के महत्त्व को पहचाने। यह ज्ञान परमात्मा ही दे सकता है।

गुर चरण लागि हम बिनवता पूछत कह जीउ पाइआ ॥
कवन काजि जगु उपजै बिनसै कहहु मोहि समझाइआ ॥ (पन्ना ४७५)

धर्म का मूल एवं परमात्मा का रहस्य सृजन और विनाश के इस विचार में ही समाया हुआ है जिसका खेल संसार में चल रहा है और जो परमात्मा के अतिरिक्त अन्य किसी के हाथ में नहीं है। जिसने इस विचार को समझ लिया वह मिथ्या कर्मकांडों और भ्रमों से ऊपर उठ जाता है और उसके जीवन में सरलता और सहजता आ जाती है। उसके लिए पाप-पुण्य, सच-झूठ, पवित्र-अपवित्र की स्थापित परिभाषायें बदल जाती हैं।

जोगी जती तपी संनिआसी बहु तीरथ भ्रमना ॥
लुंजित मुंजित मोनि जटाधर अंति तऊ मरना ॥
ता ते सेवीअले रामना ॥
रसना राम नाम हितु जा कै कहा करै जमना ॥
(पन्ना ४७६)

भक्त कबीर जी ने कहा कि मनुष्य कितने भी तीर्थ स्नान कर ले, कैसे भी वेश धारण कर ले, व्रत, हठ कर ले उसकी मृत्यु निश्चित है उसे टाला नहीं जा सकता। मनुष्य को सदा काल का भय सताता रहता है किंतु परमात्मा को अपना आश्रय बना लेने वाला काल के भय से मुक्त हो जाता है। परमात्मा की शरण में उसे अक्षय आनंद की प्राप्ति हो जाती है।

बहुतु बरस तपु कीआ कासी ॥
मरनु भइआ मगहर की बासी ॥
कासी मगहर सम बीचारी ॥
ओछी भगति कैसे उतरसि पारी ॥ (पन्ना ३२६)

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार काशी, जिसे भगवान शिव की नगरी कहा जाता है, जीवन के अंतकाल के लिए श्रेष्ठ स्थान हैं जहां गति प्राप्त हो जाती है। मगहर स्थान की मान्यता इसके विपरीत है। भक्त कबीर जी जीवन भर काशी में रहने के बाद अंतिम काल में मगहर आ गए। उन्होंने कहा कि परमात्मा की प्रीति में काशी और मगहर एक समान हो जाते हैं। परमात्मा के रस में ये सारे भ्रम शून्य हो जाते हैं। भक्त कबीर जी ने रसना से परमात्मा का गुणगान करने वालों को बड़ी ही सहजता से इस आनंदमयी अवस्था में पहुंचा दिया और कहा कि *"सति रामु झूठा सभु धंधा ॥"* अर्थात् प्रभु-नाम के सिमरन के अतिरिक्त सब व्यर्थ है। परमात्मा को पाने का यही एक मार्ग है।

सूरज चंदु करहि उजीआरा ॥
सभ महि पसरिआ ब्रहम पसारा ॥
कहु कबीर जानैगा सोइ ॥
हिरदै रामु मुखि रामै होइ ॥ (पन्ना ३२९)

भक्त कबीर जी ने कहा कि यह दिन की रौशनी की तरह स्पष्ट है कि परमात्मा सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है किंतु परमात्मा के दर्शन वही कर पाता है जिसके मन में परमात्मा बसा होता है और रसना सिमरन में रत होती

है। संसार में जिस भांति आडंबर-भ्रम व्याप्त हैं परमात्मा की शरण के बिना गति नहीं है।

झूठा जगु डहकै घना दिन दुइ बरतन की आस ॥
राम उदकु जिह जन पीआ तिहि बहुरि न भई पिआस ॥२॥
गुर प्रसादि जिह बूझिआ आसा ते भइआ निरासु ॥
सभु सचु नदरी आइआ जउ आतम भइआ उदासु ॥३॥ *(पन्ना ११०३)*

परमात्मा का सिमरन सारी सांसारिक तृष्णाओं, कामनाओं को शांत कर देता है और आत्मिक तृप्ति प्राप्त हो जाती है। मन में कोई कामना न होने से और सांसारिक कामनाओं का सच जान लेने से मनुष्य मोह-माया से विरत हो जाता है और परमात्मा प्रेम को अपनी कामनाओं का स्थान दे देता है। भक्त कबीर जी ने स्वयं भी ऐसा ही जीवन जिया और आलोचनाओं-आरोपों की परवाह नहीं की। जितना सादा और सरल उन्होंने अपने जीवन को बनाकर दिखाया उतने ही सरल और स्पष्ट विचार उन्होंने मानवता को दिए जो युगों-युगों तक मनुष्य की प्रेरणा का स्रोत बने रहेंगे और जीवन को विषमताओं से निकालकर संतोष एवं धैर्य की राह पर ले जाते रहेंगे। ✺

वर्ष १९८४ का सिक्ख कत्लेआम

(पृष्ठ ६२ का शेष)

वही सेना के जवान वर्ष २०१४ में जम्मू-कश्मीर राज्य में आई बाढ़ की आपदा के समय श्री हरिमंदर साहिब के पवित्र लंगर से प्रतिदिन कम से कम एक लाख व्यक्तियों हेतु कई माह तक ताजा भोजन पैकेटों में बंद कर सेना के वायुयानों द्वारा ज़रूरतमंदों तक पहुंचाया जाता रहा है। *"गुर सेवा प्रभि लाए ॥"* को चरितार्थ करते हुए अनाज, कपड़े, कंबल, दवाईयां इत्यादि श्री हरिमंदर साहिब के अतिरिक्त भी पूरे देश की सिक्ख संस्थाओं द्वारा ट्रकों एवं अन्य संसाधनों से भारत के हर कोने में ज़रूरतमंदों तक पहुंचाई जाती रही है।

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले। वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।"

विदेशी आक्रमणकारी खैबर दर्रा के रास्ते ही सदैव भारत पर आक्रमण कर भारतीय संस्कृति-धर्म को नष्ट कर मानवता को कुचलते हुए भारत की समृद्धि और धन-दौलत को दोनों हाथों से लूटते चले आ रहे थे किंतु यह कटु सत्य किसी से छिपा हुआ नहीं है कि खालसा राज्य के समय शेरे-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ ने पहल कर पराकर्मी कदम उठाते हुए विदेशी मुगल आक्रमणकारियों को मुंह तोड़ जवाब देते हुए अफ़ग़ानिस्तान पर विजय हासिल कर आक्रमणकारियों के दांत खट्टे कर उनका मार्ग सदा-सर्वदा के लिए बंद कर दिया था। जिस अफ़गानिस्तान पर विजय प्राप्त करने के लिए आधुनिक सैनिक साजो-सामान से सुसज्जित देश अमरीका, यूरोप एवं रूस ने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया हो उसी दुर्जेय अफ़ग़ानिस्तान के लड़ाकुओं को लगभग पौने दो सौ वर्ष पूर्व दुर्गम मार्ग पार कर उनकी धरती पर ही शिकस्त देना शेरे-पंजाब महाराजा रणजीत सिंघ का ही पराक्रम था।

इस प्रकार विश्व के सबसे बड़े प्रजातंत्र वाले देश भारत के इतिहास के काले अध्याय के रूप में घटित १९८४ का ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार (साका नीला तारा) एक बहुत बड़ा हादसा एवं त्रासदी थी, जिसकी भरपाई होना असंभव है। ✺

गुरबाणी चिंतनधारा : ९१

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥
तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ॥
जह सरब कला आपहि परबीन ॥
तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥
जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥
तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥
जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥
तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥
बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥
नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥(पन्ना २९१)

२१वीं असटपदी की पांचवी पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी समस्त कलाओं में परिपूर्ण उस परमेश्वर की इस जग रचना करने की मौज से पहले की संतुष्टि का ज़िक्र किया है, लेकिन साथ में यह भी स्पष्ट किया है कि परमेश्वर की स्वयं की पहुंच सर्वत्र है तथा स्वयं तक भी परमेश्वर खुद ही पहुंच सकता है, अन्य कोई नहीं।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जब ईश्वर ने अपनी शोभा स्वयं से ही बनाई थी कहने से अभिप्राय जब ईश्वर ने यह जगत रचना नहीं की थी और कोई दूसरा परमात्मा की उपमा करने वाला नहीं था तब कौन माता, पिता, मित्र, पुत्र या भाई था? जब समस्त शक्तियों में अकाल पुरख परमेश्वर सूझवान था अर्थात् जब सर्वशक्तिशाली, सर्वज्ञाता एवं सर्वकला निपुण उस प्रभु के बिना कोई और नहीं था, तब उस समय चार वेदों और कतेबों अर्थात् हिंदू तथा इस्लाम धर्म के ग्रंथों पर विचार करने वाला कौन था? जब ईश्वर स्वयं को स्वयं में ही स्थित किए हुए था तब शगुन-अपशगुन पर कौन विचार कर सकता था अर्थात् क्या शुभ है क्या अशुभ, इसकी विचार करने की समर्थता भला किसमें हो सकती थी? जब अपने आप ही वह सबसे ऊंचा और दूर हो और आप ही निकट से निकट हो अर्थात् उससे दूरी और समीपता में कोई भेद ही न हो तो मालिक किसे कहेंगे तथा सेवक (दास) किसे कहा या माना जा सकता है? ऐसे अश्चर्य भरपूर कौतुकों को देखकर (अत्यंत) हैरानी होती है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि वह परमेश्वर अपनी गति (स्थिति) स्वयं ही जानता है और कोई उसकी वास्तविक स्थिति को नहीं जान सकता।

वस्तुत: सर्वकला समर्थ तथा सर्वकला प्रवीण केवल एक अकाल पुरख परमेश्वर ही है बाकी सारी रचना उसी ने बनाई है और सृष्टि का प्रत्येक जीव चाहे वह कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो फिर भी उसकी बुद्धि, उसका ज्ञान एक सीमा में है लेकिन वह परमेश्वर उसके गुण उसका ज्ञान असीमित है। अत: कोई वेदों-कतेबों पुराण-कुरान का ज्ञाता हो सकता है लेकिन फिर भी उसके ज्ञान की पहुंच परमेश्वर तक नहीं हो सकती। अत: उसकी रचना सृजना करने से पूर्व और सृजना के बाद भी केवल अकाल पुरख परमेश्वर ही है जो सब कुछ का ज्ञाता है। बस अंतर इतना ही है उसकी रचना से पूर्व किसी तरह का कोई शगुन-अपशगुन, मालिक-सेवक का भेद नहीं था क्योंकि तब केवल प्रभु स्वयं में ही

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

समाया हुआ था। गुरबाणी में उसकी रचना की मौज के सम्बंध में जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी ने बड़ा सुंदर वर्णन किया है :

कीता पसाउ एको कवाउ ॥
तिस ते होए लख दरीआउ ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥ *(पन्ना ३)*

अर्थात् उस परमेश्वर के एक ही शब्द के विधान अनुसार उसने स्वयं को सृजित कर इतना प्रसार कर दिया। डॉ. जोध सिंघ के चिंतनानुसार उसी विधान के अंतर्गत ही (जीवन के) लाखों प्रवाह फूट निकले। मेरी क्या सामर्थ्य है कि (प्रभु शक्ति के बारे में) विचार कर सकूं। मैं (इतना तुच्छ हूं कि) एक बार भी समर्पित होने योग्य नहीं।

वास्तव में वह परमेश्वर विस्मयकारी है वह अपनी गति अपनी अवस्था, समर्थता स्वयं ही जानता है, वह बेअंत है, उसके कौतुक भी बेअंत हैं, उसके हुक्म में यह सृजना हुई है और उसी के हुक्म में यह समाप्त हो जाएगी। गुरबाणी में अनेक स्थान पर यही वर्णित है कि उस मालिक के कौतुकों ने हमें आश्चर्यचकित कर रखा है और यह विस्माद की अवस्था भी किसी भाग्यशाली को नसीब होती है।

जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥
ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥
आपस कउ आपहि आदेसु ॥
तिहु गुण का नाही परवेसु ॥
जहएकहि एक एक भगवंता ॥
तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥
जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥
तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥
बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥
नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥६॥

छठी पउड़ी में भी उसी भाव को विस्तार देते हुए पंचम पातशाह जी का चिंतन है कि वह अविनाशी प्रभु जब स्वयं में ही स्थिर था तब माया का भी प्रसार नहीं था और न ही कोई चिंतित और न ही चिंता मुक्त था। प्रभु तक तो केवल प्रभु की ही पहुंच हो सकती है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि वह अछल अर्थात् जिसको छला न जा सके (जिसके साथ किसी प्रकार का धोखा न किया जा सके) अछेद (जिसे छेदा न जा सके) अर्थात् अविनाशी, अभेद जिसका भेद न पाया जा सके ऐसा वह प्रभु जो अपने ही स्वरूप में स्थित हो, तब किसे माया छल सकती है। तब कौन किस को आदेस (नमस्कार) करता है, कुछ चिंतकों के अनुसार आदेस के अर्थ 'हुक्म' भी किए गए हैं दोनों ही अर्थों में वहां माया के तीनों गुणों का प्रभाव नहीं हो सकता। जब केवल और केवल ईश्वर ही था तो कौन चिंता से मुक्त (बेफ़िक्र) था और कौन चिंता से ग्रसित अर्थात् चिंतातुर था। जब खुश होने वाला प्रसन्नचित भी वह प्रभु स्वयं था और जिस पर प्रसन्न होना है वह भी वह प्रभु आप ही था अर्थात् जब प्रभु के अतिरिक्त कोई नहीं था तब कहने वाला या सुनने वाला कौन हो सकता है? गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि वह परमेश्वर बड़े से बड़ा और ऊंचे से ऊंचा है स्वयं तक पहुंचने वाला वह आप ही है अर्थात् अन्य किसी की उस तक पहुंच नहीं और उसके तुल्य कोई और नहीं है।

वस्तुत: वह परमेश्वर अनंत-बेअंत है इसकी सूझ भी उस परमेश्वर ने किसी विरले को ही बख़्शी है, इस संदर्भ में गुरबाणी प्रमाण है :

तू बेअंतु को विरला जाणै ॥
गुर प्रसादि को सबदि पछाणै ॥ *(पन्ना ५६२)*

इसलिए गुरबाणी में बारंबार सर्वकला परिपूर्ण परमेश्वर की शरण में आकर उसके हुक्म में राज़ी रहते हुए केवल यही अरदास की

गई है-- हे मालिक! आपको जैसे भी उचित लगे उसी तरह से छुड़ा ले अर्थात् हमारी रक्षा कर यथा चौथे पातशाह की पावन बाणी में भी यही विनती है :

तू बेअंतु सरब कल पूरा किछु कीमति कही न जाइ ॥
नानक सरणि तुम्हारी हरि जीउ भावै तिवै छडाइ ॥ (पन्ना ७२०)

वास्तव में गुरबाणी में यही तथ्य समझाया गया है कि किसी का भी जीवन मनोरथ उस परमेश्वर का अंत पाना नहीं है क्योंकि यह मुमकिन ही नहीं है अर्थात् उसकी शरण में आकर उसका नाम जपकर उसके गुणों को आत्मसात करता हुआ उसके गुणों का ध्यान धरता हुआ जीव उसी का ही रूप हो जाए। जैसा कि नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब की पावन बाणी इस संदर्भ में मार्गदर्शन करती है :

गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥ (पन्ना ६३४)

जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥
तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥
पापु पुंनु तह भई कहावत ॥
कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥
आल जाल माइआ जंजाल ॥
हउमै मोह भरम भै भार ॥
दूख सूख मान अपमान ॥
अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥
आपन खेलु आपि करि देखै ॥
खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥७॥

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी इस पउड़ी में उस परमेश्वर की अनंत रचना, माया के त्रिगुणी प्रसार एवं प्रभाव का वर्णन एवं उसके फलस्वरूप पाप-पुण्य की क्रियाएं एवं फल की अभिलाषा तदुपरांत ईश्वर की मौज़ से जगत रचना और उसको संकुचित करने अथवा समेटने का सुंदर वर्णन किया है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जब उस निरंकार ने इस आकार स्वरूप जगत की रचना कर दी तब उसने तीन गुणों वाली (रजो गुण, तमो गुण तथा सतो गुण) माया का प्रसार कर दिया। (त्रिगुणी माया के प्रभाव से) पाप तथा पुण्य कर्म प्रचलित हुए अर्थात् शुभ-नेक कर्मों एवं अशुभ-पाप कर्मों की बदौलत कोई स्वर्ग और कोई नरक का अधिकारी बन गया। इसके फलस्वरूप आल-जाल (घरेलु बंधन) माया के जंज़ाल अर्थात् माया के प्रभाव स्वरूप पड़ी बेड़ियों के बंधनों की जकड़न शुरू हुई (और साथ ही इसी से सम्बंधित) अहंकार, मोह, भ्रम एवं भय वश किए गए कर्मों का भार शुरू हो गया। इन कर्मों के फलस्वरूप ही दुख-सुख, मान-अपमान का ज़िक्र चल पड़ा। गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि वह जगत पिता परमेश्वर कर्ता पुरख स्वयं ये सारे तमाशे आप ही रचता है और उन्हें देख रहा है और जब वह प्रभु इस खेल तमाशे को समेटता है तो फिर अनेक से एक हो जाता है।

इस पउड़ी का विचारणीय पहलू यह है कि यहां पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने परमेश्वर की द्वैत एकता से अनेकता वाले अनंत स्वरूप का ज़िक्र किया है। इससे पहले की पउड़ियों में गुरु पातशाह ने परमेश्वर की अनंत अद्वैत अवस्था पर प्रकाश डाला लेकिन सातवीं पउड़ी में उसकी अनंत अनेकता का विस्तृत वर्णन करते हुए माया के त्रिगुणी प्रभाव और उसके फलस्वरूप हउमै, मैं, मेरी और अज्ञानता के बंधन और उन बंधनों से उत्पन्न भ्रम और भय का अंधकार फैल गया। संसार में कर्म और कर्म से उत्पन्न फल का प्रसार प्रारंभ हुआ। कर्म के दोनों स्वरूप पाप और पुण्य प्रकाश में आए जिसकी बदौलत स्वर्ग एवं

नरक की परिकल्पना होने लगी तथा दुख-सुख मान-अपमान की विस्तृत चर्चा द्वैत रूप में अर्थात् विविधता के रूप में साकार हुई लेकिन यह सारे कौतुक-तमाशे बेशक उसी निरंकार की सृजना है लेकिन वह परमेश्वर स्वयं निर्लेप भाव से इस साकार रूप को देख रहा है और जब उसकी मौज़ होती है तो इस खेल को समेटकर पुन: अनेक से एक तथा साकार से निराकार हो जाता है।

गुरबाणी में अनेक बार परमेश्वर के निर्गुण एवं सगुण स्वरूप की व्याख्या हुई है, माया के त्रिगुणी प्रभाव उससे उत्पन्न कर्म फल का वर्णन भी बहुतायत मात्रा में हुआ है। जगत रचना में जीवों के जब पाप बढ़ जाते हैं तथा पुण्य कर्मों का अभाव हो जाता है तब यह जगत महा प्रलय द्वारा विनिष्ट हो जाता है, इसलिए गुरबाणी में कर्म फिलासफी पर विशेष ध्यान आकर्षित किया गया है ताकि जीव कर्म करते हुए सुचेत रहे और नेक कर्म कर शुभ फलों के साथ-साथ उस मालिक की रहमत का पात्र बन सके। गुरबाणी में श्री गुरु नानक देव जी ने एक शबद में जगत रचना का मूल कारण ही जीव के पाप-पुण्य कर्मों को बताते हुए स्पष्ट किया है कि किस प्रकार पुण्य कर्मों के अभाव में महा प्रलय आती है :

पापि पुंनि जगु जाइआ भाई बिनसै नामु विसारी ॥ *(पन्ना ६३५)*

वस्तुत: जिस पर मालिक प्रभु की कृपा दृष्टि होती है वही प्रभु सिमरन में लीन होकर शुभ कर्म करता हुआ उसी में अभेद हो जाता है।

जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥
जह पसरै पासारु संत परतापि ॥
दुहू पाख का आपहि धनी ॥
उन की सोभा उनहू बनी ॥
आपहि कउतक करै अनद चोज ॥
आपहि रस भोगन निरजोग ॥
जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥
जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥
बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥
जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥८॥२१॥

२१वीं असटपदी की अंतिम पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी ने उस पारब्रह्म परमेश्वर के अव्यक्त तथा व्यक्त स्वरूप की महिमा को बयान किया है कि किस प्रकार वह समस्त रसों को भोगते हुए भी निर्लेप है और सबसे गहन रहस्य कि जिसे वह चाहता है उसे अपने में मिला लेता है और बाकियों को जगत के खेल-तमाशे में ही गलतान रखता है। साथ ही संतों की महिमा भी बयान की गई है जहां प्रभु का भक्त है वहीं प्रभु का वास है, वस्तुत: संतों की महिमा हेतु ही उसने यह जगत रचना की है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जहां अदृश्य एवं अव्यक्त परमेश्वर है वहां उसका भक्त है और जहां ईश्वर का भक्त है वहां साक्षात प्रभु आप विराजमान है। प्रत्येक स्थान पर प्रभु परमेश्वर ने संतों की महिमा (गुणगान) के लिए जगत रचना का प्रसार कर रखा है। दोनों पक्षों अर्थात् संतों का प्रताप तथा माया का प्रभाव इन दोनों स्थितियों का वह आप ही मालिक है। उसकी शोभा अकथनीय है अर्थात् अपनी शोभा को वह प्रभु आप ही जानता है उसे कोई दूसरा बयान करने में समर्थ नहीं हो सकता। परमेश्वर आप ही आश्चर्यचकित तथ आनंदमयी कौतुकों का कर्त्ता है अर्थात् मालिक स्वयं ही अज़ब खेल, खेल रहा है और आनंद भरपूर तमाशे कर रहा है। वह प्रभु स्वयं ही रसों का भोग करने वाला तथा स्वयं ही इन रसों से निर्लेप रहने वाला है।

जो उसे भा जाता है अर्थात् जो उसके मन को भाता है उसे अपने नाम में लीन कर लेता है और जिसे वह चाहे उसे माया में गलतान कर उसी के खेल खिलवाता है। वह अनंत, अथाह गिनती से परे तथा चिंतन शक्ति से परे

है अर्थात् उसे नापने का कोई पैमाना ही नहीं है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह विनम्रता सहित विनती करते हैं कि हे सर्वकला समर्थ प्रभु! जैसा तूं बुलवाता है तेरे दास वही तो बोलते हैं।

वस्तुत: उपरोक्त पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह जी ने परमेश्वर की महिमा के साथ ही पूर्ण संतों की महिमा का भी गायन किया है। कि किस प्रकार संतों की महिमा हेतु ही परमेश्वर ने यह जगत रचना की है। गुरबाणी में अन्यत्र भी इसी भाव के दर्शन होते हैं कि किस प्रकार परमेश्वर ने शांत पुरुषों के हित के लिए ही तीनों लोकों को धारण किया है और यहां रहकर जो अपनी आत्मा को पहचान लेता है वही तत्व का विचार करने वाला माना जाता है। यथा गुरबाणी प्रमाण है :

संत हेति प्रभि त्रिभवण धारे ॥
आतमु चीनै सु ततु बीचारे ॥ *(पन्ना २२४)*

चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी की बाणी इस संदर्भ में यहां उपरोक्त भाव को स्पष्ट करने हेतु उल्लेखनीय है जहां गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि जितने भी बादशाह, शाह, राजा, ख़ान, अमीर हाकिम हैं, ये सब प्रभु ने ही पैदा किए हैं। जो कुछ प्रभु कराता है वे सभी वही करते हैं तथा सभी प्रभु के समक्ष भिखारी हैं। वह प्रभु सच्चे गुरु के पक्ष में है और उसने सभी वर्ण, चारों खाणियों के जीव तथा संपूर्ण सृष्टि को सेवक बनाकर सच्चे गुरु की सेवा करने के लिए उसे प्रदान किए हैं। यथा गुरबाणी प्रमाण है :

जितने पातिसाह साह राजे खान उमराव सिकदार हहि तितने सभि हरि के कीए ॥
जो किछु हरि करावै सु ओइ करहि सभि हरि के अरथीए ॥
सो ऐसा हरि सभना का प्रभु सतिगुर कै वलि है तिनि सभि वरन चारे खाणी सभ स्रिसटि गोले करि सतिगुर अगै कार कमावण कउ दीए ॥
(पन्ना ८५१)

पंचम पातशाह ने भी इसी संदर्भ में अन्यत्र बड़ा सुंदर उदाहरण दिया है, जिसमें यह भी स्पष्ट कर दिया है कि वही संत है जो प्रभु परमेश्वर को अच्छा लगता है क्योंकि संत और परमेश्वर के गुण एक जैसे होते हैं यथा गुरबाणी प्रमाण है :

सोई संतु जि भावै राम ॥
संत गोबिंद कै एकै काम ॥ (पन्ना ८६७)

वास्तव में जीव पर माया का प्रभाव और उसके फलस्वरूप संसार में गलतान हो जाने पर निरंकार प्रभु से बनी दूरी ही जीव के दुखों का कारण बनती है और फिर इस दूरी से दूर करवाने हेतु वह पूर्ण गुरु (संत) की शरण में आता है तब पूर्ण गुरु की कृपा दृष्टि से ईश्वर नाम की प्राप्ति मुमकिन है और यही नाम दान जीव हेतु अनंत सुखों का वसीला बनता है और उसके लोक-परलोक सफल हो जाते हैं।

यहां एक तथ्य यह भी उल्लेखनीय है कि हरि रूप गुरु (संत) हरि रूप होकर भी सदैव विनयशील रहते हुए यही विनती करता है कि*"जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥"* इसी भाव के दर्शन पंचम पातशाह की बाणी में अन्यत्र भी होते हैं। यथा :

हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥
हरि भगति खजाना बखसिआ गुरि नानकि कीआ पसाउ जीउ ॥ *(पन्ना ७६३)*

वस्तुत: वही परमेश्वर ही सब कुछ करने एवं करवाने में समर्थ है, पूर्ण गुरु मिलाकर भक्ति में लीन करने वाला भी आप ही है :

आपे गुणदाता अवगुण काटे हिरदै नामु वसाए ॥
नानक सद बलिहारी सचे विटहु आपे करे कराए ॥ *(पन्ना २४६)* ۞

ख़बरनामा

स. मनजीत सिंघ सचिव ने सिक्खी के प्रचार-प्रसार सम्बंधी प्रचारकों से महत्त्वपूर्ण विचारें कीं

श्री अमृतसर : ८ अप्रैल : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के निर्देश अनुसार श्री अनंदपुर साहिब का ३५० वर्षीय स्थापना दिवस मनाने तथा धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से सिक्खी के प्रचार-प्रसार को और प्रभावशाली बनाने हेतु स्थानीय तेजा सिंघ समुदंरी हॉल में स. मनजीत सिंघ सचिव ने समूह प्रचारकों, ढाडियों तथा कवीशरों के साथ विचार-विमर्श किया तथा आवश्यक निर्देश दिए।

यहां से प्रेस विज्ञप्त में स. मनजीत सिंघ सचिव ने बताया कि जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष के निर्देश अनुसार स. सतबीर सिंघ, भूतपूर्व सचिव, धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से सिक्ख धर्म के प्रचार सम्बंधी रेखांकित किए गए कार्यकर्मों में किसी तरह की ढील नहीं आने दी जाएगी, एकत्रिता के दौरान उन्होंने प्रचारकों को कहा कि 'सिक्खी सरूप मेरा असली रूप' लहर को घर-घर तक पहुंचाया जाए। उन्होंने कहा कि पंजाब के स्कूलों में प्रचारकों द्वारा पतित विद्यार्थियों को प्रेरित कर अपने मौलिक स्वरूप सिक्खी में वापस लाने हेतु किए गए कार्य प्रशंसनीय है। उन्होंने कहा कि अब तक प्रचारकों के अलग-अलग स्कूलों में लगभग १२ हज़ार पतित विद्यार्थियों से केश रखने और दसतार सजाने के प्रण-पत्र भरवाए गए हैं जो अच्छी शुरूआत है। उन्होंने कहा कि जिन विद्यार्थियों ने पतितता छोड़कर गुरु साहिबान द्वारा बख़्शे स्वरूप में वापसी की है, उन सभी विद्यार्थियों को आने वाले समय में माझा, मालवा एवं दोआबा तीन ज़ोन बनाकर प्रशंसा-पत्र दिए जाएंगे।

उन्होंने प्रचारकों, ढाडियों तथा कवीशरों को कहा कि अगर किसी को कोई मुश्किल आती है तो कार्यालय में संपर्क करे। उन्होंने कहा कि ऐतिहासिक दिवसों पर प्रचारक, ढाडी तथा कवीशर अपने-अपने मुख्य-क्वाटर्ज़ में हाज़िर रहें और शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की तरफ से गुरुद्वारा साहिब में मनाये जा रहे ऐतिहासिक दिवस सम्बंधी संगत को विस्तारपूर्वक जानकारी दें। उन्होंने कहा कि नए प्रचारक, ढाडी तथा कवीशर अपने पुराने साथियों से प्रेरणा लेकर अधिक से अधिक गुरबाणी का प्रचार-प्रसार करें; बच्चों को गुरसिक्खी के साथ जोड़ें, केश तथा दसतार की महानता के बारे में जागरूक करवाएं। इससे पहले स. रणजीत सिंघ अधिरिक्त सचिव ने भी अपने विचार प्रकट किए।

इस समय सचिव स. सुखदेव सिंघ भूरा कोहना, स. संतोख सिंघ, स. जसविंदर सिंघ दीनपुर तथा जगजीत सिंघ, स. कुलविंदर सिंघ 'रमदास' इंचार्ज पब्लिसिटी तथा अधिक संख्या में प्रचारक, ढाडी एवं कवीशर आदि उपस्थित थे।

दो-तख़्तों को जोड़ने वाली रेलगाड़ी का संगत अत्यंत फायदा ले : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : १७ अप्रैल : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने संगत को संबोधित करते हुए कहा है कि श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब से श्री अमृतसर तक चलाई गई रेलगाड़ी इंटरसिटी नं: ०४५०५ नंगल डैम जो कि सुबह ८ बजे से चलकर १ बजे श्री अमृतसर और ०४५०६ नं: रेलगाड़ी श्री अमृतसर से २ बजे चलकर रात ७:०० बजे नंगल डैम पर पहुंचती है। इन रेलगाड़ियों का संगत भरपूर लाभ उठाए एवं तख़्त साहिबान के दर्शन करे।

प्रेस विज्ञप्त में जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष ने कहा है कि पंजाब सरकार के भरपूर प्रयत्नस्वरूप रेलवे विभाग ने श्री अनंदपुर साहिब से श्री अमृतसर तक इंटरसिटी रेलगाड़ी चलाई है, जो प्रतिदिन श्री अनंदपुर साहिब से श्री अमृतसर और श्री अमृतसर से तख़्त श्री केसगढ़ साहिब हज़ारों संख्या में संगत पहुंचती हैं, अब इस रेलगाड़ी के चलने से सफर सस्ता एवं सुखमयी हो गया है। इसलिए संगत को इसका भरपूर लाभ लेना चाहिए। जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष ने इस रेलगाड़ी को चलाने पर पंजाब सरकार व केंद्रीय सरकार का तहे दिल से धन्यवाद किया।

पुरातात्विक विभाग भक्त सधना जी की यादगार की ओर ध्यान दे : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : २७ अप्रैल : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने निदेशालय, सभ्याचारक मामले, पुरातात्विक तथा संग्रहालय पंजाब, पुरालेख भवन, चंडीगढ़ को पत्र लिखते हुए मांग की है कि भक्त सधना जी की ऐतिहासिक यादगार जो श्री फ़तहिगढ़ साहिब में स्थित है, के रख-रखाव की ओर विशेष ध्यान दिया जाए।

प्रेस विज्ञप्त में उन्होंने कहा कि भक्त सधना जी की यादगार से समूह सिक्ख जगत की भावनाएं जुड़ी हुई हैं क्योंकि श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त सधना जी की बाणी दर्ज है। उन्होंने कहा भक्त सधना जी की यादगार के लिए केंद्रीय सरकार द्वारा भी राशि मंजूर हो चुकी है। उन्होंने निदेशालय विभाग को ज़ोर देकर कहा कि भक्त सधना जी की यादगार की हालत दुरुस्त नहीं है, इसकी फौरन मरम्मत करवाई जाए तथा इसके रख-रखाव के लिए ठोस कदम उठाए जाएं।

सेशन जज अंबाला द्वारा अमृतधारी नवयुवक को गवाही देने से रोकना अत्यंत अभाग्यपूर्ण : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : ८ मई : अंबाला की अदालत के सेशन जज राजेश गुप्ता द्वारा एक केस की सुनवाई के दौरान अमृतधारी नवयुवक को गवाही देने से रोकने की जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने कड़ी निंदा करते हुए, इसको अभाग्यपूर्ण कहा है।

यहां से प्रेस विज्ञप्त में जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष ने कहा कि जब किसी को इन्साफ न मिले तो वो इन्साफ के लिए अदालत का सहारा लेता है। प्रत्येक केस में गवाह की अहम भूमिका होती है किंतु जब न्याय देने वाला या फिर कानून की शिक्षा देने वाला ही इसकी पालना न करे तो फिर इन्साफ की उम्मीद कहां रह जाती है? कुछ ऐसा ही किया है हरियाणा राज्य के अंबाला में सेशन जज राजेश गुप्ता ने। उन्होंने कहा कि भारत बहु-धर्मी देश है तथा प्रत्येक व्यक्ति को अपने-अपने धर्म में परिपक्व रहने का पूर्ण अधिकार है। उन्होंने कहा कि राजेश गुप्ता सेशन जज द्वारा अमृतधारी सिक्ख नवयुवक को कृपाण पहनी होने के कारण गवाही देने से रोकना भारतियों विशेषत् सिक्खों को मिले मौलिक अधिकारों की घोर अवज्ञा है तथा इस केस की सूक्ष्मता से जांच होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर न्याय की कुर्सी पर बैठने वाले लोग ऐसी सोच रखते हैं तो इन्साफ के लिए कोई और द्वार शेष नहीं रह जाता। इसलिए इस जज के विरुद्ध उचित कार्यवाई होनी चाहिए। 

प्रंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०६-२०१५